

रहमतुल्लिलआलमीन ﷺ और वामे हुसैन عليه السلام

मुरत्तिब
खुसरो कासिम

रस्मूल खत हिन्दी
डॉ. शहेजादहुसैन काजी

नाशिर : ईमाम जा'फर सादिक फाउन्डेशन (अहले सुन्नत)

रहमतुल्लिलआलमीन ﷺ

और वामे हुसैन رضی اللہ عنہ

मुरत्तिब
खुसरो कासिम

रस्मुल खत हिन्दी
डॉ. शहेज़ादहुसैन काज़ी

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

पेश लफज

वाक़ेआ करबला इस्लामी तारीख़ का एक ऐसा वाक़ेआ है जिसकी तमाम जुज़्ज़ियात और तफ़सीलात कुतुबे अहादीष और कुतुबे सियर व तवारीख़ में मेहफूज़ है। इसकी मअनवियत को मुताषिर करने के लिए कई किस्म की झूठी और मव्दूअ़ रिवायत फेला दी गई है जिनकी वजह से अच्छे पढ़े लिखे लोग भी शक व शुब्हात में गिरफ़्तार हो जाते हैं। जरुरत थी के वाक़ेआ करबला को सहीह अहादीष और मुस्तनद तारीख़ी रिवायत की रोशनी में सामने लाया जा'ए ता'के हक़ीक़त खुलकर सामने आ सके।

इसी मक़सद को सामने रखते हुए मैंने सिर्फ़ उन अहादीष व आधार का इन्तेखाब किया है जो दौरे हाज़िर के मुहदिषीन और मुहक्किनी की नज़र में सहीह और मुस्तनद है। इस ज़ैलमें मैंने शैख़ अल्बानी, शुऐब अरनोउत और शैख़ जुबैर अली जई की तेहक्कीक़ात से इस्तफ़ादह किया है और ऐसी कोई रिवायत दर्ज नहीं की है जिस पर हदीष व रिजाल के माहिरीन ने कलाम किया है।

अल्लाह ﷻ से दुआ है के किताब को शर्फ़े कुबूलियत अता फ़रमाये, हमारे दिलों में ख़ानवादाए रिसालत ﷺ की सच्ची महब्बत पैदा फ़रमाये। आमीन...

तालिबे शफ़ाअते रसूल ﷺ

ख़ुसरो क़ासिम

Assistant Professor

Mechanical Engineering Department,

A.M.U. Aligarh

नाम : रहमतुल्लिलअलमीन ﷺ और ग़ामे हुसैन ﷺ
मुरत्तिम : ख़ुसरो कासिम
रस्मुलख़त हिन्दी : डॉ. शहेज़ादहुसैन काज़ी
सने इशाअत (हिन्दी) : 2020
कम्पोज़िंग एण्ड प्रिन्टींग : ईमाम जा'फ़र सादिक़ फ़ाउन्डेशन (अहले सुन्नत), मोडासा,
अरवल्ली (गुजरात)

:: मिलने का पता ::

ईमाम जा'फ़र सादिक़ फ़ाउन्डेशन (अहले सुन्नत)

मोडासा, अरवल्ली (गुजरात)

फेहरिस्त

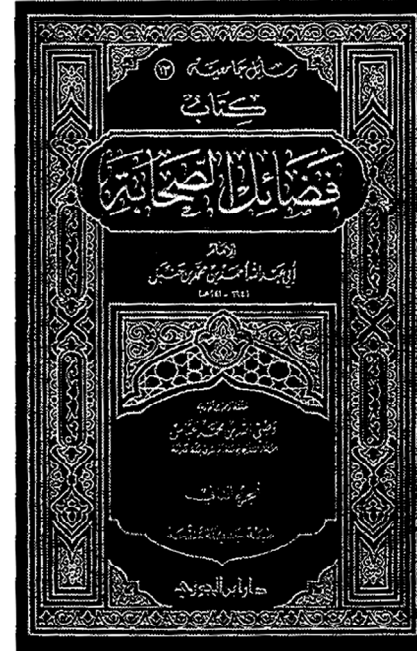
ध्यान रहे : यहां पर फेहरिस्त में उस किताब और उसके तालीक (Author) का नाम दिया गया है जिस किताब का स्कैन पेज इस किताब में है ।

किताब व तालीफ का नाम (लेखक/Authorship) का नाम	पेज नं.
1. फज्जालुल्लुस्सहाबा (इमाम अहमद इब्ने हन्बल <small>رحمته الله</small>)	2
2. अरसवाईकुल मुहरिका (इमाम इब्ने हजर हैषमी <small>رحمته الله</small>)	4
3. फज्जालुल्लुस्सहाबा (इमाम अहमद इब्ने हन्बल <small>رحمته الله</small>)	6
4. फज्जालुल्लुस्सहाबा (इमाम अहमद इब्ने हन्बल <small>رحمته الله</small>)	8
5. फज्जालुल्लुस्सहाबा (इमाम अहमद इब्ने हन्बल <small>رحمته الله</small>)	10
6. फज्जालुल्लुस्सहाबा (इमाम अहमद इब्ने हन्बल <small>رحمته الله</small>)	12
7. मुस्नद अबू या'ला मौसिली (इमाम अबू या'ला अल मौसिली <small>رحمته الله</small>)	14
8. मज्मउज्जवाइदि व मज्मऊल फवाईद (इमाम इब्ने अबूबक्र हैषमी <small>رحمته الله</small>)	16
9. मुस्नद अबू या'ला मौसिली (इमाम अबू या'ला अल मौसिली <small>رحمته الله</small>)	18
10. अल आहाद वल मषानी (इमाम इब्ने अबू आषिम <small>رحمته الله</small>)	20
11. अल-अहादीषुल मुस्लारह (अल्लामा ज़ियाउद्दीन हन्बली मक़दिसी <small>رحمته الله</small>)	22
12. मुस्तदरक अला सहीहेन (इमाम हाकिम नेशापुरी <small>رحمته الله</small>)	24
13. फज्जालुल्लुस्सहाबा (इमाम अहमद इब्ने हन्बल <small>رحمته الله</small>)	26
14. मुस्नद अहमद इब्ने हन्बल (इमाम अहमद इब्ने हन्बल <small>رحمته الله</small>)	28
15. सियर अ'लामुन्नुबला (इमाम ज़हबी <small>رحمته الله</small>)	30
16. सियर अ'लामुन्नुबला (इमाम ज़हबी <small>رحمته الله</small>)	32
17. सहीह इब्ने दिब्बान बतरतीब - इब्ने बल्बान (अल्लामा इब्ने बलबान <small>رحمته الله</small>)	34
18. मशायरह इब्ने तुहमान (अल्लामा इब्ने तुहमान <small>رحمته الله</small>)	36

	किताब व तालीफ का नाम (लेखक/Authorship) का नाम	पेज नं.
19.	अतबकातुल कुबरा (अल्लामा इब्ने सा'द <small>رحمہ اللہ</small>)	38
20.	सहीहुलजामिऊरसगीर व ज़ियादतिह (अल्लामा नासिरुद्दीन अल्बानी)	40
21.	बूसीरी फी इतहाफुल खैरा अल महारा - बि-जवाइयुल मसानीद (इमाम अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन सईद अल शन्हाजीयुल बूसीरी <small>رحمہ اللہ</small>)	42
22.	मुरनद अहमद इब्ने हम्बल (इमाम अहमद इब्ने हम्बल <small>رحمہ اللہ</small>)	44
23.	अरसहीहुल मुरनदु मिन दलाईलुनुबुव्वह (अबू अब्दुर्रहमान मुक़बिल बिन हादीयुल वादि'ई <small>رحمہ اللہ</small>)	46
24.	अल जामेऊरसहीहु मिम्मा लैसा फी अरसहीहैन (अबू अब्दुर्रहमान मुक़बिल बिन हादीयुल वादि'ई <small>رحمہ اللہ</small>)	48
25.	मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा (इमाम इब्ने अबी शैबा <small>رحمہ اللہ</small>)	50
26.	अश्शरीआ (अल्लामा अबू बक्र मुहम्मद बिन हुसैन आजुरी <small>رحمہ اللہ</small>)	52
27.	अलबिदाया वन्निहाया (हाफ़िज़ इब्ने कषीर <small>رحمہ اللہ</small>)	54
28.	तारीखुल इस्लाम व वफयातुल मशाहीर वल अ'लाम (इमाम ज़हबी <small>رحمہ اللہ</small>)	56
29.	अल मुन्तरख़ु मिन मुरनदी अब्द बिन हुमैद (अल्लामा अबी अब्दुल्लाह मुस्तफा इब्ने अदवी <small>رحمہ اللہ</small>)	60
30.	इत्हाफुल जमा'आ बि-माजा फील फितन वल-मलाहिम व अषरातिरसा'अ (अल्लामा तुवयजिरी <small>رحمہ اللہ</small>)	62
31.	सिलसिलतुल अहादीषुरसहीहा (अल्लामा नासिरुद्दीन अलबानी)	64
32.	मुरनद इमाम अहमद (इमाम अहमद इब्ने हम्बल <small>رحمہ اللہ</small>)	66
33.	मुरनद इमाम अहमद (इमाम अहमद इब्ने हम्बल <small>رحمہ اللہ</small>)	68
34.	फैजुल कदीर (अल्लामा मनावी <small>رحمہ اللہ</small>)	70
35.	सियुरुरसलफी अरसालिहीन (अल्लामा अबू कासिम अरबहानी <small>رحمہ اللہ</small>)	72
36.	मिश्कातुल मस़ाबीह (मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह अल ख़तीब तबरैज़ी <small>رحمہ اللہ</small>)	74
37.	अरसहीहुल मुरनद मिन फ़जाइलि अहलुल वैतुनुबुव्वह (अल्लामा उम्मु शु'ऐबुल वादि'हा <small>رحمہ اللہ</small>)	76
38.	जरवाईरुल उक़बा फी मनाकिबि जवियुल कुरबा (अल्लामा मुहिब्बुद्दीन तबरी <small>رحمہ اللہ</small>)	78
39.	किताबुत्तजकिराति बि-अहवालुल मवता व उमूरे आखिरा (इमाम अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अहमद ख़जरनी अन्दलुसी पुम्म कुरतीबी <small>رحمہ اللہ</small>)	80
40.	मुरनद अहमद (इमाम अहमद इब्ने हम्बल <small>رحمہ اللہ</small>)	82
41.	मुरनद अहमद (इमाम अहमद इब्ने हम्बल <small>رحمہ اللہ</small>)	84

نا حيوة، قال: أخبرني أبو ضحَر أن يزيد بن عبد الله بن قُسيط أخبره أن عروة بن الزبير قال: «إن رسول الله ﷺ قُبِلَ حسينا وضُمَّهُ إليه وجعل يُشَمُّهُ (١٤٦/ب) وعنده رجل من الأنصار، فقال الأنصاري: إن لي ابناً قد بلغ ما قبلته قط، فقال رسول الله ﷺ: أرايت إن كان الله نزع الرحمة من قلبك فما ذنبي؟».

(١٣٥٧) حدثنا عبد الله، قال: حدثني أبي، قُتْنَا وكيع، قال:



يزيد بن عبد الله بن
المدني، وثقه غير
يتمان به في الأعم
الجرح (٤: ٢: ٧٤)
ووصله الحاكم في
عن عروة عن أبيه
وقال: هذا حديث
تلخيصه:
وأخرج البخاري (٥)
قُبِلَ رسول الله ﷺ
الشامي جالساً، فقال
فنظر إليه رسول الله
أحمد: الحسين مص
وأخرج ابن حبان (٥)
يكر، وقال ابن حبان
حسن بن حليفة الت
إلى أبي هريرة ويح
قدم ناس من الأعر

(١٣٥٧) إسناده صحيح.

وسمى بن أبي هند الفزاري والد عبد الله بن سعيد مولى سمره بن جندب
تابعي ثقة وثقه المعجلي وابن حبان، مات (١١٦).
الجرح (٢: ١: ٧١)، التهذيب (٤: ٩٣).

حدثني عبد الله بن سعيد، عن أبيه، عن عائشة أو أم سلمة، قال وكيع:
شك هو أن النبي ﷺ قال لإحدهما: «لقد دخل علي البيت تلك لم
يدخل علي قبلها، فقال لي: إن ابنك هذا حسين مقتول، فإن شئت
أتيك من ثربة الأرض التي يقتل بها، قال: فأخرج إلي ثربة حمراء».

(١٣٥٨) حدثنا عبد الله، قال: حدثني أبي، قُتْنَا زيد بن الحُبَاب،
قال: حدثني حسين بن واقد، قال: حدثني عبد الله بن بُريدة، قال:
سمعت أبي بريدة يقول: «كان رسول الله ﷺ يخطبنا فجاء الحسن
والحسين وعليهما قميصان أحمران يمشيان ويحُثِرَان فنزل رسول الله ﷺ
من المنبر فتخللنا فوضعهما بين يديه، ثم قال: صدق الله ورسوله
﴿إِنَّمَا أَتَوَلَّكُمْ وَأَتَوَلَّكُمْ وَتَنَزَّلُ﴾^(١) نظرت إلى هذين الصبيين يمشيان
ويحُثِرَان فلم أضرب حتى قطعتهما حتى قطعتهما».

وأخرجه في المسند (٦: ٢٩٤) وفيه: «شك هو يعني عبد الله بن سعيد»
وقال الهيثمي في مجمع الزوائد (٩: ١٨٧): رواه أحمد ورجاله رجال
الصحيح.

وأخرجه الطبراني (٣: ١١٣) عن عائشة بدون شك وإسناده صحيح.

وأخرجه أحمد (١: ٨٥) عن نجية الحضرمي نحوه وإسناده صحيح
أيضاً، وقال في مجمع الزوائد (٩: ١٨٧) رواه أحمد وأبو يعنى والبخاري
والطبراني ورجاله ثقات ولم ينفرد نجية بهذا.

وأخرجه هو (٣: ٢٤٢، ٢٦٥)، وأبو نعيم في الدلائل (٣: ٣٠٢)،
والحاكم (٣: ١٧٦)، (١٧٧)، وأبو يعنى والبخاري والطبراني عن أنس
بأسانيد كما في الزوائد (٩: ١٨٧) وصححه الحاكم على شرط الشيخين
وتعقبه الذهبي بقوله: بل منقطع ضعيف، وذكر الهيثمي روايات أخرى
فليُنظر هناك وباتي برقم (١٣٩١) أيضاً.

(١٣٥٨) إسناده صحيح.

وهو في المسند (٥: ٣٥٤) مثله، ورواه أبو داود (١: ٢٩٠)، =

इमाम अहमद رحمته الله ने 'फ़ज़ाईलुस्सहाबा (1357)' में रिवायत नक़ल की है के हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم ने हज़रत आइशा رضی اللہ عنہا या हज़रत उम्मे सलमा رضی اللہ عنہا से फरमाया : 'अभी घरमें मेरे पास एक ऐसा फरिश्ता आया, जो इससे पहले कभी नहीं आया, उसने मुझ से कहा : आपका ये बेटा शहीद किया जाएगा, अगर आप चाहें तो मैं उस ज़मीन की मिट्टी आप के पास ले आऊँ जिसमें वोह शहीद होगा । फिर उसने मेरे सामने सुर्ख मिट्टी निकाली ।

किताब के मुहक्क़क़ वसीयुल्लाह बिन मुहम्मद अब्बास कहते हैं के इसकी सनद सहीह है ।

⇒ इसे इमाम तबरानी رحمته الله (3 : 113) और इमाम अहमद رحمته الله ने रिवायत किया है ।

أراد لقي جبريل ، فرقى إليها وأمر عائشة أن لا تطلع إليها أحد ، فرقى حسين ولم تعلم به ، فقال جبريل : من هذا ؟ قال : « ابني » ، فأخذه رسول الله ﷺ فجعله على فخذه ، فقال جبريل : ستقتله أمك ، فقال ﷺ : « أمتي » (١) ؟ قال : نعم ، وإن شئت أخبرتكم الأرض التي يقتل فيها ، فأشار جبريل بيده إلى الطّف بالعراق ، فأخذ منها تربة حمراء ، فأراه إياها ، وقال : هذه من تربة مصرع (٢) .

وأخرج الترمذي أن أم سلمة رأت النبي ﷺ باكياً ، وبرأسه وحيته التراب ، فسأته ، فقال : « قُتل الحسين أنفًا » (٣) .

وكذلك رآه ابن عباس نصف النهار أشعث أغبر بيده قارورة فيها دم (٤) يلتقطه ، فسأله ، فقال : « دم الحسين وأصحابه ، لم أزل أتبعه منذ اليوم » فنظروا فوجدوه قد قُتل في ذلك اليوم (٥) .

فاستشهد الحسين كما قال له ﷺ بكر بلاء من أرض العراق بناحية الكوفة ، ويعرف الموضع أيضاً بالطّف ، قتله مَنان بن أنس النخعي ، وقيل : غيره ، يوم الجمعة عاشر المحرم سنة إحدى وستين ، وله بيت وخمسون سنة وأشهر .

(١) تحرفت في (ط) إلى : « ابني » .

(٢) أخرجه أحمد ٢٩٤/٦ ، والبيهقي في الدلائل ٤٧٠/٦ ، ورواه بنحوه الطبراني في الكبير (٢٨١٤) ، وأورده الهيثمي في المجمع ١٨٨/٩ .

(٣) تفرد به الترمذي (٣٧٧٤) في المناقب ، وقال : حديث غريب . وأورده المصنف الطبري في الذخائر : ١٤٨ .

(٤-٥) ساقط من (ك) .

(٥) أخرجه أحمد ٢٨٣/١ ، والطبراني في الكبير (٢٨٢٢) ، وابن عساكر في تاريخه كما في المختصر ١٥٢/٧ ، وأورده الذهبي في السير ٣١٥/٣ ، وابن كثير في البداية ٢٠٠/٨ ، والمصنف الطبري في الذخائر : ١٤٨ .

‘अस्सवाईकुल मुहरिका’ में है के हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنه ने निस्फुन्नहार के वक़्त ख़्वाब में हुज़ूर ﷺ को देखा के आप के हाथमें एक शीशी है, जिसमें ख़ून है, उन्होंने आपसे पूछा, तो आप ﷺ ने फ़रमाया : ‘इसमें हुसैन عليه السلام और उनके अस्हाब का ख़ून है । मैं इसे सुब्ह से इकट्ठा कर रहा हूँ । लोगों ने उस दिन की तेहकीक़ की तो वोही दिन था जिसमें उनकी शहादत पेश आई ।

⇒ इस रिवायत को इमाम अहमद رحمته الله ने ‘मुस्नद (1/283)’, इमाम तबरानी رحمته الله ने ‘कबीर (2822)’, इब्ने असाकिर رحمته الله ने ‘तारीख (7/152)’, इमाम ज़हबी ने ‘सियर (3/315)’, इब्ने कषीरने ‘बिदाया (8/200)’ और इमाम मुहिब्ब तिबरी رحمته الله ने ‘ज़रवाइर (148)’ में नक़ल किया है ।

القصة، فقال أبو هريرة: سمعت رسول الله ﷺ يقول: من أحبهما فقد أحبني ومن أبغضهما فقد أبغضني^(١).

(١٣٧٩) حدثنا عبد الله، قال: حدثني أبي، قشنا محمد بن فضيل، نا سالم يعني ابن أبي حفصة، عن مَنذَر، قال: سمعت ابن الحنفية يقول: «حسن وحسين خير مني، ولقد عَلِمَا أَنَّهُ كَانَ يَسْتَخْلِينِي دُونَهُمَا وَأَنَا صَاحِبُ الْبَغْلَةِ الشَّهَاءِ».

(١٣٨٠) حدثنا عبد الله، قال: حدثني أبي، نا عبد الرحمن، نا حماد بن سلمة، عن عمار هو ابن أبي عمار، عن ابن عباس، قال: «رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فِي الْمَنَامِ يَنْصِفُ النَّهَارَ أَشْمَتَ أَغْبَرٍ، مَعَهُ قَارُورَةٌ فِيهَا دَمٌ يَلْتَقِطُهُ، أَوْ يَتَّبِعُ فِيهَا شَيْئًا^(١)» قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا هَذَا؟ قَالَ: دَمُ الْحُسَيْنِ وَأَصْحَابِهِ لَمْ أَزَلْ أَتَّبِعُهُ مِنْذُ الْيَوْمِ، قَالَ عَمَارُ: فَحَفِظْنَا ذَلِكَ فَوَجَدْنَاهُ قَتَلَ ذَلِكَ الْيَوْمَ عَلَيْهِ السَّلَامُ».

(١٣٧٩) إسناده حسن.

منذر هو الثوري.

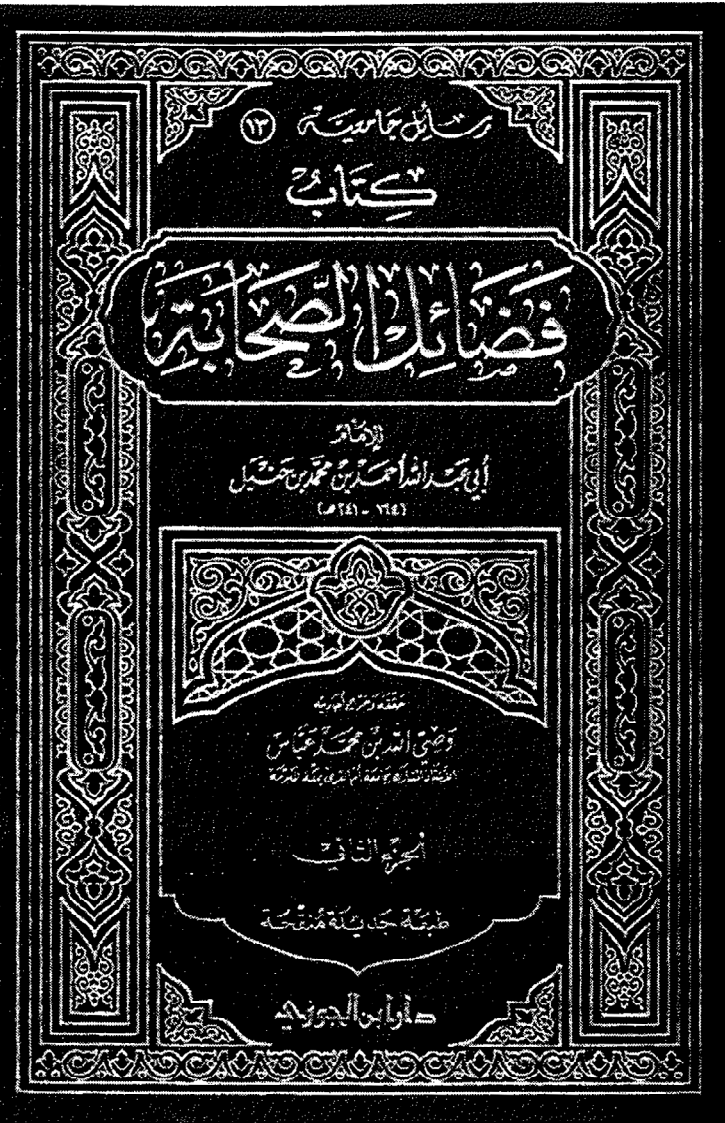
(١٣٨٠) إسناده صحيح.

وهو في نسخة (٢٤٣) مثله.

وأخرجه عبيد بن حميد كما في منتخب مسنده (ل ٩٨ ب)، والحاكم في المستدرک (٤: ٣٩٧) وصححه على شرط مسلم ووافقه الذهبي في تلخيصه، والطبراني في الكبير (٣: ١١٦، ١١٧). وابن عبد البر في الاستيعاب (١: ٣٨) كلهم من طريق حماد، وقال في مجمع الزوائد (٩: ١٩٣ - ١٩٤): رَوَاهُ أَحْمَدُ وَالطَّبْرَانِيُّ وَرِجَالُ أَحْمَدَ وَرِجَالُ الصَّحِيحِ.

وأخرج أحمد (١: ٦٤٨) وذكره الذهبي في سير النبلاء (ل ٤: ١٥٢) نحوه منام النبي ﷺ في قتله بشط الفرات وإسناده صحيح (رواه في نسخة (١٢٨١)، (١٢٨٢)، (١٢٨٣)).

(١) كان في الأصل شيء (مرفوعاً) وأثبتناه من المسند على الصواب.



इमाम अहमद رحمته الله की 'फ़ज़ाइलुस्सहाबा (1380)' में है के हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنه फ़रमाते है :

‘मैं ने निस्फुन्नहार के वक्त नबी صلى الله عليه وسلم को ख्वाब में देखा, आप صلى الله عليه وسلم परागन्दा हाल व परागन्दा बाल थे, और आप صلى الله عليه وسلم के पास एक शीशी थी, जिस में खून था, आप صلى الله عليه وسلم इसे उलट-पलट रहे थे या उसमें कोई चीज़ तलाश कर रहे थे। मैंने अर्ज किया : ‘या रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم ! ये क्या है ?’ आप صلى الله عليه وسلم ने फ़रमाया : ‘हुसैन عليه السلام और उनके साथियों का खून है, मैं इसे सुब्ह से ही इकट्ठा कर रहा हूँ।’

⇒ हज़रत अम्मार رضي الله عنه कहते है के हमने इस दिन के ज़हन में रखकर अन्दाज़ा लगाया तो ये वोही दिन था जिसमें हज़रत हुसैन عليه السلام को शहीद किया गया।

⇒ मुहक्क़के किताब कहते है के इसकी सनद सहीह है।

⇒ इमाम हाकिम رحمته الله ने इसे मुस्लिम की शर्त के मुताबिक़ करार दिया है।

⇒ इमाम अहमद رحمته الله ने ‘मुरन्द (1/648)’, इमाम हाकिम رحمته الله ने ‘मुस्तदरक (4/397)’, इमाम इब्ने अब्दुलबर رحمته الله ने ‘इरित्ताब (1/38)’ और इमाम ज़हबी رحمته الله ने ‘सियर (4/152)’ में नक्ल किया है।

(١٣٨١) حدثنا عبدالله، قال: حدثني أبي، قُتْنَا عَفَان، نا حماد، قال: أنا عمار بن أبي عمار، عن ابن عباس، قال: «رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فِيمَا يَرَى النَّاسُ بِنُصْفِ النَّهَارِ قَاتِلَ أَشْعَثَ أَغْبَرَ بِيَدِهِ قَارُورَةَ فِيهَا دَمٌ، فَقَالَ: يَا أَبِي أَنْتَ وَأُمِّي يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا هَذَا؟ قَالَ: قُتْنَا الْحُسَيْنَ وَأَصْحَابَهُ فَلَمْ أَزَلْ أُنْقَلِعْ مِنْذُ الْيَوْمِ، فَأَحْضَيْنَا ذَلِكَ الْيَوْمَ فَوَجَدُوهُ قُتِلَ فِي ذَلِكَ الْيَوْمِ عَلَيْهِ السَّلَامُ».

(١٣٨٢) حدثنا عبدالله، قال: حدثني أبي، نا الأسود بن عامر، نا أبو إسرائيل، عن غطية، عن أبي سعيد، قال: قال رسول الله ﷺ: «إِنِّي تَارِكٌ فِيكُمْ الثَّقَلَيْنِ، أَحَدُهُمَا أَكْبَرُ مِنَ الْآخِرِ كِتَابُ اللَّهِ حَبْلٌ مَمْدُودٌ مِنَ السَّمَاءِ إِلَى الْأَرْضِ وَعَثَرَتِي أَهْلُ بَيْتِي، وَإِنَّمَا لَنْ يَفْتَرِقَا حَتَّى يَرِدَا عَلَيَّ الْحَوْضَ».

(١٣٨٣) حدثنا عبدالله، قال: حدثني أبي، نا أبو الثَّغَر، نا محمد يعني ابن طلحة، عن الأعمش، عن غطية العوفي، عن أبي

(١٣٨١) إسناده صحيح.

(١٣٨٢) إسناده ضعيف.

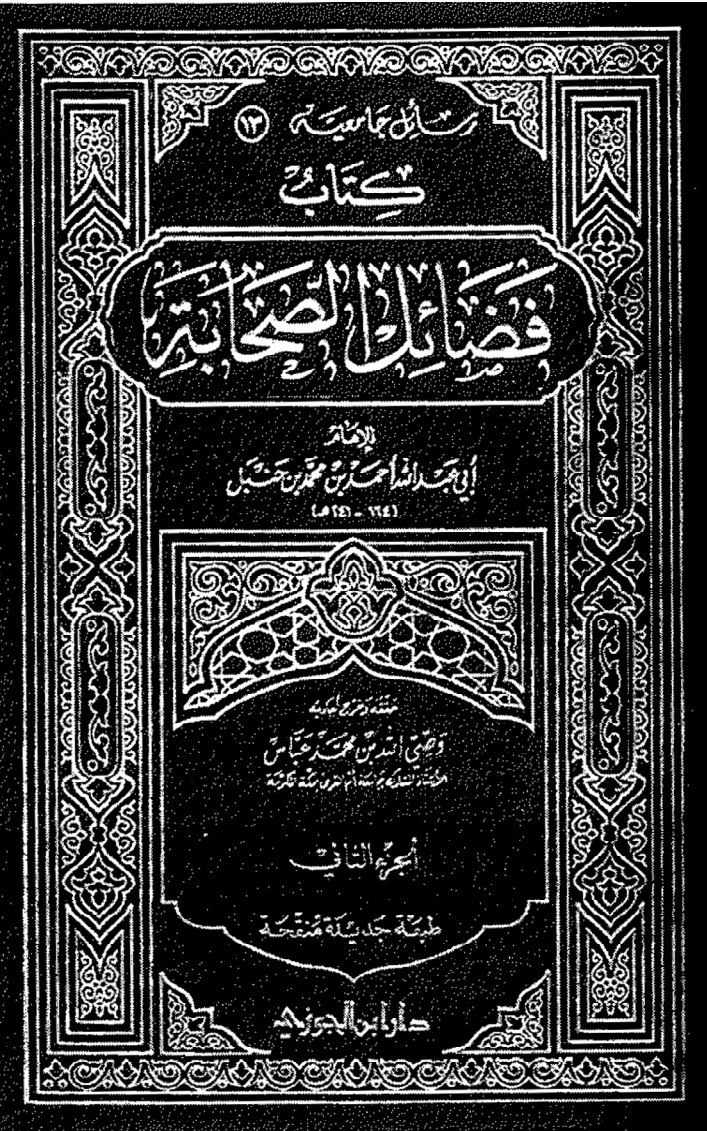
فيه ضعيفان عطية العوفي وقد سبق، وأبو إسرائيل وهو إسماعيل بن خليفة العيسى أبو إسرائيل بن أبي إسحاق المصائبي الكوفي، ضعيف متبع كادوا أن يجمعوا على ضعفه وتركهم بعضهم.

الضعفاء للبخاري (٢٥٢)، والضعفاء للنسائي (٢٨٥)، الجرح (١: ١٩٦)، المجروحون (١: ١٢٤)، (١٢٦)، الميزان (٤: ٤٩٠)، التهذيب (١: ٢٩٣)، الطريب (١: ٦٩).

وأخرجه أحمد في المسند (٣: ١٤) بهذا الإسناد مثله، ورواه الطبراني في الكبير (٣: ٦٢) من طريق عطية.

(١٣٨٣) إسناده ضعيف لأجل عطية.

وأخرجه في المسند (٣: ١٧) بهذا الإسناد مثله، والطبراني في الكبير (٣: ٦٢) من طريق الأعمش، ومفاتيح بوقم (١٧٠) مع التعليق عليه.



इमाम अहमद رحمۃ اللہ علیہ की 'फज़ाइलुस्सहाबा (1381)' में है के हज़रत इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं :

मैं ने निस्फुन्नहार के वक़्त नबी صلی اللہ علیہ وسلم को ख़्वाबमें आप صلی اللہ علیہ وسلم परागन्दा हाल व परागन्दा बाल थे, और आप صلی اللہ علیہ وسلم के पास एक शीशी थी, जिसमें खून था, मैं ने अर्ज़ किया : 'या रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ! मेरे माँ-बाप आप صلی اللہ علیہ وسلم पर कुर्बान हों, ये क्या है ?', आप صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया : हुसैन علیہ السلام और उनके साथियों का खून है, मैं इसे सुब्ह से जमा कर रहा हूँ'

हमने उस दिनको शुमार किया तो लोगों ने पाया के ये वोही दिन था जिसमें हज़रत हुसैन علیہ السلام को शहीद किया गया ।

⇒ मुहक्किके किताब कहते है के इसकी सनद सहीह है ।

نا شعبة، عن عمرو، قال: سمعت عبد الله بن الحارث، يحدث عن رُعي بن الأَقرم، قال: «بينما الحسن بن علي يخطب إذ قام رجل، فقال: إني رأيت النبي ﷺ واضعه في خبْزته. وهو يقول: من أحبني فليُحبّه، فليبلغ الشاهد الغائب ولولا عزيمة رسول الله ﷺ لما حدثت».

(١٣٨٨) حدثنا إبراهيم بن عبد الله، قال: نا حجاج، قال: أنا شعبة، قال: أنا عدي بن ثابت، قال: سمعت البراء يعني ابن عازب، قال: «رأيت رسول الله ﷺ والحسن على عاتقه، وهو يقول: اللهم إني أحبه فأحبه».

(١٣٨٩) حدثنا إبراهيم بن عبد الله البصري، نا حجاج، نا حماد، قُتْنَا عمار بن أبي عمار، عن ابن عباس، قال: «رأيت رسول الله ﷺ فيما يرى النائم بنصف النهار أغبر أشعث بيده قارورة فيها دم، فقلت: بأبي وأمي يا رسول الله، ما هذا؟ قال: هذا دم الحسين وأصحابه لم أزل منذ اليوم التقطه فأخصني ذلك اليوم فوجده قتل يومئذ».

الحاكم: كرامة رسول الله ﷺ وذكره الهيثمي في مجمع الزوائد (١٧٦: ٩)، وقال: رواه أحمد وفيه من لم أعرفه. أ. هـ. أقول: وما أدري من خفي على الهيثمي فرجاله معروفون أبو الوليد هو مشام بن عبد الملك الطيالسي وسليمان هو أبو داود هو الطيالسي، وعمرو هو ابن مرزوق أبو عثمان الباهلي، وعبد الله بن الحارث هو الزبيدي فإن كان يريد الرجل السهم من الصحابي فلا يضر إيهام الصحابي شيئاً في صحة الحديث. كما هو معروف في أصول الحديث.

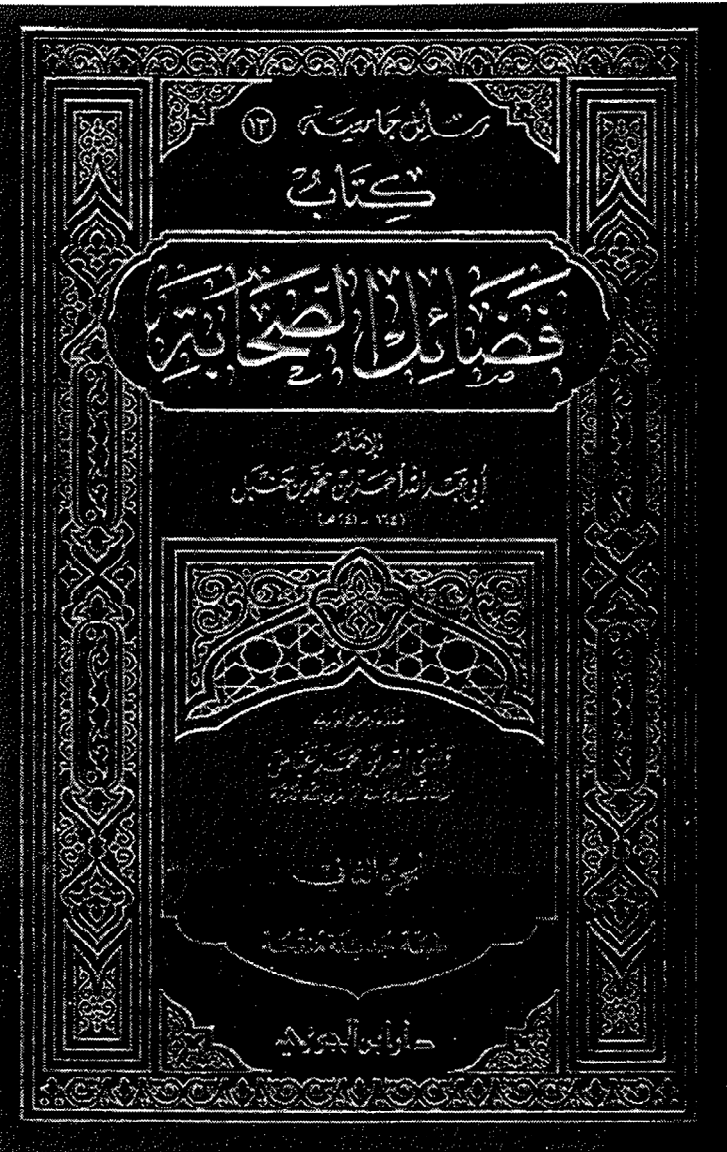
(١٣٨٨) إسناده صحيح.

ومضى برقم (١٣٨٣).

(١٣٨٩) إسناده صحيح.

وأخرجه الطبراني في الكبير (٣: ١١٦) من طريق إبراهيم بن عبد الله عن حجاج وسليمان بن حرب قالوا: نا حماد.

ومضى برقم (١٣٨٠، ١٣٨١) ويأتي برقم (١٣٩٩).



इमाम अहमद رحمۃ اللہ علیہ की 'फ़ज़ाइलुस्सहाबा (1389)' में है के हज़रत इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं :

‘मैं ने निस्फुन्नहार के वक़्त नबी صلی اللہ علیہ وسلم को ख़्वाब में देखा आप परागन्दा हाल व परागन्दा बाल थे, और आप صلی اللہ علیہ وسلم के पास एक शीशी थी, जिसमें ख़ून था, मैं ने अर्ज़ किया : ‘या रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ! मेरे माँ-बाप आप صلی اللہ علیہ وسلم पर कुरबान हों, ये क्या है?’ आप صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया : ‘हुसैन और उनके साथियों का ख़ून है,’ उस दिनको शुमार किया गया तो ये वोही दिन निकला, जिसमें हज़रत हुसैन علیہ السلام को शहीद किया गया ।

⇒ मुहक्क़के किताब कहते हैं के इसकी सनद सहीह है ।

(١٣٩٠) (١٤٩/ب) حدثنا إبراهيم بن عبدالله، نا حجاج وأبو عمر، قالا: نا مهدي بن ميمون، قال: أخبرني محمد بن عبدالله بن أبي يعقوب، عن ابن أبي نهم، قال: «كنت عند ابن عمر فسأله رجل عن دم البعوض، فقال: ممن أنت؟ قال: من أهل العراق، قال: انظروا إلى هذا يسألني عن دم البعوض وقد قتلوا ابن رسول الله، وقد سمعت رسول الله ﷺ يقول: هما زحانتي»^(١) من الدنيا رضي الله عنهما.

(١٣٩١) حدثنا إبراهيم بن عبدالله، نا حجاج، نا حماد، عن أبيان، عن شهر بن حوشب، عن أم سلمة، قالت: «كان جبريل عليه السلام عند النبي ﷺ والحسين معي فبكى، فتركته فدنا من النبي ﷺ فقال جبريل: أتجبه يا محمد؟ فقال: نعم، فقال^(٢): إن أمتك ستقتله،

(١٣٩٠) إسناده صحيح.

ومهدي بن ميمون الأزدي المعولي أبو يحيى البصري ثقة وفقه شعبة وابن سعد وأحمد وابن معين والنسائي والمجلي، مات (١٧٢) على خلاف. ومحمد بن عبدالله بن أبي يعقوب التميمي البصري ثقة وفقه ابن معين وأبو حاتم والنسائي والمجلي.

التهذيب (٩: ٢٨٤).

وأخرجه الطبراني (٣: ١٣٧) من طريق الكجي. والبخاري (٧: ٩٥)، (١٠: ٤٢٦)، وأبو داود الطيالسي (منحة المعبود ٧: ١٩٢)، والترمذي (٥: ٦٥٧) عن ابن عمر.

(١٣٩١) إسناده حسن.

ورواه الطبراني في الكبير (٣: ١١٤، ١١٥) من أربع طرق عن أم سلمة وقال في صحيح الزوائد (٩: ١٨٩): رواه الطبراني بأسانيد ورجال أحدها ثقات. وانظر (١٣٥٧).

(١) كذا بالإنفراد في الأصل.

(٢) زدت لاقضاء السياق له.

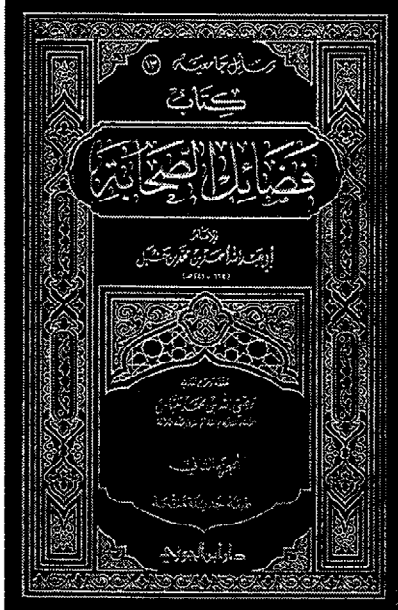
«إن شئت أريك من تربة الأرض التي يقتل بها، فأراه إياه فإذا الأرض يقال لها كربلاء»^(١).

(١٣٩٢) حدثنا إبراهيم بن عبدالله، نا حجاج، نا عبد الحميد بن بهرام الغزاري، نا شهر بن حوشب، قال: سمعت أم سلمة تقول حين جاء نعي الحسين بن علي: «لعنت أهل العراق وقالت: قتلوه قتلهم الله غزوه وذلوه لعنهم الله، وجاءته فاطمة رضي الله عنها، ومعها ابنيها^(٢) جاءت بهما تحميهما، حتى وضعتهما بين يديه، فقال لها: أين ابن

عمك؟ قالت: هو في اليسر. فجاءت تقود ابنيها كل واحد دخلوا على رسول الله ﷺ يمينه، وجلست فاطمة على كساء كان بساطاً لنا على الـ بشماله بطرفي الكساء وألـ اللهم أهل بيتي أذهب عنهم ذلك يقول: اللهم أهلي أذهب فقلت: يا رسول الله ألسـ الكساء، قالت: فدخلت (

(١٣٩٢) إسناده حسن.

ومضى الأثر برقم (١٠) ورواه الطبراني (٣: ١١٤) ومن طريق آخر عن ع



(١) كربلاء: بالمدة وهو الموضع الذي قتل فيه الحسين بن علي رضي الله عنه في طرف البرية عند الكوفة.

معجم البلدان (٤: ٤٤٥).

(٢) كذا في الأصل.

इमाम अहमद رحمۃ اللہ علیہ की 'फ़ज़ाइलुस्सहाबा (1391)' में है के हज़रत उम्मे सलमा رضی اللہ عنہا फ़रमाती हैं के 'हज़रत जिब्रईल علیہ السلام हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم के पास थे और हुसैन मेरे पास रो रहे थे, मैंने उन्हें छोड़ दिया तो वोह नबी صلی اللہ علیہ وسلم के करीब चले गये, हज़रत जिब्रईल علیہ السلام ने आप صلی اللہ علیہ وسلم से पूछा : 'ए मुहम्मद صلی اللہ علیہ وسلم ! क्या आप इससे मुहब्बत करते हैं ?' आप صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया : 'हाँ' उन्होंने फ़रमाया : 'आप صلی اللہ علیہ وسلم की उम्मत इसे क़त्ल करेगी, अगर आप صلی اللہ علیہ وسلم चाहें तो मैं उस सरज़मीन की मिट्टी आप صلی اللہ علیہ وسلم को दिखा दूँ जिसमें इसे शहीद किया जाएगा।' फिर उन्होंने आप صلی اللہ علیہ وسلم को वोह मिट्टी दिखाई, तो वोह करबला की मिट्टी थी।'

⇒ मुहक्किके किताब कहते है के इसकी सनद हसन है ।

٦٤٦ - (٣٤٠١) - حدثنا شيبان ، حدثنا عمارة ، حدثنا ثابت ،

عَنْ أَنَسٍ أَنَّ الْمُؤَدَّنَ - أَوْ يَلَانَ - كَانَ يُعِيمُ فَيَدْخُلُ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ فَيَسْتَقْبِلُهُ الرَّجُلُ فَيَقُومُ مَعَهُ حَتَّى يَخْفِقَ عَائِثُهُمْ بِرُؤُوسِهِمْ ^(١) .

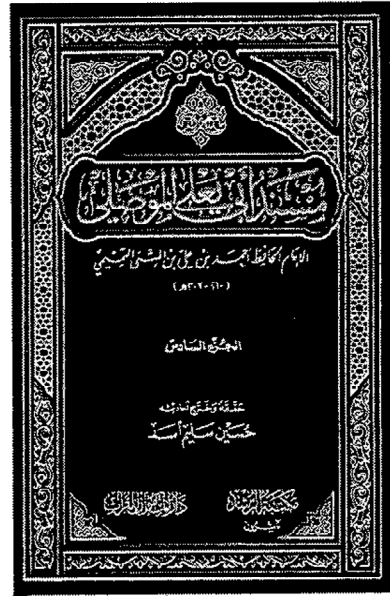
٦٤٧ - (٣٤٠٢) - حدثنا شيبان ، حدثنا عمارة بن زاذان ، حدثنا ثابت البناني ،

عَنْ أَنَسٍ بْنِ مَالِكٍ قَالَ : اسْتَأْذَنَ مَلِكُ الْقَطْرِ رَبَّهُ أَنْ يَزُورَ النَّبِيَّ ﷺ ، فَأَذِنَ لَهُ ، وَكَانَ فِي يَوْمٍ أَمَّ سَلَمَةَ . فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ : « يَا أُمَّ سَلَمَةَ احْفَظِي عَلَيْنَا الْبَابَ لَا يَدْخُلُ عَلَيْنَا أَحَدٌ » . قَالَ : فَبَيْنَمَا هِيَ عَلَى الْبَابِ إِذْ جَاءَ الْحُسَيْنُ بْنُ عَلِيٍّ فَأَقْتَحَمَ ، فَفَتَحَ الْبَابَ ، فَدَخَلَ ، فَجَعَلَ النَّبِيُّ ﷺ يَلْتَزِمُهُ وَيَقْبَلُهُ . فَقَالَ الْمَلِكُ : أَتُحِبُّهُ ؟ قَالَ « نَعَمْ » . قَالَ : إِنْ أَمُتَكَ سَتَقْتُلُهُ ، إِنْ شِفْتَ أَرَيْتَكَ الْمَكَانَ الَّذِي تَقْتُلُهُ فِيهِ . قَالَ : « نَعَمْ » . قَالَ : فَقَبِضْ قَبْضَةً مِنَ

(١) إسناده حسن من أجل عمارة بن زاذان ، وقد بينا أنه حسن الحديث عند رقم (٣٣٩٨) .
وأخرجه أبو الشيخ في « أخلاق النبي ﷺ » ص : (٣١) من طريق أبي يعلى عنه .
وأخرجه أحمد ٢٣٨/٣ - ٢٣٩ من طريق الحسن بن موسى ، حدثنا عمارة ، بهذا الإسناد . ولتمام تخريجه انظر (٣٣٠٦ ، ٣٣٠٩ ، ٣٣١٠) . وانظر الحديث (٣١٩٩ ، ٣٢٤٠) . وتحقق رؤوسهم : تعيل من التعاس .

الْمَكَانِ الَّذِي قُتِلَ بِهِ ، فَأَرَاهُ فَجَاءَ سَهْلَةً أَوْ تُرَابَ أَحْمَرَ ^(١) . فَأَخَذَتْهُ أُمَّ سَلَمَةَ فَجَعَلَتْهُ فِي نُوبِهَا .
قَالَ ثَابِتٌ : فَكُنَّا نَقُولُ : إِنَّهَا كَرْنَاءٌ ^(٢) .

٦٤٨ - (٣٤٠٣) - حدثنا قطن بن نسير الغُبَرِيُّ ، حدثنا جعفر بن سُلَيْمَانَ ، حدثنا ثابت ،
عَنْ أَنَسٍ : قَالَ رَسُولُ اللَّهِ ﷺ : « لِيَسْأَلَ أَحَدُكُمْ رَبَّهُ حَاجَتَهُ كُلَّهَا حَتَّى يَسْأَلَهُ شَيْعَ نَعْلَيْهِ إِذَا انْقَطَعَ » ^(٣) .



(١) عند أحمد : « وإن شأبه فاراه تراباً أحمر فآخذته . . . »
(٢) إسناده حسن كما بينا
(٣) موارد من طريق الإسناد .
وأخرجه أحمد ٢٩٥/٣ ، طريق عبد الصمد بن حسان .
وأخرجه أحمد ٢٤٢/٣ من وذكره الهيثمي في « معجم يعلى » ، واليزار ، والطبراني بإسناد ضعيف ، وفيه رجال أبي يعلى .
٢٨٨/٣ - ٢٨٩ .
وكربلاء - بالمد - : الموضع البرية عند الكوفة . وانظر معجم (٣) إسناده صحيح على (٣٦٠٧) باب : يسأل الحاجة الأشعث ، حدثنا قطن بن نسير ، ٨٨٢ ، ٨٨٣ بتحقيقنا .

‘मुस्नद अबू या’ला मौसिली (647, 3402)’ में रिवायत नक्ल की है :

‘हज़रत अनस बिन मालिक رضي الله عنه बयान करते हैं के बारिश के फरिश्ते ने अपने रब्बसे नबी ﷺ की ज़िंयारत की इजाज़त चाही, रब्बने उसे इजाज़त दे दी। ये दिन हज़रत उम्मे सलमा رضي الله عنها की बारी का दिन था। नबी ﷺ ने उनसे फरमाया : ‘उम्मे सलमा رضي الله عنها ! दरवाज़े को बन्द कर दो, कोई दाख़िल न हो’ अभी वो दरवाज़े पर थी के हज़रत हुसैन عليه السلام आ गए और वोह जबरदस्ती दरवाज़ा खोल कर दाख़िल हो गए। नबी ﷺ उन्हें अपने सीने से लगाकर बोसा देने लगे। फरिश्ते ने पूछा : ‘क्या आप ﷺ इससे मुहब्बत करते हैं?’ आप ﷺ ने फरमाया : ‘हाँ’, उसने कहाँ : ‘आप ﷺ की उम्मत इसे क़त्ल करेगी’ अगर आप चाहे तो मैं वोह जगह दिखा दूँ जिसमें इसे क़त्ल किया जाएगा’, आप ﷺ ने फरमाया : ‘हाँ’ उस फरिश्ते ने उस जगह की एक मुट्ठी मिट्टी ली और आप ﷺ को दिखाई। वोह मिट्टी हमवार ज़मीन की थी या सुख़ मिट्टी थी। हज़रत उम्मे सलमा رضي الله عنها ने उस मिट्टी को ले कर अपने कपड़े में बाँध लिया।

⇒ हदीष के रावी षाबित कहते हैं के हम लोग कहते थे के वोह ज़मीन करबला नामी थी।

⇒ किताब के मुहक्क़क़ हुसैन सलीम असद कहते हैं के इसकी सनद हसन है।

مَجْمُوعُ النُّوَادِلِ وَمَجْمُوعُ الْقَوَائِدِ

لَقَدْ قُطِبَ نَزْلُ الْقُرْآنِ عَلَى رَأْسِ الْكَافِرِ الْيَهُودِيِّ الْمُرَوِّعِ
بِجَمْعِ الْهَامِظِينَ الْكَلْبِيِّينَ، الْبَغْدَادِيِّينَ وَابْنِ عَجْرَةَ

الجزء التاسع

دار الكتب

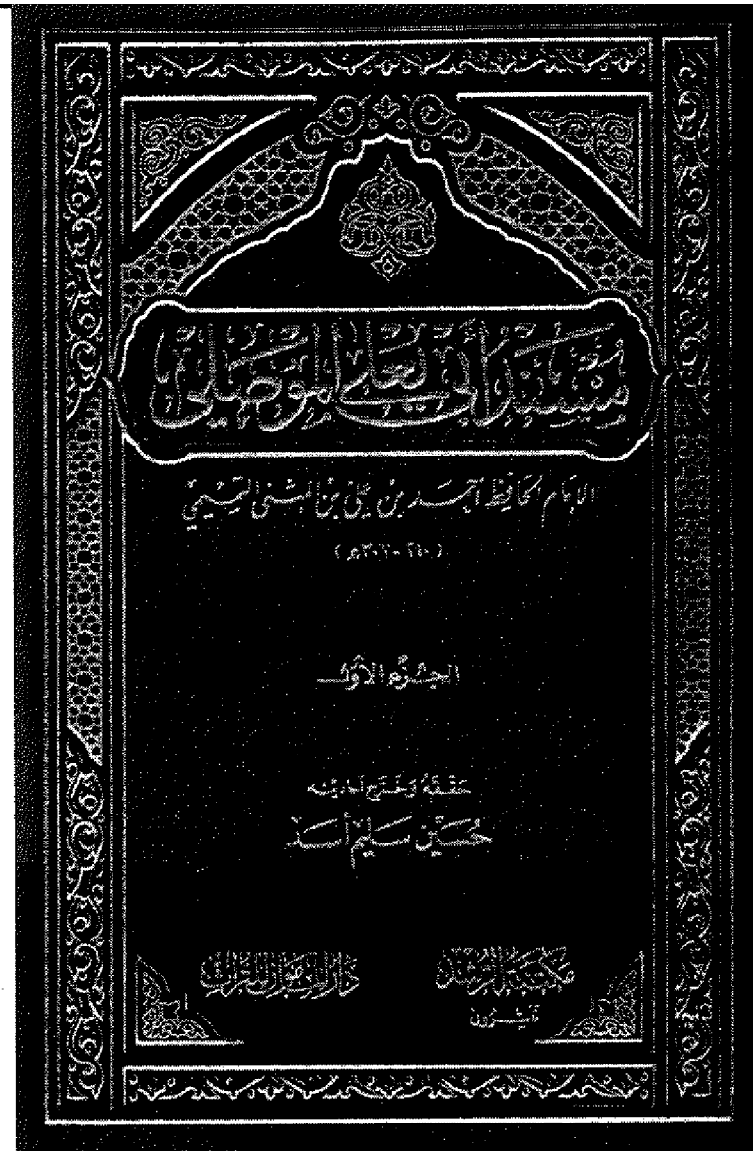
جبل قال خرج علينا رسول الله ﷺ فمعه اللون فقال أنا محمد أو ثبوت نواتج السلام
وخوانمه فأطعموني مادمت بين أظهركم فإذا ذهب بن فليبيكم بكتاب الله أحلوا
حلاله وحرموا حرامه أنتمكم المونة أنتمكم بالروح والراحة بكتاب من
الله سبق أنتمكم فتن كقطع الليل المظلم كلما ذهب رسل جاء رسل تامضت
البوة فصارت ملكاً رحم الله من أخذها بحقها وخرج منها كما دخلها أسك ياماذ
واحسن قال فلما بلغت خساً قال يزيد لا برك الله في يزيد ثم ذوقت عيناه من الله
عليه وسلم ثم قال لي إلى حين وأتيت بزيته وأخبرت بقائه والذي نفسي بيده
لا يقتلوه بين ظهري قوم لا يمشونه إلا خائف الله بين صدورهم وقلوبهم وسلط
عليهم شرارهم وألبسهم شيئاً قال واما لقراخ آل محمد من خليفة يستخلف مرف
بقتل خلق وخلف الخلف أسك ياماذ فلما بلغت عشرة قال الوليد اسم فرعون
حامد شرائع الاسلام بين يديه رجل من أهل يته بسل الله بسيفه فلا غدا له
واحتلف فكانوا هكذا فشيء بين أصابعه ثم قال بعد الشرين ومائة يكون
موت سريع وقيل ذبح فقيه هلاكهم وبل عليهم رجل من ولد الباقين . رواه
الطبراني وفيه مجاشع بن عمرو وهو كذاب . وعن أبي الطافيل قال استأذن ملك

القطر أن يسلم على النبي صلى الله عليه وسلم في بيت أم سلمة فقال لا يدخل علينا
أحد فاجاء الحسين بن علي رضي الله عنهما فدخلا فقالت أم سلمة هو الحسين فقال
النبي ﷺ دعيه فجعل يلو رقة النبي صلى الله عليه وسلم وجبت به والملائكة ينظر
فقال الملك أتجبه يا محمد قال اي والله إني لأجبه قال أما إن أمك ستقتله وإن
شئت أريتك المسكان فقال يده فتناول كفاً من تراب فأخذت أم سلمة التراب
فصرته في فخارها فكانوا يرون أن ذلك التراب من كربلاء . رواه الطبراني
وإسناده حسن . وعن أم سلمة قالت قال رسول الله ﷺ يقتل الحسين بن علي
على رأس سبعين من مهاجري . رواه الطبراني وفيه سهه بن طريف وهو مقروك .
وإسناده قالت قال رسول الله صلى الله عليه وسلم يقتل الحسين حين يلو القبر،
قال الطبراني التبريد الشيب . وعن علي قال ليقطن الحسين وإني لأعرف التربة التي
يقتل فيها قريباً من الثهرين . رواه الطبراني ورجاله ثقات . وعن شيان بن محرم

इमाम इब्ने अबू बक्र हैषमी رحمہ اللہ 'मज्मउज्जवाइद व मम्बऊल फवाईद (मत्बूआ दारुल फिक्र जुज़ : 9)' में हैं :

‘अबू तुफैल कहते हैं के बारिश के फरिश्ते ने नबी ﷺ को सलाम करके दाखिल होने की इजाज़त ली, आप ﷺ हज़रत उम्मे सलमा رضی اللہ عنہا के घरमें थे। आप ﷺ ने फ़रमाया : ‘कोई दाखिल न हो।’ इतने में हज़रत हुसैन رضی اللہ عنہ आ गए तो उम्मे सलमा رضی اللہ عنہا ने कहा, ‘हुसैन رضی اللہ عنہ है।’ आप ﷺ ने फ़रमाया : ‘उन्हें आने दो’ वोह हुज़ूर ﷺ की गरदन पर चढ़ने लगे और आप ﷺ से खेलने लगे। वोह फ़रिश्ता येह सब देख रहा था, उसने पूछा : ‘ए मुहम्मद ﷺ ! क्या आप ﷺ इससे महब्बत करते हैं?’ आप ﷺ ने फ़रमाया : ‘हाँ ! अल्लाह ﷻ की कसम ! मैं इससे मुहब्बत करता हूँ’ उस फ़रिश्ते ने कहाँ : ‘आप ﷺ की उम्मत इसे क़त्ल कर देगी, अगर आप ﷺ चाहें तो मैं वोह जगह आप ﷺ को दिखा दूँ?’ फिर उसने अपने हाथ से एक मुट्ठी मिट्टी ली (और आप ﷺ को दिखाई)। वोह मिट्टी हज़रत उम्मे सलमा رضی اللہ عنہا ने ले कर अपनी ओढ़नी में रख ली। लोगों का ख़याल था के वोह मिट्टी करबला की है।

⇒ (इसे इमाम तबरानी رحمہ اللہ ने बयान किया है और इसकी सनद सहीह है।)



١٠٢ - (٣٦٢) - حَدَّثَنَا أَبُو غَيْثَةَ ، حَدَّثَنَا حَمِيدُ بْنُ عَبْدِ
الرَّحْمَنِ ، حَدَّثَنَا حَسَنٌ ، عَنْ يَزَانَ ، عَنْ حَصِينِ بْنِ صَفْوَانَ .
عَنْ عَلِيٍّ ، قَالَ : كُنْتُ غُلَامًا مَذَّاءً ، فَلَمَّا رَأَى رَسُولُ
اللَّهِ ﷺ الْمَاءَ قَدْ آذَانِي قَالَ : « إِنَّمَا الْفُسْلُ مِنَ الْمَاءِ الدَّافِي » (١) .

١٠٣ - (٣٦٣) - حَدَّثَنَا أَبُو غَيْثَةَ ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ ،
أَخْبَرَنَا شَرَحْبِيلُ بْنُ مَدْرَكٍ ، عَنْ عَبْدِ اللَّهِ بْنِ نُجَيْمٍ عَنْ أَبِيهِ .

أَنَّهُ سَارَ مَعَ عَلِيٍّ ، وَكَانَ صَاحِبَ بَطْنِهِ ، فَلَمَّا حَاضَى
نَيْبَوَى ، وَهُوَ مُنْطَلِقٌ إِلَى صُفَيْنَ ، فَتَأَدَّى عَلِيٌّ : إَصْبِرْ يَا عَبْدِ اللَّهِ ،
إِصْبِرْ يَا عَبْدِ اللَّهِ بِشَطِّ الْفَرَاتِ ، قُلْتُ : وَمَاذَا يَا أَبَا عَبْدِ اللَّهِ ؟
قَالَ : دَخَلْتُ عَلَى النَّبِيِّ ﷺ ذَاتَ يَوْمٍ وَعَيْنَاهُ تَفِيضَانِ ، قَالَ :
قُلْتُ : يَا نَبِيَّ اللَّهِ : أَغَضَبَكَ أَحَدٌ ؟ مَا شَأْنُ عَيْنِكَ تَفِيضَانِ ؟
قَالَ : « بَلْ قَامَ مِنْ جَنْدِي جَبْرِيلُ قَبْلُ ، فَحَدَّثَنِي أَنَّ الْحُسَيْنَ يُقْتَلُ
بِشَطِّ الْفَرَاتِ » قَالَ : فَقَالَ : « هَلْ لَكَ أَنْ أُشَمِّكَ مِنْ تَرْبَتِي ؟ »
قَالَ ، قُلْتُ : نَعَمْ . قَالَ : « فَمَدَّ يَدَهُ فَقَبَضَ قَبْضَةً مِنْ تُرَابٍ
فَأَعْطَانِيهَا ، فَلَمْ أَمْلِكْ عَيْنِي أَنْ فَاضَتْ » (٢) .

= ﷺ أَنَّ أَمِيانَ بْنَ الْأَمِّ يَتَوَارَثُونَ دُونَ بَنِي الْعَلَاءِ .
وَقَالَ التِّرْمِذِيُّ : وَهَذَا حَدِيثٌ لَا نَعْرِفُهُ إِلَّا مِنْ حَدِيثِ أَبِي إِسْحَاقَ ، عَنْ
الْحَارِثِ . عَنْ عَلِيٍّ . وَفَدَّ تَكْلِمَ بَعْضِ أَهْلِ الْعِلْمِ فِي الْحَارِثِ . وَالْفَعْلُ عَلَى هَذَا
الْحَدِيثِ عِنْدَ عَامَّةِ أَهْلِ الْعِلْمِ . وَانْظُرِ الْحَدِيثَ (٣٠٠ ، ٦٢٥) .
(١) إِسْنَادُهُ ضَعِيفٌ . حَصِينُ بْنُ صَفْوَانَ مَجْهُولٌ . وَحَسَنٌ هُوَ ابْنُ صَالِحٍ ،
وَرِيَّانُ هُوَ ابْنُ يَشْرٍ . وَانْظُرِ الْحَدِيثَ (٣١٤) .
(٢) إِسْنَادُهُ حَسَنٌ . وَمُحَمَّدُ بْنُ عُبَيْدٍ هُوَ ابْنُ أَبِي أُمَيَّةَ الطَّنَافِئِيِّ . وَأَخْرَجَهُ =

‘मुस्नद अबू या’ला मौसिली (103-363)’ में है :

‘अब्दुल्लाह बिन नबी अपने वालिद से रिवायत करते हैं, वोह कहते हैं, वोह हज़रत अली عليه السلام के साथ चले, और वोह उनके खादिम थे, जो बुजू का लोटा वगैरा देते थे । हज़रत अली عليه السلام सिफ़फ़ीन जा रहे थे, जब नैनवा के करीब पहुँचे तो फ़रमाया : ‘अबू अब्दुल्लाह ! फ़ुरात के किनारे रुको, अबू अब्दुल्लाह ! फ़ुरात के किनारे रुको --’ मैं ने कहा : ‘क्या हुवा ?’ तो उन्होंने फ़रमाया : ‘एक दिन मैं नबी ﷺ की खिदमत में हाज़िर हुवा, तो आप ﷺ आबदीदा थे, मैंने अर्ज किया : ‘ए अल्लाह के नबी ﷺ ! क्या किसीने आप ﷺ को नाराज़ किया ? आप ﷺ रो क्यों रहे हो ?’ आप ﷺ ने फ़रमाया : अभी अभी मेरे पास से जिब्रईल गए हैं, उन्होंने मुझे बताया के हुसैन عليه السلام को फ़ुरात के किनारे शहीद किया जा’एगा । फिर जिब्रईल عليه السلام ने मुझ से कहा : ‘क्या मैं आप ﷺ को इस जगह की मिट्टी सूँघाँ दूँ ?’ मैं ने कहाँ : ‘हाँ’, तो उन्होंने अपना हाथ बढा कर एक मुट्ठी मिट्टी ले कर मुझे दी । इसकी वजह से मैं अपने आँसूओं पर क़ाबू न रख सका ।

⇒ किताब के मुहक्क़क हुसैन सलीम असद कहते हैं के इसकी सनद हसन है ।

⇒ दरअसल हज़रत अली عليه السلام को शायद हुज़ूर ﷺ ने हज़रत हुसैन عليه السلام की क़त्लगाह के बारे में बता दिया होगा, इसीलिए आप जब इस जगह से गुज़रे तो इसकी याद में वहाँ कुछ देर ठेहर गए ।

الْحَمْدُ لِلَّهِ الْمَنَّانِ

تأليف
ابن أبي عمير

٢٨٧ - ٢٩٦

مصحف
باسم فضيلته

المستوفى في حياته العلامة الميرزا محمد باقر

المجلد الأول

في الصلاة

٤٢٩ - حدثنا فضل بن سهل الأعرج نا محمد بن خالد بن عثمان نا موسى بن يعقوب عن هاشم بن هاشم عن عبد الله^(١) بن وهب أن أم سلمة رضي الله عنها حدثته أن رسول الله ﷺ اضطجع ذات يوم للنوم فاستيقظ وهو خائر (النفس)^(٢) ثم اضطجع ثم استيقظ وفي يده تربة حمراء يقلبها في يده فقالت: أم سلمة رضي الله عنها (٤٣/أ) يا نبي الله ما هذه التربة، قال: «أخبرني جبريل عليه السلام أن هذا يقتل (بأرض العراق)^(٣) للحسين فقلت: يا جبريل أرني تربة الأرض التي يقتل فيها وهي هذه».

٤٣٠ - حدثنا هذبة بن خالد ثنا حماد بن سلمة عن علي بن زبد عن علي بن الحسين حدثني الحسين بن علي رضي الله عنهما قبل قتله بيوم قال إن بني إسرائيل كان لهم ملك فذكر في قتل يحيى بن زكريا عليه السلام حديثاً طويلاً.

٤٣١ - حدثنا يعقوب بن حميد نا عبد الله بن ميمون المكي ثنا جعفر بن محمد عن أبيه أنه دخل على أبيه رجلان من قریش فذكر مقتل الحسين بن علي عليهما السلام بطوله.

٤٢٩ - رواه الطبراني في الكبير ٧٦/٣ رقم ٢٧٢١ من طريق ابن أبي فديك ثنا موسى بن يعقوب به نحوه، وإسناده حسن.

(١) جاء في المعجم الكبير عن عبد الله بن محمد بن ربيعة.

(٢) ما بين القوسين زيادة من المعجم الكبير.

(٣) ما بين القوسين كتب في الهامش.

‘इमाम इब्ने अबू आसिम رحمہ اللہ की ‘अल आहाद वल मषानी (429)’ में है :

‘हज़रत उम्मे सलमा رضی اللہ عنہا बयान करती है के एक दिन रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم सोने के लिए लेटे और सुस्त तबिअत के साथ बेदार हो उठे, फिर लेटे और फिर सुस्त तबिअत की हालतमें उठ बैठे और आप صلی اللہ علیہ وسلم के हाथ में सुर्ख मिट्टी थी, जिसे उलट-पलट रहे थे, हज़रत उम्मे सलमा ने पूछा : ‘या नबिय्यल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ! ये मिट्टी कैसी है ?’ आप صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया : ‘मुझे जिब्रईल ने बताया के हुसैन عليه السلام को सरज़मीने इराक़ में शहीद किया जाएगा ।’ मैं ने उनसे कहा : ए जिब्रईल ! मुझे उस जगह की मिट्टी दिखा दो, जिसमें इसे शहीद किया जाएगा, तो ये वही मिट्टी है ।’

⇒ इसे इमाम तबरानी رحمہ اللہ ने ‘मुअज़मुल कबीर (3/72, रकम : 2721) में रिवायत किया है और इसकी सनद हसन है ।’

الأحادية
المختصرة

أَوْ
أَلْسَنُخْرِجَ مِنَ الْأَحَادِيثِ الْخُتَابَةَ
مَمْلُوءَةً بِخُرُوجِ الْبَخَارِيِّ وَمُسَامٍ فِي حَيَاتِهِمَا

تصنيف
الشيخ الإمام العلامة
ضياء الدين أبي عبد الله محمد بن عبد الواحد بن محمد بن
عبد الرحمن الكندي المقدسي

0717.074

الجزء الثاني

دراسة وتحقيق
سماحة العلامة الفاضلة آية الله العظمى في الدين

مكتبة الأسد
مكة المكرمة

٧٥٨- أخبرنا المبارك بن أبي المعالي - بقرأتي عليه ينفاد - قلت له: أخبركم هبة الله بن محمد - قراءة عليه وأنت تسمع - أنا الحسن بن علي بن المذهب، أنا أحمد بن جعفر بن حمدان، ثنا عبد الله بن أحمد، حدثني أبي، ثنا محمد بن عبيد، ثنا شرحبيل بن مُذْرِك، عن عبد الله بن نجعي، عن أبيه، أنه سار مع علي، وكان صاحب مطهرته، فلما حاذى نينوى وهو منطلق إلى صفين، فنادي علي: اصبر أبا عبد الله، اصبر أبا عبد الله، بشط الفرات. قلت: وماذا؟ قال: دخلت على النبي ﷺ ذات يوم، ووعيته نفيسان. قلت: يا نبي الله أغضبك أحد؟ ما شأن عبيك نفيسان؟ قال: «بل قام من عندي جبريل بُئِلَ، فحدثني أن الحسن يقتل بشط الفرات قال: فقال: هل لك أن أشمك من ترجمته؟ قال: قلت: نعم. فمد يده، فقبض قبضة من تراب فأعطانيها، فلم أملك عيني أن فاضت»»^(١).

٧٥٨ . إسناده حسن .

والجلبوت في مستند أحمد (٦٤٨).

ورواه أبو يعلى الموصلي (٣٦٣) من طريق محمد بن عبيد، به.

(٥) بعد هذا الحديث توجد ترجمة يما يلي، والنعمان بن سعد الأنصاري الكوفي عن علي عليه السلام، وأخرج الضياء تحت هذه الترجمة (١١) حديثاً، كلها من رواية (عبد الرحمن بن إسحاق) عن النعمان بن سعد، عن علي. ثم كتب علي الترجمة (تُرك جميع هذه الترجمة) ثم بين سبب ذلك وهو وجود (عبد الرحمن بن إسحاق). وهذه الأحاديث مروية من نسخة عبد الرحمن بن إسحاق ونسخته هذه مشهورة عند أهل الحديث. وعبد الرحمن هذا يُكنى (أبا شبة الواسطي) قال في أحمد: ليس بشيء، منكرو الحديث. وقال أبو معين: ضعيف. وقال مرة: مترك. وقال البخاري: به نظر.

‘ज़ियाउद्दीन हम्बली मक़दिसी رحمۃ اللہ علیہ की ‘अल-अहादीषुल मुख्तारह (758)’ में है :

‘अब्दुल्लाह बिन नबी अपने वालिद से रिवायत करते हैं, वो कहते हैं के हज़रत अली رضی اللہ عنہ के साथ चले, और वोह उनके खादिम थे जो वुजू का लोटा वगैरा देते थे। हज़रत अली رضی اللہ عنہ सिफ़्फ़ीन जा रहे थे जब नैनवा के करीब पहुँचे तो फ़रमाया : ‘अबू अब्दुल्लाह ! फ़ुरात के किनारे रुको, अबू अब्दुल्लाह ! फ़ुरात के कनारे रुको’ मैंने कहा : ‘क्या हुआ ?’ तो उन्होंने फ़रमाया : एक दिन मैं नबी صلی اللہ علیہ وسلم की खिदमत में हाज़िर हुवा तो आप आबदीदा थे’ मैंने अर्ज किया : ‘ऐ अल्लाह के नबी صلی اللہ علیہ وسلم ! क्या किसीने आप صلی اللہ علیہ وسلم को नाराज़ किया है ? आप صلی اللہ علیہ وسلم रो क्यों रहे हैं ?’ आप صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया : ‘अभी अभी मेरे पास से जिब्रीईल عزیرا गए हैं, उन्होंने मुझे बताया के हुसैन رضی اللہ عنہ को फ़ुरात के किनारे शहीद किया जाएगा।’ फिर जिब्रीईल عزیرا ने मुझसे कहा : ‘मैं आप صلی اللہ علیہ وسلم को उस जगह की मिट्टी सूँघवा दूँ ?’ मैं ने कहाँ : ‘हाँ’ तो उन्होंने अपना हाथ बढ़ा कर एक मुट्ठी मिट्टी ले कर मुझे दी, उसकी वजह से मैं अपने आँसूओ पर क़ाबू न रख सका।’

⇒ किताब के मुहक्क़क़ डाक्टर अब्दुल मलिक बिन अब्दुल्लाह वहश कहते हैं के इसकी सनद ‘हसन’ है।

⇒ ये रिवायत मुस्नद अहमद (648) और मुस्नद अबू या’ला मौसिली (363) में भी नक़ल की गई है।

المستدرک

لایزال ما کان فیہ من اشیاء ما کان فیہ من اشیاء

وہیئة فیہ
للشیخین المحدثین

فیہ من اشیاء ما کان فیہ من اشیاء

وہیئة فیہ

وہیئة فیہ

الجزء الرابع

طبعة

طبعة

« قال يا الحسن الرجل يري الرؤيا فليأخذ في
أمره سلم يقول ما من عبد ولا امرأة يتم فيقول نوما
لغير من فذلك الرؤيا التي تصدق والذي يستيقظ
من بعد ذلك حتى تشاء الله تعالى المشرق بين سليمان عن
كان رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم يقول من
تعداه له إلى الله تعالى أن كان ملكا فمعه ما عند
رأسه فحرب مثل هذا ومثل أمته فقال من مثله
من الرماة فملكون به القار ولا ما رجس به فيهم
زددت بكم راحة مشقة وجئتوا رواء أشبوى فتلاوا
أوشروا وسدوا فقال لهم إن لكم على ذلك الحال
في فتاويهم فقال من بين أيديكم راحة مشقة من
في راحة تشبه وقالت طائفة قد عرفنا بهذا أنهم عليه

هذا حديث صحيح على شرط الشيخين ولم يخرجاه

(في حديث) أبو بكر محمد بن أحمد بن باقر بن موسى الأسدي ثنا الحسن بن موسى الأشيب ثنا جلدون

قال يا الحسن الرجل يري الرؤيا فليأخذ في أمره سلم يقول ما من عبد ولا امرأة يتم فيقول نوما
لغير من فذلك الرؤيا التي تصدق والذي يستيقظ من بعد ذلك حتى تشاء الله تعالى المشرق بين سليمان عن
كان رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم يقول من تعداه له إلى الله تعالى أن كان ملكا فمعه ما عند
رأسه فحرب مثل هذا ومثل أمته فقال من مثله من الرماة فملكون به القار ولا ما رجس به فيهم
زددت بكم راحة مشقة وجئتوا رواء أشبوى فتلاوا أوشروا وسدوا فقال لهم إن لكم على ذلك الحال
في فتاويهم فقال من بين أيديكم راحة مشقة من في راحة تشبه وقالت طائفة قد عرفنا بهذا أنهم عليه

« قال يا الحسن الرجل يري الرؤيا فليأخذ في أمره سلم يقول ما من عبد ولا امرأة يتم فيقول نوما
لغير من فذلك الرؤيا التي تصدق والذي يستيقظ من بعد ذلك حتى تشاء الله تعالى المشرق بين سليمان عن
كان رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم يقول من تعداه له إلى الله تعالى أن كان ملكا فمعه ما عند
رأسه فحرب مثل هذا ومثل أمته فقال من مثله من الرماة فملكون به القار ولا ما رجس به فيهم
زددت بكم راحة مشقة وجئتوا رواء أشبوى فتلاوا أوشروا وسدوا فقال لهم إن لكم على ذلك الحال
في فتاويهم فقال من بين أيديكم راحة مشقة من في راحة تشبه وقالت طائفة قد عرفنا بهذا أنهم عليه

« قال يا الحسن الرجل يري الرؤيا فليأخذ في أمره سلم يقول ما من عبد ولا امرأة يتم فيقول نوما
لغير من فذلك الرؤيا التي تصدق والذي يستيقظ من بعد ذلك حتى تشاء الله تعالى المشرق بين سليمان عن
كان رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم يقول من تعداه له إلى الله تعالى أن كان ملكا فمعه ما عند
رأسه فحرب مثل هذا ومثل أمته فقال من مثله من الرماة فملكون به القار ولا ما رجس به فيهم
زددت بكم راحة مشقة وجئتوا رواء أشبوى فتلاوا أوشروا وسدوا فقال لهم إن لكم على ذلك الحال
في فتاويهم فقال من بين أيديكم راحة مشقة من في راحة تشبه وقالت طائفة قد عرفنا بهذا أنهم عليه

(في حديث) أبو بكر محمد بن أحمد بن باقر بن موسى الأسدي ثنا الحسن بن موسى الأشيب ثنا جلدون

« قال يا الحسن الرجل يري الرؤيا فليأخذ في أمره سلم يقول ما من عبد ولا امرأة يتم فيقول نوما
لغير من فذلك الرؤيا التي تصدق والذي يستيقظ من بعد ذلك حتى تشاء الله تعالى المشرق بين سليمان عن
كان رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم يقول من تعداه له إلى الله تعالى أن كان ملكا فمعه ما عند
رأسه فحرب مثل هذا ومثل أمته فقال من مثله من الرماة فملكون به القار ولا ما رجس به فيهم
زددت بكم راحة مشقة وجئتوا رواء أشبوى فتلاوا أوشروا وسدوا فقال لهم إن لكم على ذلك الحال
في فتاويهم فقال من بين أيديكم راحة مشقة من في راحة تشبه وقالت طائفة قد عرفنا بهذا أنهم عليه

« قال يا الحسن الرجل يري الرؤيا فليأخذ في أمره سلم يقول ما من عبد ولا امرأة يتم فيقول نوما
لغير من فذلك الرؤيا التي تصدق والذي يستيقظ من بعد ذلك حتى تشاء الله تعالى المشرق بين سليمان عن
كان رسول الله صلى الله عليه وآله وسلم يقول من تعداه له إلى الله تعالى أن كان ملكا فمعه ما عند
رأسه فحرب مثل هذا ومثل أمته فقال من مثله من الرماة فملكون به القار ولا ما رجس به فيهم
زددت بكم راحة مشقة وجئتوا رواء أشبوى فتلاوا أوشروا وسدوا فقال لهم إن لكم على ذلك الحال
في فتاويهم فقال من بين أيديكم راحة مشقة من في راحة تشبه وقالت طائفة قد عرفنا بهذا أنهم عليه

هذا حديث صحيح على شرط الشيخين ولم يخرجاه

⇒ इमाम हाकिम رحمۃ اللہ علیہ की मुस्तदरक में है :

1. हज़रत इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं :

‘मैं ने निस्फुन्नहार के वक्त नबी صلی اللہ علیہ وسلم को ख़्वाब में देखा, आप صلی اللہ علیہ وسلم परागन्दा हाल परागन्दा बाल थे, और आप صلی اللہ علیہ وسلم के पास एक शीशी थी, जिस में खून था। मैं ने अर्ज किया : ‘या रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ! मेरे माँ-बाप आप صلی اللہ علیہ وسلم पर क़ुरबान हो, ये क्या है ?’ आप صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया : ‘हुसैन رضی اللہ عنہ और उनके साथियों का खून हैं।’

फ़रमाते हैं : ‘उस दिन को शुमार किया गया तो ये वही दिन निकला, जिसमें हज़रत हुसैन رضی اللہ عنہ को शहीद किया गया।’

⇒ ये रिवायत इमाम मुस्लिम رحمۃ اللہ علیہ की शर्त पर है, लेकिन उन्होंने इसे जिक्र नहीं किया है।

2 हज़रत उम्मे सलमा رضی اللہ عنہا बयान करती है के एक दिन रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم सोने के लिए लेटे, और सुस्त तबीअत के साथ बेदार हो उठे। फिर लेटे और फिर पेहली मस्तबा से भी ज़ियादा सुस्त तबीअत की हालत में उठ बैठे, और आप صلی اللہ علیہ وسلم के हाथ में सुख्र मिट्टी थी, जिसे उलट-पटल रहे थे। हज़रत उम्मे सलमा رضی اللہ عنہا ने पूछा : ‘या नबी अल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ! ये मिट्टी कैसी है ?’ आप صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया : ‘मुझे जिब्रीईल علیہ السلام ने बताया के हुसैन को सरज़मीने इराक़ में शहीद किया जाएगा’ मैं ने उनसे कहा : ‘ऐ जिब्रीईल علیہ السلام मुझे उस जगह की मिट्टी दिखा दो’ जिस में उसे शहीद किया जाएगा, तो ये वही मिट्टी है’

⇒ ये रिवायत शैख़ैन رحمۃ اللہ علیہ की शर्त पर है : मगर उन्होंने इसकी तरवरीज नहीं की है।

زياد حيث أتى برأس الحسين رضي الله عنه فجعل يَنْكُثُ بقضيب في يده فقلت: أما إنه كان أشبههما بالنبي ﷺ.

(١٣٩٦) حدثنا إبراهيم، نا سليمان بن حرب، عن حماد، عن عمار بن أبي عمار «أن ابن عباس رأى النبي ﷺ في منامه يوماً ينصف النهار وهو أشعث أغبر في يده قارورة فيها دم فقلت: يا رسول الله ما هذا الدم؟ فقال: دم الحسين لم أزل ألتقطه منذ اليوم فأخصي ذلك اليوم فوجدوه قتل في ذلك اليوم».

(١٣٩٧) حدثنا إبراهيم، نا سليمان بن حرب، نا حماد بن سلمة، عن علي بن زيد، عن أنس بن مالك، قال: «لما أوتي برأس الحسين يعني إلى عُبيد الله بن زياد، قال: فجعل ينكت بقضيب في يده، يقول: إن كان لحسن الثغر فقلت: والله لأسوءنك، لقد رأيت رسول الله ﷺ يقبل موضع ثغيبك من فيه».

(١٣٩٨) حدثنا إبراهيم، نا سليمان بن حرب، نا شعبة، عن عدي بن ثابت، قال: سمعت البراء قال: «رأيت رسول الله ﷺ والحسن أو الحسين شك أبو مسلم على عائته، وهو يقول: اللهم إني أحبه فأحبه».

(١٣٩٦) إسناده صحيح.

ومضى برقم (١٣٨١)، (١٣٨٩) وغيره.

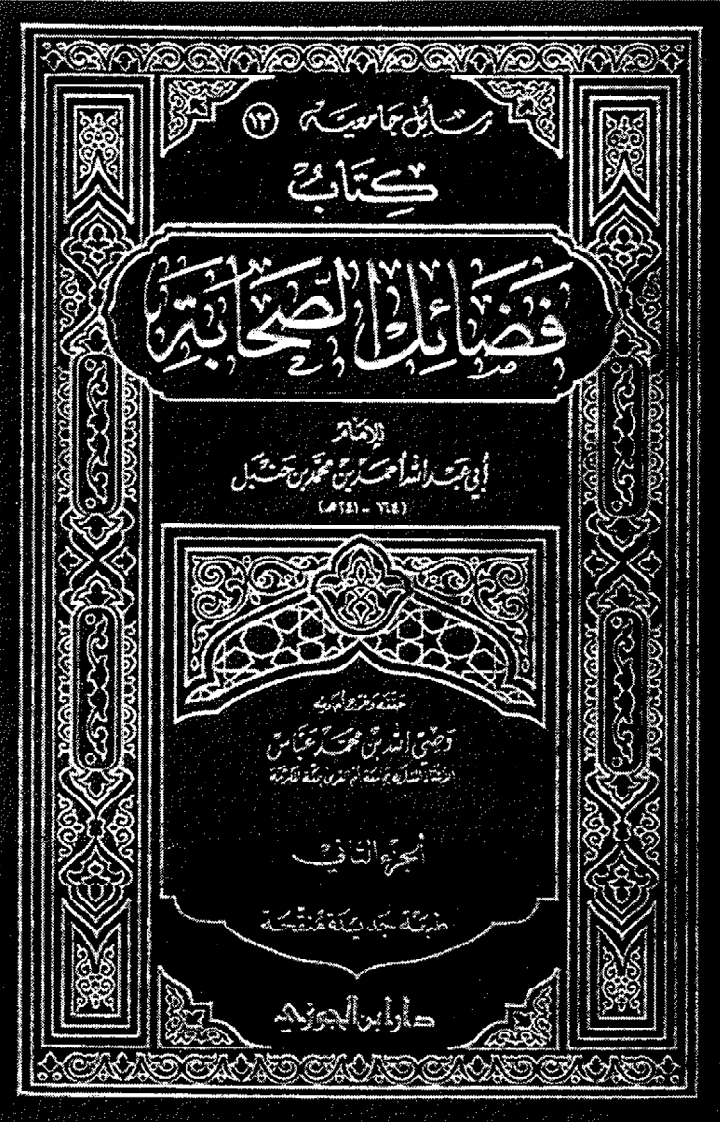
(١٣٩٧) إسناده حسن لغيره لمنابعة حنفية وابن سيرين لملي بن زيد بن جعدان في (١٣٩٤)، (١٣٩٥).

وأخرجه الطبراني في الكبير (٣: ١٣٤) من طريق إبراهيم بن عبد الله عن أبي مسلم شيخ القطيعي.

وردى الطبراني (٥: ٢٣٤، ٢٣٨) عن زيد بن أرقم نحوه. قال في مجمع الزوائد (٩: ١٩٥) فيه حرام بن عثمان وهو متروك.

(١٣٩٨) إسناده صحيح.

ومضى برقم (١٣٥٣) من رواية أحمد وفيه الحسن مكبراً بدون شك.



इमाम अहमद رحمۃ اللہ علیہ की 'फज़ाईलुस्सहाबा (1396)' में है के हज़रत इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہ फ़रमाते है :

‘मैं ने निस्फुन्नहार के वक़्त नबी صلی اللہ علیہ وسلم को ख़्वाबमें देखा, आप صلی اللہ علیہ وسلم परागन्दा हाल व परागन्दा बाल थे, और आप صلی اللہ علیہ وسلم के पास एक शीशी थी, जिसमें ख़ून था। मैंने अर्ज़ किया : ‘या रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ! ये ख़ून कैसा है ?’ आप صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया : ‘हुसैन और उनके साथियों का ख़ून है’ उस दिन को शुमार किया गया तो ये वही दिन निकला, जिसमें हज़रत हुसैन رضی اللہ عنہ को शहीद किया गया।

⇒ मुहक्क़के किताब वसीऊल्लाह बिन मुहम्मद अब्बास केहते है के इसकी सनद ‘सहीह’ है।

بقليل، أو بعده بقليل، استيقظ رسول الله ﷺ، فجلسَ يَمَسُحُ النومَ عن وجهه يديه، ثم قرأ الفُضْرَ الآياتِ خواتمِ سورة آل عمران، ثم قام إلى شُرْ مُلَاقَةٍ، فتوضأَ منها، فأحسنَ وضوءه، ثم قام يُصلي، قال ابنُ عباس: فَقَعْتُ، فَصَنَعْتُ مِثْلَ الَّذِي صَنَعَ، ثم ذهبْتُ، فَقُمْتُ إلى جَنْبِهِ، فوضع يده اليمنى ^(١) على رأسي، وأخذ أذني اليمنى ففَتَّلَهَا، فصلى ركعتين، ثُمَّ ركعتين، ثُمَّ ركعتين، ثُمَّ ركعتين، ثُمَّ ركعتين، ثُمَّ ركعتين، ثم أَوْتَرْتُ، ثم اضطَجَعَ حتى أُنَاهُ الْمُؤَدُّنَ، فقام فصلى ركعتين خفيفتين، ثم خَرَجَ، فصلى الصبحَ ^(٢).

(١) لفظة: «اليمنى» سقطت من (م).

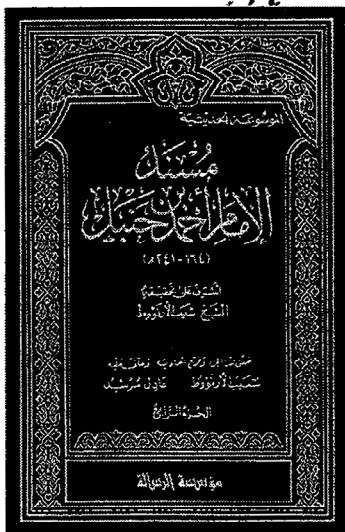
وقوله: ويمسح النوم عن وجهه بيده أي: ما يعتري العين من أثرة والشئ: القربة العتقة.

اليوم . قال عمار : فحفظنا ذلك اليوم ، فوجدناه قُتِلَ ذلك اليوم^(١) .

عن ابن عباس، قال: قالت قريش للنبي ﷺ: ادع لنا ربك أن
يجعل لنا الصفا ذهباً، ونؤمن بك.
فدعا، فأتاه جبريل فقال: إن ربك
شئت أصبح لهم الصفا ذهباً، فمن
أعذبه أحدًا من العالمين، وإن شئت
قال: «بَلْ بَابُ التَّوْبَةِ وَالرَّحْمَةِ».

وأخبره الطبراني (٢٨٢٢) و(٢٨٣٧) حماد بن سلمة، بهذا الإسناد. وصححه وسبأني برقم (٢٥٥٣).

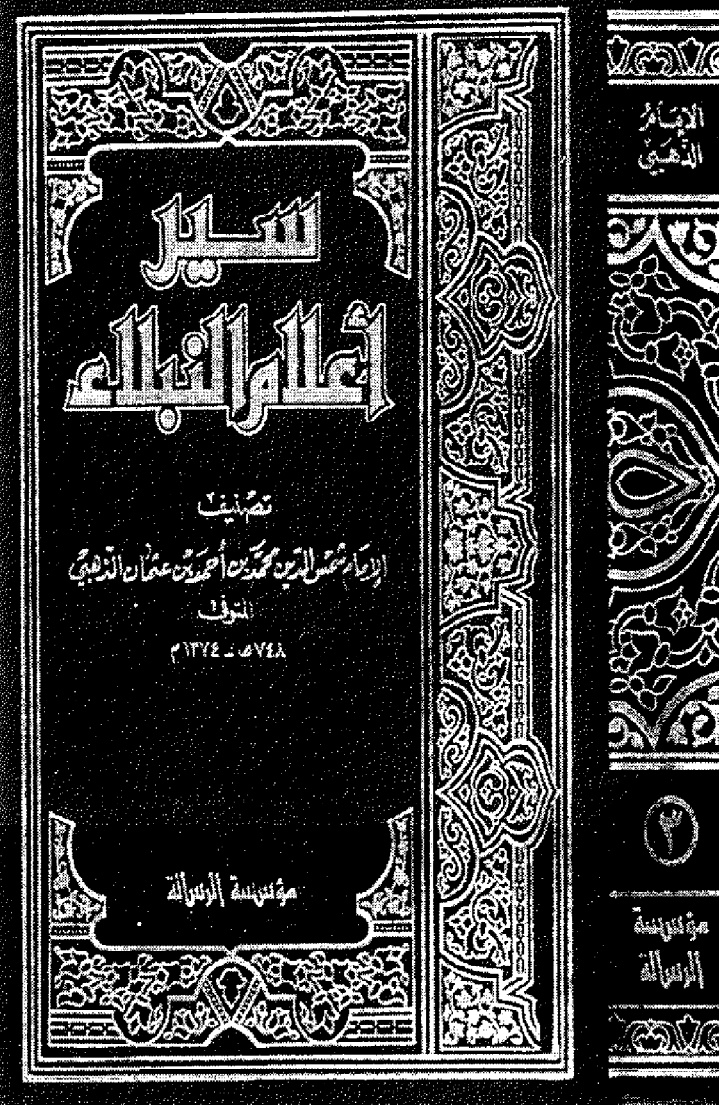
السلمي أبو الحكم الكوفي، من رجال مسلم، وباني رجاله ثقات رجال الشيخين. عبيد الرحمن: هو ابن مهدي، وسفيان: هو الثوري.
وأخرجه عبد بن حميد (٧٠٠)، والطبراني (١٢٧٣٦)، والبيهقي في (دلائل النبوة)، ٢/ ٢٧٢ من طريقين عن سفيان الثوري، بهذا الإسناد.
وأخرجه البيهقي ٢/ ٢٧٢ من طريق مالك بن مغول، عن سلمة بن كهيل، عن رجل من بني سليم، عن ابن عباس. وسياقته برقم (٢٢٢٣)، وانظر (٢٢٣٣).



इमाम अहमद رحمته الله की 'मुस्नद (2165)' में है के हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنه फ़रमाते हैं :

‘मैं ने निस्फुन्नहार के वक़्त नबी صلى الله عليه وسلم को ख़्वाब में देखा, आप صلى الله عليه وسلم परागन्दा हाल परागन्दा बाल थे, और आप صلى الله عليه وسلم के पास एक शीशी थी, जिसमें ख़ून था, आप صلى الله عليه وسلم उसे उलट-पलट रहे थे या उसमें कोई चीज़ तलाश कर रहे थे । मैं ने अर्ज़ किया : ‘या रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم ! ये क्या है ?’ आप صلى الله عليه وسلم ने फ़रमाया : ‘हुसैन और उनके साथियों का ख़ून है ।’

⇒ इसे इमाम तबरानी رحمته الله (12837 और 2822), इमाम हाकिम رحمته الله (4/397-398) ने रिवायत किया है और इमाम हाकिम رحمته الله ने मुस्लिम की शर्त पर क़रार दिया है ।



المكان الذي يُقتل فيه . قال : « نعم » ، فجاءه بسهولة أو تراب أحمر^(١) .

قال ثابت : كنا نقول : إنها كربلاء .

علي بن الحسين بن واقد ، حدثنا أبي ، حدثنا أبو غالب^(٢) ، عن أبي أمامة ، قال رسول الله ﷺ لنسائه : « لا بُكُوا هذا » ، يعني - حُسيناً : فكان يوم أم سلمة ، فنزل جبريل ، فقال رسول الله ﷺ : لا تدعي أحداً يدخل . فجاء حسين ، فبكى ، فخلَّه يدخل ، فدخل حتى جلس في حجر رسول الله ﷺ فقال جبريل : إنَّ أمك ستقتله . قال : يقتلونه وهم مؤمنون ؟ قال : نعم ، وأراه تُربته .

إسناده حسن .

خالد بن مخلد : حدثنا موسى بن يعقوب ، عن هاشم بن هاشم ، عن عبد الله بن وهب بن ربيعة ، عن أم سلمة ، أن رسول الله ﷺ اضطلع ذات يوم ، فاستيقظ وهو خائراً ، ثم رقذ ، ثم استيقظ خائراً ، ثم رقذ ، ثم استيقظ ، وفي يده ترمة حمراء ، وهو يُقلِّبها^(٣) .

قلت : ما هذم ؟ قال : أخبرني جبريل أن هذا يقتل بأرض العراق ، للحسين ، وهذه تُربتها^(٤) .

(١) أخرجه أحمد ٢٤٢/٣ و ٢٦٥ ، والطبراني (٢٨١٣) ، وصحاحه بن زاذان كثير الخطأ ، وباقى رجاله ثقات ، وأورده الهيثمي في « المجمع » ١٨٧/٩ ، وزاد نسيه لأبي يعلى واليزار ، وقال : وفيها عصابة بن زاذان . وثقه جماعة ، وفيه ضعف ، وفيه رجال أبي يعلى رجال الصحيح .
(٢) في « الضريب » : أبو غالب صاحب أبي أمامة بصري ، نزل أصبهان ، قيل : اسمه حوزر ، وقيل سعيد بن الحزور - وقيل : نافع - : صدوق يفتش من الخلسة .
(٣) عرفت في المطبوع إلى « يدها » .

(٤) وأخرجه الطبراني برقم (٧٨٢١) من طريق ابن أبي قتيب ، عن موسى بن يعقوب الزمعي به ، وموسى بن يعقوب الزمعي سي ، المحفوظ لكن تأييده عباد بن إسحاق كذا سيذكره المؤلف . وقوله « وهو خائراً » أي : ثقل النفس غير طيب ولا نشيط .

अल्लामा ज़हबी رحمہ اللہ की 'सियर अ'लामुन्नुबला' में हैं :

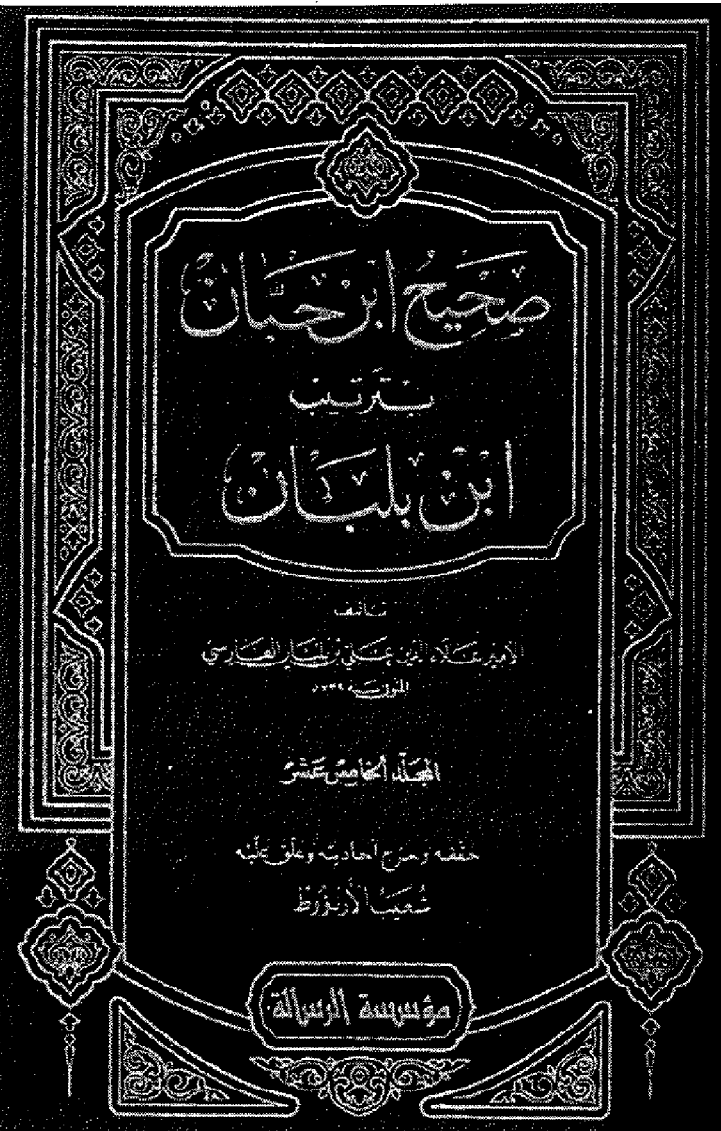
हज़रत अबू उमामा बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने अपनी अज़वाज से फ़रमाया : 'तुम हुसैन رضی اللہ عنہ पर आहो फुगां न करना ।' ये दिन हज़रत उम्मे सलमा رضی اللہ عنہا की बारी का था, हज़रत जिब्रीईल علیہ السلام तशरीफ़ लाए, तो हुज़ूर ﷺ ने हज़रत उम्मे सलमा رضی اللہ عنہا से फ़रमाया : 'किसी को अन्दर न दाख़िल होने देना, इतने में हज़रत हुसैन رضی اللہ عنہ आए और रोने लगे, तो उन्होंने उन्हें अन्दर जाने दिया, वोह रसूलुल्लाह ﷺ की गोदमें जाकर बैठ गए, हज़रत जिब्रीईल علیہ السلام ने कहा : 'आप ﷺ की उम्मत अन्क़रीब इसे शहीद कर देगी ।' आप ﷺ ने पूछा : क्या वो मोमिन होते हुए इसे शहीद कर देगी ?' उन्होंने कहा : 'हाँ !' और आप ﷺ को उस जगह की मिट्टी दिखाई ।

⇒ इस की सनद 'सहीह' है ।

अल्लामा ज़हबी رحمۃ اللہ علیہ की “सियर अलामुनुबला” में हैं :

हज़रत इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہ से रिवायत है के अल्लाह ﷻ ने हुजूर ﷺ को वहि की के मैं ने हज़रत याह्या बिन ज़करिय्या عليہ السلام के बदले सत्तर हज़ार को क़त्ल किया और मैं आप के नवासे के बदले सत्तर हज़ार और सत्तर हज़ार को क़त्ल करूँगा ।

⇒ इस की सनद साफ़ सुथरी और अल्फ़ाज़ मुन्कर है ।



ذَكَرَ الْإِحْبَارُ عَنْ قَتْلِ هَذِهِ الْأُمَّةِ
ابْنُ ابْنِ الْمُصْطَفَى رحمته الله

٦٧٤٢ - أخبرنا الحسن بن سفيان، قال: حدثنا شيبان بن فروخ، قال: حدثنا حمارة بن زاذان، قال: قال: حدثنا ثابت عن أنس بن مالك قال: اشْتَادَ ذَلِكَ الْقَطْرِ رَبُّهُ أَنْ يَزُورَ النَّبِيَّ ﷺ، فَأَذِنَ لَهُ، فَكَانَ فِي يَوْمٍ أُمِّ سَلَمَةَ، فَقَالَ النَّبِيُّ ﷺ: «أَحْفَظِي عَلَيْنَا الْبَابَ، لَا يَدْخُلُ عَلَيْنَا أَحَدٌ» فَبَيْنَا هِيَ عَلَى الْبَابِ إِذْ جَاءَ الْحُسَيْنُ بْنُ عَلِيٍّ، فَظَفَرًا، فَأَقْتَحَمَ، فَفَتَحَ الْبَابَ فَدَخَلَ، فَجَعَلَ يَتَوَتَّبِعُ عَلَى ظَهْرِ النَّبِيِّ ﷺ، وَجَعَلَ النَّبِيُّ يَتَلَثَّمُهُ وَيُقَبِّلُهُ، فَقَالَ لَهُ الْمَلَكُ: أَتُجِيبُ؟ قَالَ: «نَعَمْ» قَالَ: أَمَا إِنَّ أَمْنَكَ سَقَطَ، إِنْ شِئْتَ أَرَيْتَكَ الْمَكَانَ الَّذِي يُقْتَلُ فِيهِ؟ قَالَ: «نَعَمْ» فَقَبَضَ قَبْضَةً مِنَ الْمَكَانِ الَّذِي يُقْتَلُ فِيهِ، فَأَرَاهُ إِيَّاهُ فَجَاءَهُ بِسَهْلَةٍ أَوْ ثَرَابٍ أَحْمَرَ، فَأَخَذَتْهُ أُمُّ سَلَمَةَ، فَجَعَلَتْهُ فِي ثَوْبِهَا.

قال ثابت: كنا نقول: إنها كَرْبَلَاءُ ^(١).

= هو على حذف إحدى التاءين، وأصله تسدر، ومعناه تتحرك وتذهب وتجيء، وأصله حكاية صوت الماء في بطن الوادي إذا تدافع.
(١) حديث حسن، إسناده ضعيف، حمارة بن زاذان مختلف فيه ضعفه الدارقطني وابن عمار الموصلي والساجي، وقال الأئمة من أحمد: يروي عن ثابت عن أنس متكبر، وقال البخاري: ربما يضطرب في حديثه، وقال الأجرى عن أبي داود: ليس بذلك، وقال أبو حاتم: يكتب حديثه ولا يمتنع به ليس بالمتين، ورواه المؤلف والمجلى ويعقوب بن سفيان ورواية عن أحمد، وقال =

‘सहीह इब्ने हिब्बान बि-तरतीब इब्ने बल्बान (6742)’ में है :

हज़रत अनस इब्ने मालिक رضي الله عنه बयान करते हैं के बारिश के फ़रिश्ते ने अपने ख़से नबी صلی اللہ علیہ وسلم की ज़ियारत की इजाज़त चाही । रब्बने इसे इजाज़त दे दी । ये दिन हज़रत उम्मे सलमा رضي الله عنها की बारी का दिन था । नबी صلی اللہ علیہ وسلم ने उनसे फ़रमाया : ‘उम्मे सलमा رضي الله عنها ! दरवाज़े को बन्द कर दो, कोई दाख़िल न हो’ अभी वोह दरवाज़े पर ही थी के हज़रत हुसैन رضي الله عنه आ गए और वोह जबरदस्ती दरवाज़ा खोल कर दाख़िल हो गए । वोह नबी صلی اللہ علیہ وسلم की कमर पर कूदने लगे और आप صلی اللہ علیہ وسلم उन्हें अपने सीने से लगा कर बोसा देने लगे । फ़रिश्ते ने पूछा : ‘क्या आप صلی اللہ علیہ وسلم इससे महबूब करते हैं ?’ आप صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया : ‘हाँ !’ उसने कहाँ : ‘आप صلی اللہ علیہ وسلم की उम्मत इसे क़त्ल करेगी’ अगर आप صلی اللہ علیہ وسلم चाहें तो मैं वोह जगह दिखा दूँ जिसमें इसे क़त्ल किया जाएगा । आप صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया : ‘हाँ’, उस फ़रिश्ते ने उस जगह की एक मुट्ठी मिट्टी ली और आप صلی اللہ علیہ وسلم को दिखाई । वोह मिट्टी हमवार ज़मीन की थी या सुख़ मिट्टी थी । हज़रत उम्मे सलमा رضي الله عنها ने उस मिट्टी को ले कर अपने कपड़े में बाँध लिया ।

हज़रत षाबित कहते हैं : ‘हम लोग कहते थे के वोह जगह करबला है ।’

⇒ किताब के मुहक्कक शुऐब अरनाऊत कहते हैं के ‘ये हदीष हसन है’

مَشِيخَة

ابن طهمان

(إبراهيم بن طهمان ، المتوفى ١٦٣)

تحقيق

الدكتور / محمد طاهر مالك

مطبوعات مجمع اللغة العربية بدمشق

١٤٠٣ - ١٩٨٣

مؤسسة نبوك للنشر والتوزيع القاهرة 30 978 011/32

الزهري عن عروة عن عائشة قالت^(١) : قال رسول الله ﷺ : (١) ان
أول الناس هلاكا قومك (٢) وأول الناس هلاكا أهل بيتي .

٩٣ - عن عتبات بن إسحاق عن هاشم بن هاشم عن عبد الله بن وهب
عن أم سلمة قالت^(٢) : دخل رسول الله ﷺ بيتي فقال : « لا يدخل
علي أحد » فسمعت صوتا فدخلت ، فإذا عنده حسين بن علي ، وإذا
هو حزين - أو قالت : يبكي - فقلت : مالك تبكي يا رسول الله ؟ قال :
أخبرني جبريل أن أمسي تقتل هذا بمدي ، فقلت : ومن يقتله ؟ فتناول
مدرته^(٣) ، فقال : أهل هذه المدرة تقتله .

(١) قلت : إسناده حسن رجاله ثقات ، وعمر بن سعيد هو ابن
مسروق النوري أخو سفيان ، والزهري فقيه حافظ ، وعروة هو ابن
الزبير إمام ثبت مشهور ، هذا وروى شطره الأول نحوه الإمام أحمد في
« مسنده » ٧٤ / ٦ ، كما تقدم ، وكذلك في « ٩٠ / ٦ » من طريقين :
سند الأول ضعيف ، فيه عبد الله بن المؤمل المخرومي ضعيف ، وباقي
رجال ثقات ، وسند الطريق الثاني صحيح لذاته ، رجاله ثقات .
رجال الشيخين : ع .

(٢) [قلت : إسناده حسن ، رجاله ثقات ، وهاشم بن هاشم
هو ابن عتبة الزهري المدني ثقة من رجال الكتب الستة ، وعبد الله بن
وهب هو ابن زمعة بن الأسود الأسدي ، والحديث صحيح ، لشواهده
وطرقه الكثيرة ، التي بعضها صحيح لغيره مثل رواية أحمد (٢٩٤ / ٦) ،
وقد أورده استاذنا الألباني في « السلسلة الصحيحة » ٨٢١ - ٨٢٢ ،
وأشار إلى طرق وشواهده وصححه ، وهذا الحديث من دلائل نبوته
(ص) الكثيرة التي تشهد بصدقه ، وأنه لا ينطق عن الهوى . إن هو
إلا وحى يوحى : ع .]

(٣) هي القطعة من الطين المتناسك : ع .
٢ - الجزء (١) برواية عائشة وسند مختلف :
التاريخ الكبير للبخاري ١ : ١ : ٣١٨ .
جزء حديث آخر : برواية عائشة وسند مختلف :
هم ٧٤ : ٦ ، كتاب الفتن في ٢١٠٢ .
الجزء (٢) :
انظر الحديث السابق .

— ٥٥ —

मशायख़ह इब्ने तुहान (3) में है :

हज़रत उम्मे सल्मा رضی اللہ عنہا बयान करती है के रसूलुल्लाह ﷺ मेरे घर तशरीफ लाए और फ़रमाया : ‘मेरे पास कोई अन्दर न आए’ फिर मैंने एक आवाज़ सुनी तो मैं ने अन्दर जा कर देखा, तो आपके पास हज़रत हुसैन رضی اللہ عنہ थे और आप ﷺ गमज़दा थे या ये कहा के आप ﷺ आबदीदा थे । मैं ने अर्ज़ किया : ‘या रसूलुल्लाह ﷺ ! आप ﷺ क्यूं रोते हो ?’ आप ﷺ ने फ़रमाया : ‘मुझे जिब्रीईल عليه السلام ने बताया के मेरे बा’द मेरी उम्मत इसे क़त्ल कर देगी ।’ मैं ने पूछा : ‘कौन क़त्ल करेगा ?’ तो उन्होंने मिट्टी का एक टुकड़ा उठाकर मुझे दिखाया और कहा : ‘इस मिट्टी (के इलाक़े वाले) इसे क़त्ल करेंगे ।’

⇒ किताब के मुहक्क़क़ डाक्टर मुहम्मद ताहिर मालिक कहते है :

⇒ इस की सनद हसन है ।

इसके रिजाल षिक़ह है । इसके रावियों में हाशिम बिन हाशिम, इब्ने उत्बा जुहरी मदनी है और सिहाह सित्ता के रिजाल में से है । दूसरे रावी अब्दुल्लाह बिन वहब है जो इब्ने जुम्आ इब्ने अरवद असदी है । और ये हदीष सहीह है, इसलिये के इस से शवाहिद मौजूद है और इसके बोहत से तुरुक़ है जिनमें से बा’ज़ सहीहुन लि-वौरिह है (लि-वौरिह का मतलब है अपनी वजह से या किसी और की बुनियाद पर), जिसे इमाम अहमद رحمہ اللہ की रिवायत (12936), जिसे अल्बानी ने ‘सिलसिलतुस्सहीहा (821 और 922)’ में नक्ल किया है और इसके तुरुक़ व शवाहिद की तरफ़ इशारा करके इसकी तस्हीह की है । ये रिवायत आप ﷺ के मो’जिज़ात में से है, जो आप ﷺ के सच्चे होने पर गवाह है, जिनसे षाबित होता है के आप ﷺ अपनी ख़्वाहिश से बात नहीं करते थे, बल्के वहि की रौशनी से कलाम फ़रमाते थे ।’

٤١٥- قال أخبرنا غان بن سلم وصفي بن محمد وكثير بن هشام وجوسي بن اسماعيل قالوا : حدثنا حماد بن سلمة قال حدثنا عمار بن أبي عمار عن ابن عباس قال : رأيت النبي صلى الله عليه وسلم فيما يرى النائم ينصف النهار وهو قائم أعمت أعين يده - فصاروة فيها دم، فقلت يا بني وأبي ما هذا قال: دم الحسين وأصحابه أنا منذ اليوم (١) انقطعه.

(١) في السجدة : " من سقط " (٢) ساقطة من الأصل .

٤١٤- استاده ضعيف جدا .

- عثمان بن يقطين البصري - يضم اليه الموحدة وتشد يد الراية المهيمة - أبو سلمة الكندي ، روى عن نافع وسعيد المقبري وفائدة وهشام بن عروة وغيرهم هذه الثروة وشيخان بن تميم وأبو داود ، قال أحمد : حديثه شك ، وقال أبو حاتم : تركه الحديث . وقال أبو زرعة : كذاب يكتبه يحيى القطان والدارقطني ، ولهذا قال الله هي في المعنى في الصفحات : ٢٩/٢ كذب غير واحد ومنه شاكرو ، وله ترجمة حائلة في لسان السمران : ١٥٥/٤ ، وانظر الجرح والتعديل : ١٨٧/٦ .

تخرجه :-

تفرد به ابن سعد بهذا اللفظ والسياق ، وانظر الخبر السابق رقم (٤١٣) .

٤١٥- استاده حسن .

- عمار بن أبي عمار بن بني هاشم ، مدون ربما أخطأ ، تقدم في (٢٠) .

تخرجه :-

أخرجه أحمد في فضائل الصحابة برقم (١٣٨٠) وفي المسند : ٢٤٢/١ ، والحاكم في المستدرک : ٣٩٧/٤ وصححه ووافقه الذهبي ، وأخرجه الطبراني في الكبير : ١١٠/٣ ، كلهم من طريق حماد بن سلمة عن عمار بن أبي عمار ، وقال الذهبي في مجمع الزوائد : ١٩٤/٩ رواه أحمد والطبراني رجال أحمد رجال الصحيح ، وقد صححه العلاء سنة ...

٤١٦- قال أخبرنا علي بن محمد عن حماد بن سلمة عن إسماعيل بن عوف بن حوشب عن أم سلمة قالت : كان جبريل عند رسول الله صلى الله عليه وسلم والحسين يتي في يده فتركه ، فأتى النبي صلى الله عليه وسلم فأخذ يده فبكي ، فأرسلته ، فقال له جبريل : أتعبد ؟ قال : نعم فقال : أما إن أنك ستقتله .

٤١٧- قال أخبرنا علي بن

قال علي - وهو علي شاطي الغزا

(١) القائل : هو عمار بن أم

في الفضائل (١٢٨٠) وأ

(٢) في الأصل : فوجد ، وما

(٣) هكذا في الأصل الخطية

... أحمد شاكرو ، وانظر المسند

تفرد به قبل ذلك فهو

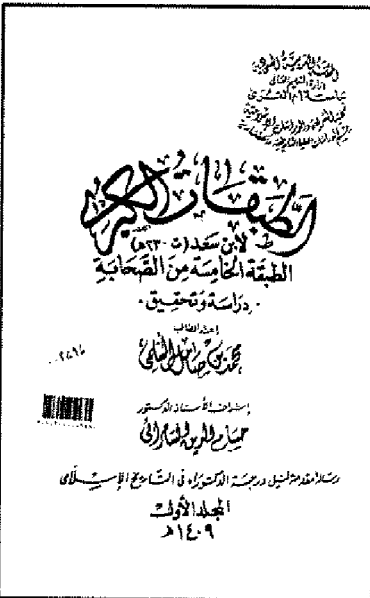
٤١٦- استاده حسن

- إسماعيل بن عمار بن صالح بن

وهو ابن حزن وقيل له ، وأبو

- شهر بن حوشب الأشعري

الحديث قد تركه شعبة ، يحيى بن سعيد ، وقال النسائي وابن هدي : ليس بالقوي ، وقال أبو حاتم لا يحتج بحديثه ، ووافقه الذهبي ، وقال أبو زرعة لا بأس به . وانما في لسان المحققين أنه هو وابن حجر يروى عن شعبة ، فقد ذكره الذهبي في الرواة المتكلم فيهم بالأرجح الرد (ص ١١٨) ترجمة رقم (١٥٨) وقال ابن حجر في التقریب : ١/٢٥٥ ص ٥٥ كثير الأرسال والأوهام وقال في فتح الباري : ٣/٦٥ حسن الحديث وإن كان فيه بعض الضعف ، (الجرح والتعديل : ٢٨٢/٤ والمروان : ٢٨٣/١ والتبذير : ٢٨٩/٤) .



1. इब्ने सा'द رحمته الله की 'अत्तबकातुल कुबरा (415) में है :

मैं ने निस्फुन्नहार के वक्त नबी ﷺ को ख्वाब में देखा, आप ﷺ परागन्दा हाल व परागन्दा बाल हालत में खड़े थे और आप ﷺ के पास एक शीशी थी, जिसमें खून था। मैं ने अर्ज किया : 'या रसूलुल्लाह ﷺ ! मेरे माँ-बाप आप पर कुरबान हो, ये क्या हैं ?' आप ﷺ ने फ़रमाया : 'हुसैन और उनके साथियों का खून है, मैं सुब्ह से ही इसे इकट्ठा कर रहा हूँ।'

2. इसी किताबमें रक़म (416) में है :

हज़रत उम्मे सलमा رضي الله عنها फ़रमाती है के हुज़ूर ﷺ के पास हज़रत जिब्रीईल عليه السلام थे और हुसैन عليه السلام मेरे पास थे, वोह रोने लगे तो मैंने उन्हें छोड़ दिया, वोह नबी ﷺ के पास पहुंच गए, मैंने उन्हें फिर पकड़ लिया, वोह फिर रोए तो मैं ने उन्हें छोड़ दिया। हज़रत जिब्रीईल عليه السلام ने आप ﷺ से पूछा : 'क्या आप ﷺ इससे महबबत करते है ?' आप ﷺ ने फ़रमाया : 'हाँ' उन्होंने कहा : 'आप ﷺ की उम्मत इसे क़त्ल कर देगी।'।

⇒ किताब के मुहक्क़क़ मुहम्मद बिन स़ामिल सुलमी केहते है के 'इन दोनों' रिवायतो की सनद हसन है।'।

صحيح
المصنف الصغير زيادة

(الفتح الكبير)

الطبعة للمجددة والزينة والمنقحة

تأليف
محمد ناصر الدين الألباني

أشرف على طبعه
زهير الشاوش

المجلد الأول

المكتب الإسلامي

٢١٨ - وأخبرني جبريل أن الخجّم أنفع ما تداوى به الناس .
(صحيح) (ك) عن أبي هريرة الصحيحة ١١٧٦ - حم عن سبرة

٢١٩ - وأخبرني جبريل أن حسينا يقتل بشاطئ الفرات .
(صحيح) (ابن سعد عن علي) . الصحيحة ١١٧١ : حم ، ع ، البزار ، طب

٢٢٠ - وأخبرني بشجرة شبه الرجل المسلم لا يتحات ورقها ،
ولا (١) ولا ولا ، تؤتي أكلها كل حين ؟ هي النخلة .
(صحيح) (ع) عن ابن عمر .

٢٢١ - اختتن إبراهيم وهو ابن ثمانين سنة بالقدوم .
(صحيح) (حم ، ق) عن أبي هريرة .
الأرواء ٧٨ ، الضميمة ٢١١٢ ، مختصر مسلم ١٦٠٧

٢٢٢ - ٨٦ - اختبر منهن أربعاً ، وفارق سائرهن (٢) .
(صحيح) (د) عن الحارث بن زيد الأسدي . الأرواء ١٨٨٣ - ١٨٨٥

٢٢٣ - ٨٧ - وأخذ الراية زيد فأصيب ، ثم أخذها جعفر ، فأصيب
ثم أخذها عبدالله بن رواحة فأصيب ، ثم أخذها خالد عن غير امرأة ففتح الله
عليه ، وما يسري أنهم عندنا ، - أو قال - : «وما يسرهم أنهم عندنا» .
(صحيح) (حم ، ع ، ن) عن أنس .

٢٢٤ - ٨٨ - وأخذ الله عز وجل مني الميثاق كما أخذ من النبيين
ميثاقهم ، ويشر بي عيسى ابن مريم ، ورأت أمي في منامها أنه خرج من
بين رجلها سراج أضاءت له قصور الشام .

(١) يعني : ولا ينقطع ثمرها ، فإنها من حين يخرج ثمرها يؤكل منه إلى أن يهرق ثمرها باسماً بدخر . (ولا)
يظل ثمرها . (ولا) يعدم ثمرها ، بل ظلها دائم .
(٢) أي : ما فوق الأربع من الزوجات .

अल्लामा अल्बानी की 'सहीहलजामिऊस्सगीर व ज़ियादतिह (219)' में हैं :

‘मुझे जिब्रीईल عليه السلام ने बताया के हुसैन رضي الله عنه को फुरात के किनारे क़त्ल किया जाएगा’

⇒ ये रिवायत सहीह है ।

⇒ अस्सहीहा : 1171, हम, अ, अल बज्जार, तब

عن أبي عبد الله عليه السلام

عن الحسن بن علي غفلقيا أبو هريرة قال
يقول منك . قال : فقال بقميصه فوضعه فاه

عن أبي عبد الله عليه السلام

قال : وكذا عند النبي ﷺ جلوسا لعماد الحسن
قال : فاجترأه فأخذه ، فقال النبي ﷺ :

عن أبي عبد الله عليه السلام

عن أبي عبد الله عليه السلام

عن أبي عبد الله عليه السلام

٢٨ - مناقب الحسين بن علي بن أبي طالب رضي الله عنهما

[٦٧٥٣] عن عبد الله بن يحيى ، عن أبيه : أنه سافر مع علي بن أبي طالب ، وكان صاحب
مظهرته ، فلما حاذى بنهر ، وهو متعلق إلى صفيين ، فنادى علي : أصبر يا عبد الله ، أصبر

(١) وأخرجه في المصنف أيضا ٩٩/١٩ رقم ١٩٢٢٦ .

(٢) مسند أحمد (٣٦٦/٥) .

(٣) قال الهيثمي في المجمع (١٧٧/٤) : رواه أحمد والطبراني ، ورجعه رجال الصحيح غير حميد بن إسحاق ،
وهو ثقة .

(٤) مسند أحمد (٢٠٥/٢) ، ١٢٧ ، ١٢٨ ، ١٢٩ .

(٥) (١٠٥) / ٢٠٠ رقم ١٩٦٦٥ .

(٦) المستدرک (١٦٨/٣) .

(٧) سقطت من الأصل ، واستخرجتها من المصنف .

(٨) وأخرج في المصنف أيضا (١٦٠/١) .

(٩) قال الهيثمي في المجمع (١٧٧/٤) : رواه الطبراني ، ورجعه رجال الصحيح غير يزيد بن يحيى ، وهو ثقة .
قلت : فاته من الحديث إلى مسند أبي علي .

(١٠) طلب النجاة (٢٥٨/٢) ٢٥٩-٢٥٨ رقم ٢٩٦٠٠ .

(١١) (٢٥٣/٢) ٢٥٤-٢٥٣ رقم ٢٩٦٠٠ .

أبا عبد الله بنشط الثقات . قلت : ماذا يا أبا عبد الله ؟ قال : دخلت على النبي ﷺ وحياء
تضيض ، قلت : يا بني الله ، ما لميتك تضيض أنضيك أسد ؟ قال : بلى قام من عندي
جبريل قبل قليل فحدثني أن الحسين يقتل بنشط الثقات . قال : فهل لك أن أشك من تربه ؟
قلت : نعم فمد يده فقبض قبضة من تراب فأعطانيها فلم أشك عياني أن فاضتاً^(١) .

رواه أبو بكر بن أبي شيبة وأحمد بن حنبل^(٢) وأبو يعلى^(٣) بسند صحيح .

[٦٧٥٤] وعن عمار بن أبي عمار ، عن ابن عباس - رضي الله عنهما - قال : وأريت
النبي ﷺ فيما يرى الناس نصف النهار وهو قائم أشمت أنف به غارورة فيها دم ، فقلت :
يا بني [أنت]^(٤) وأني يا رسول الله ما هذا ؟ قال : هذا دم الحسين وأصحابه لم أرل القعدة
منذ اليرم . قال : فأحسبنا ذلك اليوم فوجدوه قتل في ذلك اليوم^(٥) .

رواه أبو بكر بن أبي شيبة وأحمد بن حنبل^(٦) وأحمد بن منيع وعبد بن حميد^(٧) بسند
صحيح .

[٦٧٥٤] زاد أحمد بن منيع^(٨) : عن عمار ، أن أم سلمة قالت : سمعت ابن تميم
على الحسين .

[٦٧٥٥] وعن أم سلمة - رضي الله عنها - قالت : كان النبي ﷺ نائما في بيتي ، فجاء
الحسين [يدرج]^(٩) : قالت : فعددت على الباب ، فأشكته مخافة أن يدخل فيوقظه .
قلت : لم تغفل في شيء فذهب فدخل فتمدد على بطنه ، قالت : فسمعت نجيب رسول الله
ﷺ فجئت فقلت : يا رسول الله ، ما علمت به . فقال : إنما جاءني جبريل - عليه السلام -
وهو على بطني قائم ، فقال لي : أنفك ؟ قلت : نعم . قال : إن أمك ستقتله ألا أريك التربة
التي يقتل بها ؟ قال : قلت : بلى . قال : فضرب [بطنه]^(١٠) فأثنت هذه التربة . قالت :

(١) قال الهيثمي في المجمع (١٨٧/٩) : رواه أحمد وأبو يعلى والطبراني ، ورجعه ثقات ، ولم يورد علي
بينا .

(٢) مسند أحمد (٨٥/١) .

(٣) (٣٦٣) / ٢١٨ رقم ٣٦٣٢٢ .

(٤) من مسند أحمد .

(٥) في الأصل ، م : لحفظنا ذلك فوجدناه قتل ذلك ، وأثبت من مسند أحمد .

(٦) قال الهيثمي في المجمع (١٨٧/٩) : رواه أحمد والطبراني ، ورجعه رجال الصحيح .

(٧) مسند أحمد (١٢٩/١) ، ١٢٨ .

(٨) الخطب النجاة (٢٥٨/٢) رقم ٢٩٦٠٠ .

(٩) في الأصل : خرج .

(١٠) في الأصل ، م : يده . وأثبت من المصنف .

[٦٧٥٦] في يده تربة حمراء (وهو يكره) ويقول : ليت شعري من يقتلني بهذا^(١) .
رواه عبد بن حميد^(٢) بسند صحيح ، وأحمد بن حنبل^(٣) مختصرا عن عائشة أو أم سلمة
على الشك .

[٦٧٥٦] وعن صفوان قال : وبلغني أن علي بن الحسين جاءه قوم فأثروا عليه فقال :
وبحكم ما أكذبكم وأجراكم على الله ، نحن قوم من صالحى قومنا (وحسينا)^(٤) أن نكون
من صالحى قومنا .

[رواه] الحارث بن أبي أسامة^(٥) بسند منقطع .

[٦٧٥٧] وعن أنس بن مالك - رضي الله عنه - قال : واستأذن ملك القنطرة ، أن يور
النبي ﷺ ، فكان له ، وكان في يوم أم سلمة ، فقال النبي ﷺ : يا أم سلمة ، احفظي عليا
الباب لا يدخل عليا أحد . (فيها)^(٦) هي على الباب إذ جاء الحسين بن علي ، فافتتح ففتح
الباب فدخل ، فجعل النبي ﷺ يقرمه ويقلبه فقال الملك : أنفك ؟ قال : نعم . قال : إن
أمك ستقتله ، إن شئت أريك المكان الذي تقتله فيه . قال : نعم^(٧) . قال : قبض قبضة من
المكان الذي قتل فيه^(٨) فأراه فجاء بسهلة - أو تراب أحمر - فأخذته لم سلمة فجعلته
في [ثوبها]^(٩) . قال ثابت : فكان يقول أنها كربلاء^(١٠) .

رواه أبو يعلى^(١١) وابن حبان في صحيحه^(١٢) .

(١) في الأصل : يده . وأثبت من م : يده .

(٢) قال الهيثمي في المجمع (١٨٧/٩) : رواه أحمد ، ورجعه رجال الصحيح .

(٣) المصنف (١١٢-١١٣ رقم ١٨٢٢٢) .

(٤) مسند أحمد (٢٩٤/٩) .

(٥) في البيهقي : حسدا ، وهو تحريف .

(٦) سقطت من الأصل ، وأثبت من م : ١٢٢ .

(٧) البيهقي (٢٩٨ رقم ٢٩٨٨) .

(٨) في م : ١٢٢ .

(٩) سقطت من الأصل ، م : وأثبت من مسند أبي يعلى .

(١٠) في مسند أبي يعلى : م .

(١١) في الأصل ، م : نورا . وأثبت من مسند أبي يعلى وصحيح ابن حبان .

(١٢) قال الهيثمي في المجمع (١٨٧/٩) : رواه أحمد وأبو يعلى والطبراني ، وفيها عبارة بن
زبان ، وثقه جماعة ، وله ضعف ، وفيه رجال أبي يعلى رجال الصحيح .

(١٣) الخطب النجاة (٢٥٨/٢) رقم ٢٩٦٠٠ .

(١٤) (١٠٥) / ٢٥٤ رقم ٢٩٦٠٠ .

‘बूसीरी फी इतहाफुल खैरा अल महारा बि-जवाइयुल मसानीद (2753)’ में हैं :

1. अब्दुल्लाह बिन नजी अपने वालिद के रिवायत करते हैं, वोह कहते हैं के वोह हज़रत अली عليه السلام के साथ चले और वोह उनके खादिम थे जो वुजू का लोटा वगैरह देते थे। हज़रत अली عليه السلام सिफ़्फ़ीन जा रहे थे जब नैनवा के क़रीब पहुँचे तो फ़रमाया : ‘अबू अब्दुल्लाह ! फ़ुरात के किनारे रुको। अबू अब्दुल्लाह ! फ़ुरात के किनारे रुको।’ मैं ने कहा : ‘क्या हुवा ?’ तो उन्होंने फ़रमाया : एक दिन नबी ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुवा तो आप ﷺ आबदीदा थे तो मैंने अर्ज किया : ‘ए अल्लाह के नबी ﷺ ! क्या किसी ने आप ﷺ को नाराज़ किया है ? आप ﷺ रो क्यों रहे हैं ?’ आप ﷺ ने फ़रमाया : “अभी अभी मेरे पास से जिब्रीइल عليه السلام गए हैं, उन्होंने मुझे बताय के हुसैन عليه السلام को फ़ुरात के किनारे शहीद किया जाएगा, फिर जिब्रीइल عليه السلام ने मुझसे कहा, क्या मैं आपको उस जगह की मिट्टी सूँघाँ दूँ ? मैं ने कहाँ ‘हाँ’, तो उन्होंने अपना हाथ बढाकर एक मुट्ठी मिट्टी लेकर मुझे दी, इसकी वजह से मैं अपने आँसू पर काबू न रख सका।”

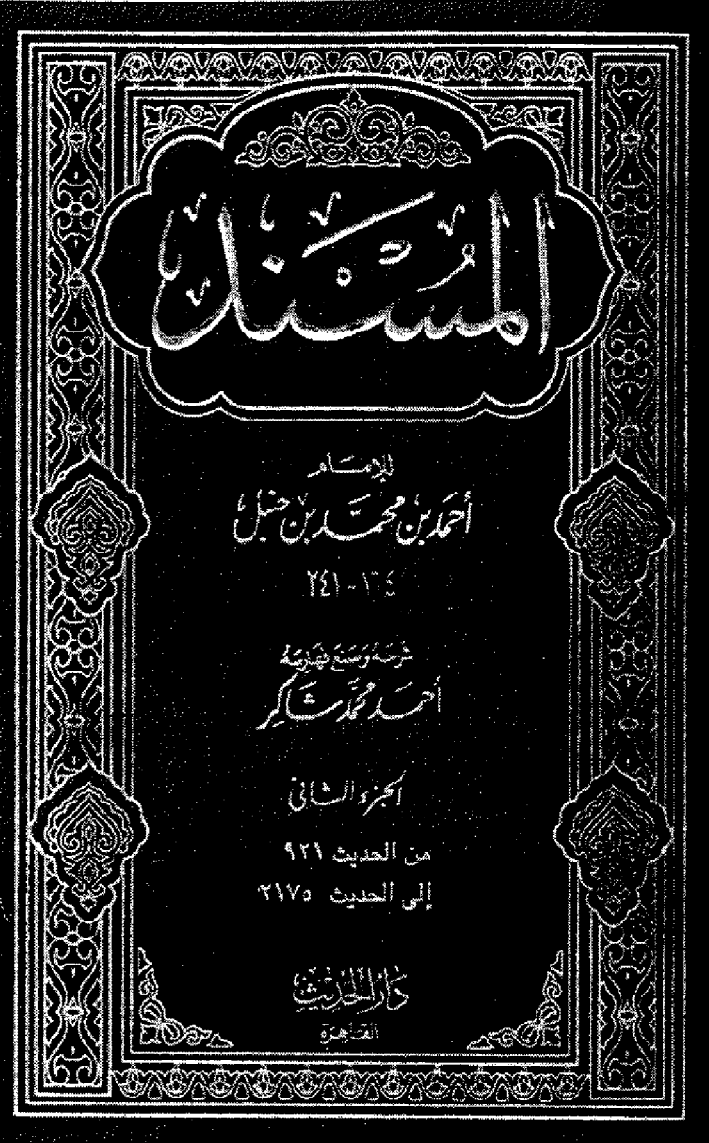
⇒ इसे अबू बक्र बिन शैबा رحمته الله, अहमद इब्ने हम्बल رحمته الله, अहमद बिन मनी'अ رحمته الله और अब्दुलहमीद رحمته الله ने रिवायत किया है, और इसकी सनद सहीह है।

2. इसी किताबमे रकम 6755 में है :

हज़रत उम्मे सलमा رضي الله عنها फ़रमाती हैं : नबी ﷺ मेरे घरमें सो रहे थे, हज़रत हुसैन عليه السلام आए, मैं दरवाज़े पर बैठी थी, मैंने उन्हें रोक लिया के कहीं वो अन्दर जा कर आप ﷺ को बेदार न कर दे। फ़रमाती हैं के फिर मैं किसी काम में गाफ़िल हो गई तो चुपके से अन्दर चले गए और आप ﷺ के पेट पर जा कर बैठ गए मैं ने रसूलुल्लाह ﷺ के रोने की आवाज़ सुनी। मैं आई और अर्ज किया : ‘या रसूलुल्लाह ﷺ ! मुझे उनके बारे में कुछ पता न चल पाया।’ आप ﷺ ने फ़रमाया : ‘(बात दरअसल ये है के) मेरे पास जिब्रीइल आए थे और ये (हुसैन عليه السلام) मेरे पेट पर बैठे हुए थे, उन्होंने मुझसे पुछा : ‘क्या आप ﷺ इससे मुहब्बत करते हैं ?’ मैं ने कहा : ‘हाँ’ उन्होंने कहा : ‘आप ﷺ की उम्मत इसे क़त्ल कर देगी, क्या मैं आप ﷺ को वोह मिट्टी ना दिखाऊँ जिसमें इसे क़त्ल किया जाएगा ?’ मैं ने कहाँ : ‘क्यों नहीं ? तो उन्होंने अपना पर मारा और ये मिट्टी मेरे पास ले कर आए।’

हज़रत उम्मे सलमा رضي الله عنها फ़रमाती हैं : ‘वोह सुख़ मिट्टी थी।’ आप ﷺ रो रहे थे और फ़रमा रहे थे, ‘काश ! मुझे पता होता के मेरे बा'द तुझे कौन क़त्ल करेगा।’

⇒ इस रिवायत को अब्द बिन हमीद ने सहीह सनद के साथ और इमाम अहमद رحمته الله ने हज़रत उम्मे सलमा رضي الله عنها या हज़रत आइशा رضي الله عنها से नक़ल किया है।



٢١٦٥ - حدثنا عبدالرحمن حدثنا حماد بن سلمة عن عمار بن أبي عمار عن ابن عباس قال: رأيت النبي ﷺ في المنام بنصف النهار أشعث أغبر، معه قارورة فيها دم يلتقطه أو يتتبع فيها شيئاً، قال: قلت: يا رسول الله، ما هذا؟ قال: دم الحسين وأصحابه، لم أزل أتبعه منذ اليوم، قال عمار: فحفظنا ذلك اليوم فوجدناه قتل ذلك اليوم.

٢١٦٦ - حدثنا عبدالرحمن حدثنا سفيان عن سلمة بن كهيل عن عمران بن الحكم عن ابن عباس قال: قالت قريش للنبي ﷺ: ادع لنا ربك أن يجعل لنا الصفا ذهباً ونؤمن بك! قال: «وتفعلون؟»، قالوا: نعم، قال: فدعنا، فأتاه جبريل فقال: إن ربك عز وجل يقرأ عليك السلام ويقول:

(٢١٦٥) إسناده صحيح، وهو في مجمع الزوائد ٩: ١٩٣ - ١٩٤ وقال: «رواه أحمد والطبراني، ورجال أحمد رجال الصحيح». وانظر ٦٤٨.

(٢١٦٦) إسناده صحيح، عمران بن الحكم: هكذا هو في الأصلين، بل هو قديم في أصول المستند، بل أظن أن الخطأ فيه من عبدالرحمن بن مهدي أو سفيان الثوري، ففي التجميع ٣١٩: «كلنا وقع، والصواب عمران بن الحرث أبو الحكم، كما في صحيح مسلم وغيره»، يعني في حديث آخر، فإن هذا الحديث ليس في صحيح مسلم، والظاهر أن أصل الرواية «عن عمران أبي الحكم» فأسقط أحد الرواة فقال «عن عمران بن الحكم»، وليس في الرواة الذين رأينا تراجمهم من يسمى «عمران بن الحكم». وعمران ابن الحرث: سبق توثيقه ١٨٥، وهو كوفي تابعي ثقة، وفي الجرح والتعديل ٢٩٦/١٣ عن أبي حاتم: «صالح الحديث». والحديث ذكره ابن كثير في التلخيص ٣: ٥٢ وقال: إسناده جيد، وفيه «عمران بن الحكم» وهو خطأ مطبعي. وذكره في التفسير ٣: ٢٨٠ وفيه «عمران بن الحكم»، وقال: «رواه أحمد وابن مردويه والحاكم في مشتركة من حديث سفيان الثوري»، به فهدا يدل على أن الخطأ قديم في تنسخ المستند، وهو في المستدرك ٢: ٣١٤ من طريق سفيان الثوري، وفيه «عمران بن الحكم» أيضاً، فهنا يدل على أن الخطأ من أحد الرواة لا من النسخ، وقال الحاكم: «حديث صحيح على شرط مسلم، ولم يخرجاه»، ووافقه الذهبي. وسنأتي بمسند إسناده آخر عن ابن -

इमाम अहमद رحمته الله की 'मुस्नद (2165)' में है के हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنه फ़रमाते हैं :

‘मैं ने निस्फुन्नहार के वक़्त नबी صلى الله عليه وسلم को ख़्वाब में देखा, आप صلى الله عليه وسلم परागन्दा हाल व परागन्दा बाल थे, और आप صلى الله عليه وسلم के पास एक शीशी थी, जिस में ख़ून था, आप صلى الله عليه وسلم इसे उलट-पलट रहे थे या उसमें कोई चीज़ तलाश कर रहे थे। मैंने अर्ज किया : ‘या रसूलुल्लाह صلى الله عليه وسلم ! ये क्या है ?’ आप صلى الله عليه وسلم ने फ़रमाया : ‘हुसैन عليه السلام और उनके साथियों का ख़ून है, मैं इसे सुब्ह से ही इकठ्ठा कर रहा हूँ।’

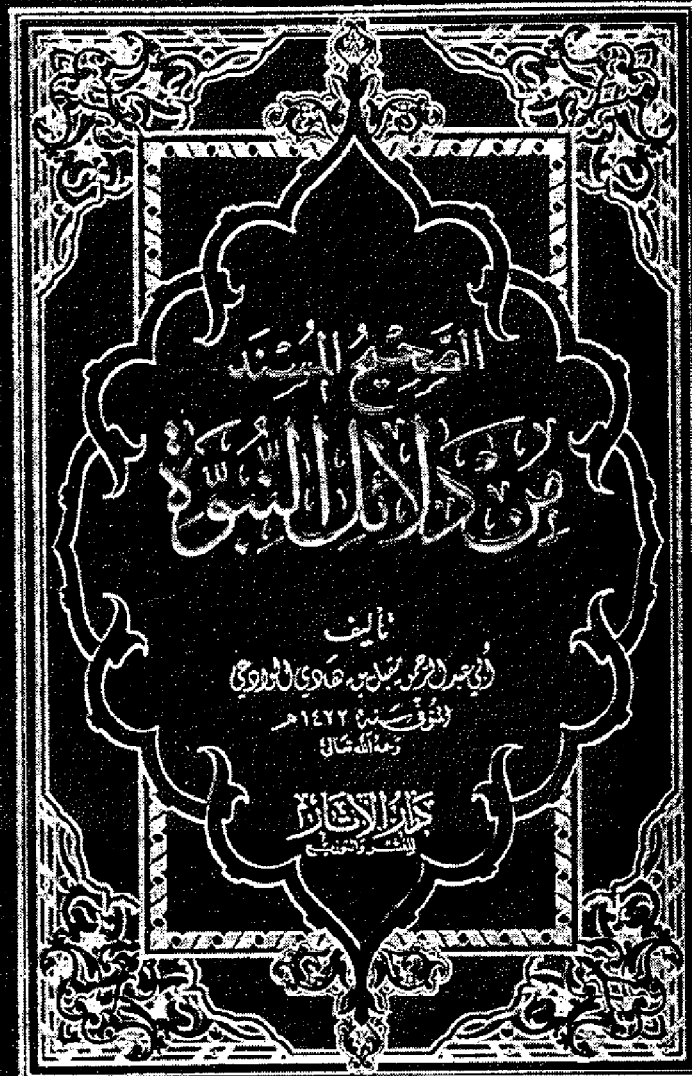
⇒ हज़रत अम्मार رضي الله عنه कहते हैं के हमने उस दिन के ज़हन में रखकर अन्दाज़ा लगाया तो ये वोही दिन था जिसमें हज़रत हुसैन عليه السلام को शहीद किया गया।

⇒ मुहक्किके किताब अहमद मुहम्मद शाकिर कहते हैं के इसकी सनद सहीह है।

٣٦٤- قال الإمام أحمد رحمه في «فضائل الصحابة» (ج ٢ ص ٧٧٨):
 حَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّزَّاقِ، حَدَّثَنَا حَمَّادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ عَمَّارِ بْنِ أَبِي عَمَّارٍ، عَنْ ابْنِ
 عَبَّاسٍ، قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فِي الْمَنَامِ يَضُفُّ النَّهَارَ، أَشْمَتُ أَغْيَرَ، مَعَهُ
 قَارُورَةٌ فِيهَا دَمٌ يَلْقِطُهُ، أَوْ يَسْتَجِمُّ فِيهَا شَيْئًا، قَالَ: فُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ، مَا هَذَا؟
 قَالَ: «دَمُ الْمُسْلِمِينَ وَأَصْحَابِهِ، لَمْ أَزَلْ أَتَلَبَّهُ مِنْذُ الْيَوْمِ» قَالَ عَمَّارٌ: فَحَفِظْنَا
 ذَلِكَ، فَوَجَدْنَاهُ فُجِّلَ ذَلِكَ الْيَوْمَ الْحَدِيثَ.

حَدَّثَنَا هَنَّانٌ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدٌ هُوَ ابْنُ سَلَمَةَ، أَخْبَرَنَا عَمَّارُ بْنُ أَبِي عَمَّارٍ، عَنْ
ابْنِ عَبَّاسٍ، قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَمَّا يَرَى النَّاسَ يَنْصُفُ النَّهَارَ، وَهُوَ قَائِلٌ،
أَتَعَفَّ أَغْبَرُ، يَبْدُو قَارُورَةٌ فِيهَا دَمٌ، فَقَالَ: يَا أَيُّ أَنْتَ وَأَمِّي يَا رَسُولَ اللَّهِ، مَا
هَذَا؟ قَالَ: «دَمُ الْحَسَنِ وَأَصْحَابِهِ، فَلَمْ أَزَلْ أَلْقِطُهُ مِنْهُ الْيَوْمَ، فَأَحْضَبُنَا ذَلِكَ
الْيَوْمَ، فَرَجَدُوا فُقِلَ فِي ذَلِكَ الْيَوْمِ» (الطبري).

هذا حديث صحيح على شرط مسلم



1. अबू अब्दुर्रहमान मुक़बिल बिन हादीयुल वादि'ई (मुतवफ़ा : 1422) की 'सहीह 'अस्सहीहुल मुस्नदमिन दलाईलुन्नुबुव्वह (364)' में है। हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنه फ़रमाते हैं :

‘मैं ने निस्फुन्नहार के वक़्त नबी ﷺ को ख़्वाब में देखा, आप ﷺ परागन्दा हाल व परागन्दा बाल थे, और आप ﷺ के पास एक शीशी थी, जिस में ख़ून था, आप ﷺ इसे उलट-पलट रहे थे या उसमें कोई चीज़ तलाश कर रहे थे। मैंने अर्ज किया : ‘या रसूलुल्लाह ﷺ ! ये क्या है ?’ आप ﷺ ने फ़रमाया : ‘हुसैन عليه السلام और उनके साथियों का ख़ून है, मैं इसे सुब्ह से ही इकठ्ठा कर रहा हूँ।’

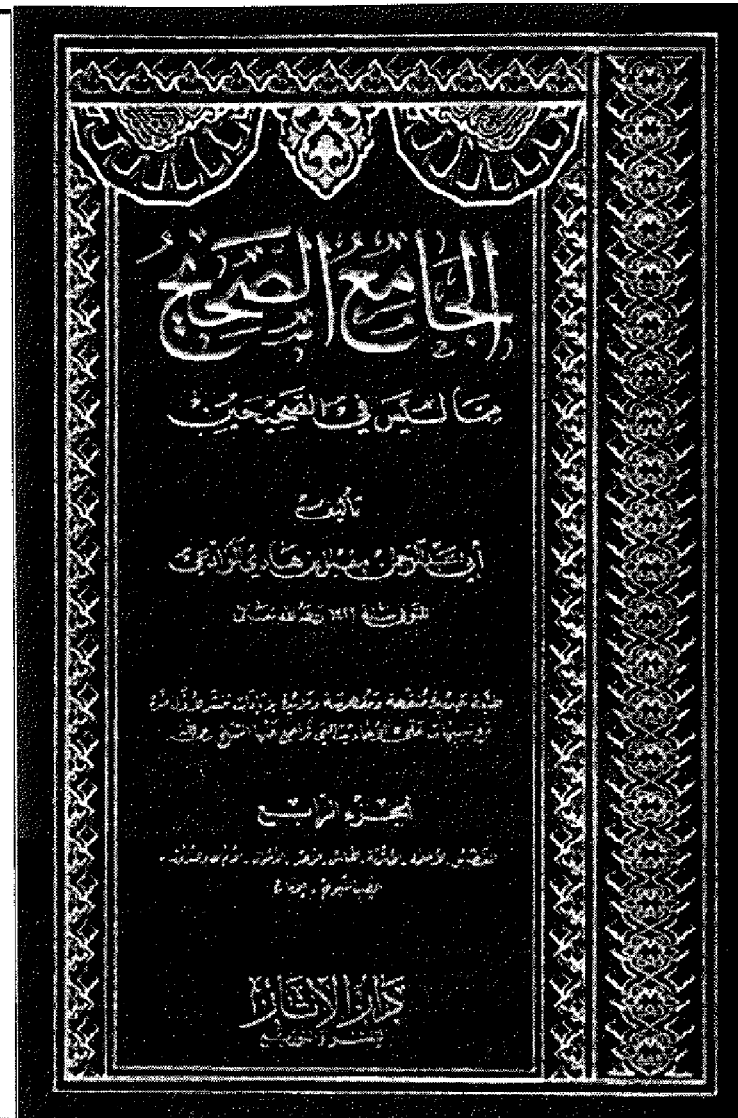
⇒ हज़रत अम्मार رضي الله عنه कहते हैं के हमने उस दिन के ज़हन में रखकर अन्दाज़ा लगाया तो ये वोही दिन था जिसमें हज़रत हुसैन عليه السلام को शहीद किया गया।

2. हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنه फ़रमाते हैं :

‘मैं ने निस्फुन्नहार के वक़्त नबी ﷺ को ख़्वाब में देखा, आप ﷺ परागन्दा हाल व परागन्दा बाल थे, और आप ﷺ के पास एक शीशी थी, जिस में ख़ून था, आप ﷺ इसे उलट-पलट रहे थे या उसमें कोई चीज़ तलाश कर रहे थे। मैंने अर्ज किया : ‘या रसूलुल्लाह ﷺ ! ये क्या है ?’ आप ﷺ ने फ़रमाया : ‘हुसैन عليه السلام और उनके साथियों का ख़ून है, मैं इसे सुब्ह से ही इकठ्ठा कर रहा हूँ।’

⇒ हमने उस दिन को शुमार किया तो लोगों ने अन्दाज़ा लगाया के ये वोही दिन था जिसमें हज़रत हुसैन عليه السلام को शहीद किया गया।

⇒ ये रिवायत सहीह है और मुस्लिम की शर्त पर है।



«صحيح ابن حبان» في مناقب الحسين.

وأخرجه الإمام أحمد رحمه الله في «فضائل الصحابة» (ج ٢ ص ٧٧٥) فقال رحمه الله: حدثنا وكيع، عن ربيع بن سعد به.

٢٤٧٥- قال الإمام أحمد رحمه الله في «فضائل الصحابة» (ج ٢ ص ٧٧٨): حدثنا عبد الرحمن، حدثنا حماد بن سلمة، عن عمار، هو ابن أبي عمار، عن ابن عباس، قال: رأيت النبي ﷺ في المنام ينضب النهار، أشعث أغبر، معة قارورة فيها دم يلتقطه، أو يتتبع فيها عينا، قلت: يا رسول الله، ما هذا؟ قال: «دم الحسين وأصحابه، لم أزل أكتفقه منذ اليوم». قال عمار: لمحطنا ذلك اليوم، فوجدناه قتل ذلك اليوم الله.

حدثنا عثمان بن مسلم، قال حماد بن سلمة، عن عمار، عن ابن عباس، قال: رأيت النبي ﷺ في المنام ينضب النهار - قائل -، أشعث أغبر، يديه قارورة فيها دم، فقال: يا بني أنت وأمي يا رسول الله، ما هذا؟ قال: «دم الحسين وأصحابه، فلم أزل أكتفقه منذ اليوم» فأخصيتنا ذلك اليوم، فوجدوه قتل في ذلك اليوم الله.

هذا حديث صحيح على شرط مسلم.

٢٤٧٦- قال الإمام أبو عبد الله بن ماجه رحمه الله (ج ١ ص ٢١٦): حدثنا علي بن محمد، حدثنا وكيع، عن حماد بن سلمة، عن محمد بن

(١) في الأصل: لم أزل. والصحيح ما اقتضاه، لا يبالي عليه يدل السياق.

1. अबू अब्दुर्रहमान मुकबिल बिन हादीयुल वादि'ई (मुतवफ़ा : 1422) की 'अल जामेऊस्सहीहुमिम्मा लैसा फ़ीअस्सहीहेन (2475)' में है। हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنه फ़रमाते हैं :

‘मैं ने निस्फुन्नहार के वक़्त नबी ﷺ को ख़्वाब में देखा, आप ﷺ परागन्दा हाल व परागन्दा बाल थे, और आप ﷺ के पास एक शीशी थी, जिस में ख़ून था, आप ﷺ इसे उलट-पलट रहे थे या उसमें कोई चीज़ तलाश कर रहे थे। मैंने अर्ज किया : ‘या रसूलुल्लाह ﷺ ! ये क्या है ?’ आप ﷺ ने फ़रमाया : ‘हुसैन عليه السلام और उनके साथियों का ख़ून है, मैं इसे सुब्ह से ही इकठ्ठा कर रहा हूँ।’

⇒ हज़रत अम्मार رضي الله عنه कहते हैं के हमने उस दिन के ज़हन में रखकर अन्दाज़ा लगाया तो ये वोही दिन था जिसमें हज़रत हुसैन عليه السلام को शहीद किया गया।

2. हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنه फ़रमाते हैं :

‘मैं ने निस्फुन्नहार के वक़्त नबी ﷺ को ख़्वाब में देखा, आप ﷺ परागन्दा हाल व परागन्दा बाल थे, और आप ﷺ के पास एक शीशी थी, जिस में ख़ून था, आप ﷺ इसे उलट-पलट रहे थे या उसमें कोई चीज़ तलाश कर रहे थे। मैंने अर्ज किया : ‘या रसूलुल्लाह ﷺ ! ये क्या है ?’ आप ﷺ ने फ़रमाया : ‘हुसैन عليه السلام और उनके साथियों का ख़ून है, मैं इसे सुब्ह से ही इकठ्ठा कर रहा हूँ।’

⇒ हमने उस दिन को शुमार किया तो लोगों ने अन्दाज़ा लगाया के ये वोही दिन था जिसमें हज़रत हुसैन عليه السلام को शहीद किया गया।

⇒ ये रिवायत सहीह है और मुस्लिम की शर्त पर है।

المصنف لابن أبي شيبه

الإمام أبي بكر عبد الله بن أبي شيبه العنبري الكوفي
للمولد سنة ١١٩هـ - وللتوفى سنة ٢٢٥هـ
رحمه الله

منشأه ومدرسته ومكانه

محمد عواينة

المجلد الحادي والعشرون

الفن - الجمل

٣٩٠٩٨ - ٣٨٢٦٤

دار الحديث

دار الحديث

١٤٦ - ٤٠ كتاب الفتن باب (١ - ١)

رسول الله! تطلعتُ فرأيتك تقلبُ شيئاً في كفك والصبيُّ نائمٌ على بطنك ودموعك تسيل، فقال: «إن جبريل أتاني بالتراب التي يقتل عليها، وأخبرني أن أمني يقتلونه».

٣٨٥٢٢ - حدثنا محمد بن عبيد قال: حدثني شرحبيل بن مدركة الجعفي، عن عبد الله بن نجى الحضرمي، عن أبيه: أنه سافر مع علي - وكان صاحب مطهرته - حتى حاذى نينوى وهو منطلق إلى صفين فنادى: صبراً أيا عبد الله، صبراً أيا عبد الله! فقلت: ماذا: أيا عبد الله! قال: دخلت على النبي صلى الله عليه وسلم وعيناه تفيضان، قال: قلت: يا رسول الله! ما لعينيك تفيضان؟ أغضبك أحد؟ قال: «قام من عندي جبريل فأخبرني أن الحسين يقتل بسط الفرات، فلم أملك عيني أن فاضت».

٣٨٥٢٣ - حدثنا معاوية قال: حدثنا الأعمش، عن سلام أبي

٣٨٥٢٢ - رواه الطبراني في الكبير (٢٨١١) ٣ من طريق المصنف، به.

ورواه أحمد ١: ٨٥، والبخاري في «مسنده» (٨٨٤)، وأبو يعلى (٣٥٨ = ٣٦٣) يمثل إسناده المصنف.

قال الهيثمي في «مجمع الزوائد» ٩: ١٨٧ بعد أن عزاه لهؤلاء الأربعة: أرجاله ثقات، ولم يفرّد نجى بهذا، وكأنه يشير إلى كلمة ابن حبان في «ثقاته» ٥: ٤٨٠: «لا يمجني الاحتجاج بخبره إذا انفرد»، وانظر شأنه «فتح الباع» ١: ٣٩٢ (٢٨٦)، والتعليق على ترجمته في «الكشاف» (٥٨٠٣)، «والحديث ثابت».

ونينوى المذكورة هنا: ناحية بسواد الكوفة، وهي غير نينوى التي بالموصل، وإن كان كلاهما بالمراق.

٣٨٥٢٣ - «معاوية»: كذا في النسخ، والمصنف يروي عن معاوية بن عمرو الأزدي، وعن معاوية بن هشام القصار، لكن كلاهما لا يرويان عن الأعمش، إننا

‘मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा (38522)’ में हैं :

1. अब्दुल्लाह बिन नजी अपने वालिद के रिवायत करते हैं, वोह कहते हैं के वोह हज़रत अली عليه السلام के साथ चले और वोह उनके ख़ादिम थे जो वुजू का लोटा वगैरह देते थे। हज़रत अली عليه السلام सिफ़फ़ीन जा रहे थे जब नैनवा के क़रीब पहुँचे तो फ़रमाया : ‘अबू अब्दुल्लाह ! फ़ुरात के किनारे रुको। अबू अब्दुल्लाह ! फ़ुरात के किनारे रुको।’ मैं ने कहा : ‘क्या हुवा ?’ तो उन्होंने फ़रमाया : एक दिन नबी ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुवा तो आप ﷺ आबदीदा थे तो मैंने अर्ज किया : ‘ए अल्लाह के नबी ﷺ ! क्या किसी ने आप ﷺ को नाराज़ किया है ?’ आप ﷺ रो क्यूं रहे हैं ?’ आप ﷺ ने फ़रमाया : ‘अभी अभी मेरे पास से जिब्रीइल عليه السلام गए हैं, उन्होंने मुझे बताया के हुसैन عليه السلام को फ़ुरात के किनारे शहीद किया जाएगा, फिर जिब्रीइल عليه السلام ने मुझसे कहा, क्या मैं आपको उस जगह की मिट्टी सूँघाँ दूँ ? मैं ने कहाँ ‘हाँ’, तो उन्होंने अपना हाथ बढाकर एक मुट्ठी मिट्टी लेकर मुझे दी, इसकी वजह से मैं अपने आँसू पर काबू न रख सका।’

● किताब के मुहक्कक शैख मुहम्मद अवामा कहते हैं के हदीष षाबित शुदा है।

⇒ इसे इमाम अहमद رحمته الله (1/85), इमाम बज़्ज़ार رحمته الله ने मुस्नद (884) और इमाम अबू या’ला رحمته الله (358-363) रिवायत किया है।

حدثني سلمى، قالت: دخلت على أم سلمة رضي الله عنها وهي تبكي، فقلت: ما يبكيك؟ قالت: رأيت رسول الله ﷺ - يعني في النوم - وعلى رأسه ولحيته التراب فقلت: ما لك يا رسول الله؟ فقال: شهدت قتل الحسين أنفأه.

١٦٦٦- أخبرنا أبو محمد عبد الله بن صالح البخاري، قال: حدثنا يعقوب بن حميد بن كاسب، قال: حدثنا سفيان بن حمزة، عن كثير بن زيد، عن المطلب بن عبد الله قال: لما أحيط بالحسين رضي الله عنه قال: ما اسم هذه الأرض؟ فقيل: كربلاء، فقال: صدق النبي ﷺ هي أرض كرب وبلاء.

١٦٦٧- وأخبرنا أبو بكر بن أبي داود، قال: حدثنا أحمد بن يحيى

١٦٦٦- إسناده: فيه ضعف.

فيه: كثير بن زيد الأسلمي: صدوق بخطر. تقدم فيه ح: ١١١٧.
وفيه: المطلب بن عبد الله: صدوق. كثير التلخيص والإرسال. تقدم في ح: ١٠٥٣.
ويعقوب بن حميد بن كاسب: صدوق. ربما وهم. تقدم في ح: ٢١٩.
● سفيان بن حمزة: ابن سفيان بن قروة الأسلمي: أبو طلحة المدني. صدوق من الثامنة. تقريب (ص ٢٤٤).

تخريجه:

ذكره الهندي في الكترج: ٣٧٦٦ وعزاه إلى البيهقي، والطبراني وأبي نعيم وفي ح: ٣٧٧١٣ وعزاه للطبراني. وانظر دلائل النبوة لأبي نعيم (٧١٠/٢).

١٦٦٧- إسناده: حسن.

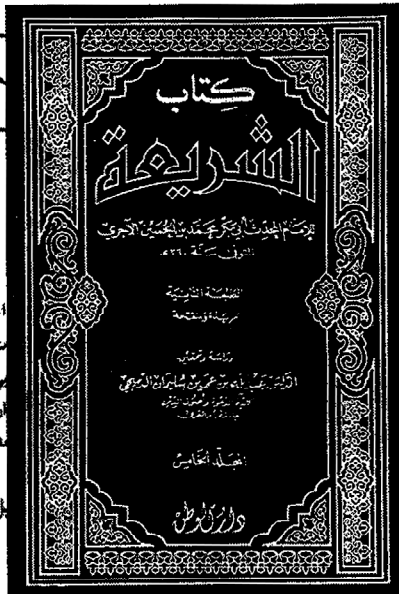
فيه نجى: ابن سلمة الحضرمي. الكوفي. مقبول، من الثالثة. تقريب (ص ٥٦٠) وقد تويع. قال الهيثمي في المجمع (١٨٧/٩): «رجاله ثقات ولم يتفرد نجى بهذا» وانظر ح: ١٦٦٢.
● عبد الله بن نجى: ابن سلمة الحضرمي، الكوفي، أبو لقمان. صدوق. من الثالثة. تقريب (٣٢٦).
● شرحبيل بن مدرك الجعفي: ثقة، من الخامسة. تقريب (ص ٢٦٥).

- ٢١٧٥ -

الصوفي، قال: حدثنا محمد بن عبيد، قال: حدثنا شرحبيل بن مدرك الجعفي، عن عبد الله بن نجى الحضرمي، عن أبيه. وكان صاحب مطهرة علي رضي الله عنه. قال: خرجنا مع علي رضي الله عنه إلى صفين فلما حاذى نينوى قال: صبراً أبا عبد الله، صبراً أبا عبد الله، بسط الغرات. قال: قلت: وماذا؟ قال: دخلت على رسول الله ﷺ وعيناه تفيضان قال: فقلت له: هل أغضبك أحد يا رسول الله؟ ما لي أرى عينيك تفيضان؟ قال: «أخبرني جبريل عليه السلام أن أمي تقتل ابني الحسين» ثم قال لي: هل لك أن أريك من تريته؟ قال: قلت: نعم، قال: فمد يده فقبض قبضة، فلما رأيته لم أملك عيني أن فاضته.

١٦٦٨- أخبرنا أبو سعيد أحمد بن محمد بن زياد الأعرابي، قال:

حدثنا يحيى بن... قال: حدثنا... يحدث عن ابن...



الشرح والتعديل
ت (٢٥٦/٨).
في طالب: وثقه
ألفظني من أخير
لعل (١٣٤/٩).

بل... وهو

‘अल्लामा अबू बक्र मुहम्मद बिन हुसैन आजुरी رحمۃ اللہ علیہ की किताब ‘अश्शरीआ (1667)’ में हैं :

1. अब्दुल्लाह बिन नजी हज़रमी अपने वालिद के रिवायत करते हैं, कहते हैं के वोह हज़रत अली رضی اللہ عنہ के साथ चले और वोह उनके ख़ादिम थे जो वुजू का लोटा वगैरह देते थे। हज़रत अली رضی اللہ عنہ सिफ़फ़ीन जा रहे थे जब नैनवा के क़रीब पहुँचे तो फ़रमाया : ‘अबू अब्दुल्लाह ! फ़ुरात के किनारे रुको। अबू अब्दुल्लाह ! फ़ुरात के किनारे रुको।’ मैं ने कहा : ‘क्या हुवा ?’ तो उन्होंने फ़रमाया : एक दिन नबी صلی اللہ علیہ وسلم की ख़िदमत में हाज़िर हुवा तो आप صلی اللہ علیہ وسلم आबदीदा थे तो मैंने अर्ज़ किया : ‘ए अल्लाह के नबी صلی اللہ علیہ وسلم ! क्या किसी ने आप صلی اللہ علیہ وسلم को नाराज़ किया है ?’ आप صلی اللہ علیہ وسلم रो क्यूं रहे हैं ?’ आप صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया : ‘अभी अभी मेरे पास से जिब्रीइल علیہ السلام गए हैं, उन्होंने मुझे बताया के हुसैन علیہ السلام को फ़ुरात के किनारे शहीद किया जाएगा, फिर जिब्रीइल علیہ السلام ने मुझसे कहा, क्या मैं आपको उस जगह की मिट्टी दिखा दूँ ? मैं ने कहाँ ‘हाँ’, तो उन्होंने अपना हाथ बढ़ाकर एक मुट्ठी मिट्टी लेकर मुझे दी, इसकी वजह से मैं अपने आँसू पर काबू न रख सका।’

امراء المباسي^(١) . وأرسله غير واحد من التابعين^(٢) .

وقال أبو القاسم البخوي^(٣) : حدثنا محمد بن هارون أبو بكر ، ثنا إبراهيم بن محمد الرقي وعلي بن الحسين الرازي قالا : ثنا سعيد بن عبيد الملك بن واقد الحناني ، ثنا عطاء بن مسلم ، ثنا أنس بن شبيب ، عن أبيه قال : سمعت أنس بن الحارث يقول : سمعت رسول الله ﷺ يقول : « إن ابني هذا - يعني الحسين - يقتل بأرض يقال لها : كوثلاء . فتن شهد منكم ذلك فليشهره » . قال : فخرج أنس بن الحارث إلى كوثلاء ، فقتل مع الحسين . ثم قال : ولا أعلم روى غيره .

وقال الإمام أحمد^(٤) : حدثنا محمد بن عبيد ، ثنا شريك بن مهران ، عن عبيد الله بن نجي^(٥) ، عن أبيه ، أنه سار مع علي - وكان صاحب مطهرته - فلما جاذى^(٦) ينزوي وهو متطليق إلى صفين ، فنادى علي : اضرب أبا عبيد الله ، اضرب أبا عبيد الله بشط القراب . قلت : وماذا؟ قال : « دخلت على رسول الله ﷺ ذات يوم وعينه تفيضان ، قلت : يا نبي الله ، أغضبك أحد؟ وما شأن عينيك تفيضان؟ قال : « بل قام من عندي جبريل قبل ، فحدثني أن الحسين يقتل » .

(١) أخرجه ابن عساکر في تاريخ دمشق ١٤/١٩٥، ١٩٦.

(٢) المصدر السابق ١٤/١٩٧.

(٣) المصدر السابق ١٤/٢٢٣، ٢٢٤، من طريق أبي القاسم البخوي ٤.

(٤) في الأصل، ٦١، م : « روى » . ومعنى العبارة أن أنس بن الحارث لم يرو غير هذا الحديث . وانظر نسب النجاشي ١/١٤٦.

(٥) المستدرك ١/٨٥ . (إسناده صحيح) .

(٦) في الأصل، ٦١، م : « يحيى » . وانظر تهذيب الكمال ١٦/٢١٩.

(٧) في الأصل، ٦١، م : « جاءوا » .

(٨) بقده في الأصل، ٦١، م : « ترد » .

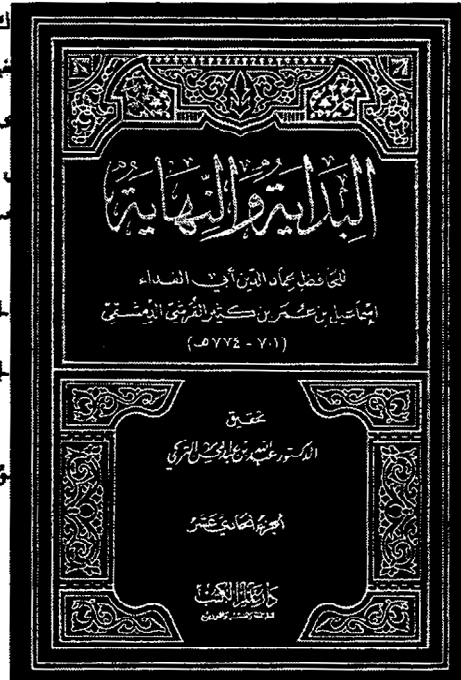
(٩ - ٩) سقط من : ص . وفي الأصل، ٦١، م : « تفيضان فقلت ما أبكاك يا رسول الله قال بلى » . وانقلت من المستدرك .

بشط القراب^(١) . قال : « فقال : هل لك أن أشبك من ثوبه؟ قلت : نعم . فمد يده . فقبض قبضة من ثراب فأعطانيها ، فلم أشكك عني أن فاضت » . تفرد به أحمد . وروى محمد بن سعيد^(٢) ، عن علي بن محمد ، عن يحيى بن زكريا ، عن رجل ، عن عامر الشعبي ، عن علي مثله .

وقد روى محمد بن سعيد وغيره^(٣) من غير وجه ، عن علي بن أبي طالب ، أنه مر بكوثلاء ، عند أشجار الحنظل ، وهو ذاهب إلى صفين ، فسأل عن ابنه فقيل : « كثر » . ثم قال :

« يقتل ههنا وأشار إلى » .

وقد الكوفي وغيره ، عن الله عنه ،



‘इब्ने कषीर رحمہ اللہ की ‘अलबिदाया वन्निहाया’ में है :

1. अब्दुल्लाह बिन नजी अपने वालिद के रिवायत करते हैं, वोह कहते हैं के वोह हज़रत अली رضی اللہ عنہ के साथ चले और वोह उनके ख़ादिम थे जो वुजू का लोटा वगैरह देते थे। हज़रत अली رضی اللہ عنہ सिफ़फ़ीन जा रहे थे जब नैनवा के क़रीब पहुँचे तो फ़रमाया : ‘अबू अब्दुल्लाह ! फ़ुरात के किनारे रुको। अबू अब्दुल्लाह ! फ़ुरात के किनारे रुको।’ मैं ने कहा : ‘क्या हुवा ?’ तो उन्होंने फ़रमाया : एक दिन नबी صلی اللہ علیہ وسلم की ख़िदमत में हाज़िर हुवा तो आप صلی اللہ علیہ وسلم आबदीदा थे तो मैंने अर्ज़ किया : ‘ए अल्लाह के नबी صلی اللہ علیہ وسلم ! क्या किसी ने आप صلی اللہ علیہ وسلم को नाराज़ किया है ?’ आप صلی اللہ علیہ وسلم रो क्यूं रहे हैं ?’ आप صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया : ‘अभी अभी मेरे पास से जिब्रीइल عزیر गए हैं, उन्होंने मुझे बताया के हुसैन علیہ السلام को फ़ुरात के किनारे शहीद किया जाएगा, फिर जिब्रीइल عزیر ने मुझसे कहा, क्या मैं आपको उस जगह की मिट्टी सूँघाँ दूँ ? मैं ने कहाँ ‘हाँ’, तो उन्होंने अपना हाथ बढाकर एक मुट्ठी मिट्टी लेकर मुझे दी, इसकी वजह से मैं अपने आँसू पर काबू न रख सका।’

تاريخ الإسلام ووفيات المشاهير والأعلام

لشيخ الإسلام محمد بن أبي بكر بن محمد بن عثمان بن كنانة

المتوفى ٧٤٨ هـ - ٨٢٢ هـ

تأليفه، ومبنيه، ومحققه
الدكتور عبد الرحمن بن عبد العزيز بن باز

المجلد الثاني

١١ - ١٠٠ هـ



الباب ودخل، فجعل يتوكل على ظهر رسول الله ﷺ، فجعل النبي ﷺ يلشقه، فقال الملك: أتجبه؟ قال: «نعم»، قال: فإن أمتك ستقتله، إن شئت أريك المكان الذي يقتل فيه، قال: «نعم»، فجاء بسهنة أو تراب أحمر. قال ثابت: فكثنا نقول: إنها كربلاء.

عمارة صالح الحديث^(١)، رواه الناس، عن شيخان، عنه.

وقال علي بن الحسين بن واقد: حدثني أبي، فقال: حدثنا أبو غالب، عن أبي أمامة، قال: قال رسول الله ﷺ لنسائه: «لا تنكوا هذا الصبي» يعني حُسينًا، فكان يوم أم سلمة، فزول جبريل، فقال رسول الله ﷺ لأم سلمة: «لا تدعي أحدًا يدخل». فجاء حُسين فيكي، فخلته أم سلمة يدخل، فدخل حتى جلس في حجر رسول الله ﷺ، فقال جبريل: إن أمتك ستقتله، قال: «يقتلونه وهم مؤمنون»؟ قال: نعم، وأراه ثريته. رواه الطبراني^(٢).

وقال إبراهيم بن طهمان، عن جناد بن إسحاق، (ج) وقال خالد بن مخلد، واللقط نه: حدثنا موسى بن يعقوب الرَّمعي: كلاهما عن هاشم بن هاشم الزهري، عن عبدالله بن وهب بن زُعمرة، قال: أخبرني أم سلمة أن رسول الله ﷺ اضطجع ذات يوم فاستيقظ وهو خائر^(٣)، ثم اضطجع ثم استيقظ وهو خائر دون المرة الأولى، ثم اضطجع ثم استيقظ وفي يده تربة حمراء، وهو يقلبها، فقالت: ما هذه التربة؟ قال: «أخبرني جبريل أن الحسين يقتل بأرض العراق، وهذه تربتها»^(٤).

وقال وكيع: حدثنا عبدالله بن سعيد، عن أبيه، عن عائشة، أو أم سلمة شكَّ عبدالله، أن النبي ﷺ قال لها: «دخل علي البيت ملك لم يدخل

(١) أخرجه من طريقه أحمد ٣/ ٢٤٢ و ٢٦٥، وعمارة هذا ضعيف يعتبر به عند المتابعين، ولم يتابع كما بيناه في «التحريير»، ولعل هذا أقرب من قول المصنف في الرجل.

(٢) الطبراني (٨٠٩٥)، وإسناده ضعيف فإن أبا غالب، واسمه حزو، ضعيف يعتبر به عند المتابعين، ولم يتابع.

(٣) يعني: ثقيل النفس غير شيط.

(٤) إسناده حسن من أجل عبدالله بن وهب بن زُعمرة فإنه صدوق حسن الحديث. أخرجه الطبراني (٢٨٢٩) من طريق موسى بن يعقوب الرَّمعي، به.

‘अल्लामा ज़हबी رحمۃ اللہ علیہ की ‘तारीख़ुल इस्लाम व वफ़यातुल मशाहीर वल अ़’लाम’ में है :

‘हज़रत उम्मे सलमा رضی اللہ عنہا बयान करती हैं के एक दिन रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم सोने के लिए लेटे और सुस्त तबिअत के साथ बेदार हो उठे, फिर लेटे और फिर सुस्त तबिअत की हालतमें उठ बैठे और आप صلی اللہ علیہ وسلم के हाथ में सुर्ख मिट्टी थी, जिसे उलट-पलट रहे थे, हज़रत उम्मे सलमा رضی اللہ عنہا ने पूछा : ‘या नबिय्यल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ! ये मिट्टी कैसी है ?’ आप صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया : ‘मुझे जिब्रईल علیہ السلام ने बताया के हुसैन علیہ السلام को सरज़मीने इराक़ में शहीद किया जाएगा ।’ मैं ने उनसे कहा : ए जिब्रईल علیہ السلام ! मुझे उस जगह की मिट्टी दिखा दो, जिसमें इसे शहीद किया जाएगा, तो ये वही मिट्टी है ।’

⇒ इसकी इरनाद हसन है ।’

ثاني
ثالثه، إن
و تراب

غالب،
يعني
سَلَمَة:
فدخل
قال:

خالد بن
عائش بن
سَلَمَة أن
جمع ثم
بده ثربة
ويل أن

تاريخ الإسلام ووفيات المشاهير والأعلام

تأليف الشيخ محمد باقر المجلسي

الطبعة الأولى: ١٣٠٠ هـ

الطبعة الثانية: ١٣٠٠ هـ

المجلد الثاني

١١ - ١٢ هـ



الياب ودخل
يلتمه، فقال
سنت أريتك
أحمر، قال
عمارة
وقال
عن أبي أمام
حسيناً، فكان
«لا تدعي أ
حتى جلس
«يقولونه وه
وقال
مخلد، والذ
هاشم الزهر
رسول الله
استيقظ وهو
حمر، وه
الحسين يقتل

وقال وكيع: حدثنا عبيد الله بن سعيد، عن أبيه، عن عائشة، أو أم سلمة شك عبيد الله، أن النبي ﷺ قال لها: «دخل علي البيت ملك لم يدخل

- (١) أخرجه من طريقه أحمد ٢٤٢/٣ و٢٦٥، وعمارة هذا ضعيف يعتبر به عند المتأخرين، ولم يتابع كما يباه في «التحرير»، ولعل هذا أقرب من قول المصنف في الرحق.
- (٢) الطبراني (٨٠٩٥)، وإسناده ضعيف فإن أبا غالب، واسمه حزور ضعيف يعتبر به عند المتأخرين، ولم يتابع.
- (٣) يعني: ثقل النفس غير شيط.
- (٤) إسناده حسن من أجل عبيد الله بن وهب بن زعدة فإنه صدوق حسن الحديث. أخرجه الطبراني (٢٨٢١) من طريق موسى بن يعقوب الراسي - به.

عليّ قبلها، فقال لي: إن ابنك هذا حسينا مقتول، وإن شئت أريتك من ثربة الأرض التي يقتل بها». رواه عبد الرزاق، عن عبيد الله بن سعيد بن أبي هند مثله، إلا أنه قال: أم سلمة ولم يشك، وإسناده صحيح، رواه أحمد^(١) والثالث، وزوي عن شهر بن حوشب، وأبي واثل^(٢) كلاهما عن أم سلمة نحوه.

وروي الأوزاعي، عن شاذان أبي عمار، عن أم الفضل بنت الحارث، وزوي عن حنّاد بن زيد عن سعيد بن جهمان، أن رسول الله ﷺ أتاه جبريل بتراب من ثراب القرية التي يقتل فيها الحسين، وقيل له: اسمها كربلاء، فقال رسول الله ﷺ: «كرب وبلاء». كلا الإسنادين منقطع.

وقال أبو إسحاق الشيباني: عن هاني بن هاني، عن علي، قال: ليقتل الحسين قتلاً، وإني لأعرف ثربة الأرض التي يقتل بها، يقتل بقرية قريب من النهرين.

وقال ابن عساکر^(٣): وفد الحسين على معاوية وغزا القسطنطينية مع يزيد.

وعن عبيد الله بن يزيد، قال: دخل الحسن والحسين على معاوية، فأمر لهما في وقت بمئتي ألف درهم.

وقال محمد بن سيرين، عن أنس، قال: شهدت ابن زياد حيث أتى برأس الحسين فجعل يكتف بقضيب في يده، فقلت: أما إنه كان أشبههما بالنبي ﷺ. رواه هشام بن حسان، وجريز بن حازم، عن محمد.

وقال عبيد الله بن أبي زياد: رأيت الحسين أسود الرأس واللحية إلا شعرات في مقدم لحيته.

وقال ابن جرير: سمعت عمر بن عطاء يقول: رأيت الحسين بن علي يخطب بالوشمة، أمّا هو فكان ابن ستمين سنة، وكان رأسه ولحيته شديدي الشواد.

جعفر بن محمد، عن أبيه، قال: كان الحسين يتختم في اليسار.

- (١) المسند ٦/٢٩٤.
- (٢) تاريخ دمشق ١٤/١١١.

‘अल्लामा ज़हबी رحمته الله की ‘तारीख़ुल इस्लाम व वफ़यातुल मशाहीर वल अ़’लाम’ में है :

हुज़ूर ﷺ ने हज़रत आइशा رضي الله عنها या हज़रत उम्मे सलमा رضي الله عنها से फरमाया : ‘अभी घरमें मेरे पास एक ऐसा फरिश्ता आया, जो इससे पहले कभी नहीं आया, उसने मुझ से कहा : आपका ये बेटा शहीद किया जाएगा, अगर आप चाहें तो मैं उस ज़मीन की मिट्टी, जहाँ इसे क़त्ल किया जाएगा, आप ﷺ को दिखा दूँ ।

⇒ मुहक्क़के किताब डोक्टर बशार अवाद मा’रुफ़ कहते हैं के इसे अब्दुरज़्ज़ाक़ने अब्दुल्लाह बिन सइद बिन अबी रिन्द से इस तरह रिवायत किया है, मगर इसमें शक के बजाए सय्यिदा उम्मे सलमा رضي الله عنها का ही जिक्र है और इसकी सनद सहीह है । इमाम अहमद رحمته الله और दूसरों ने भी इसे नक़ल किया है और शहर बिन हौशब और अबू वा’एल ने हज़रत उम्मे सलमा رضي الله عنها से इसी तरह रिवायत किया है ।’

٧٠٩ - حدثنا الحسن بن موسى، ثنا حماد بن سلمة، عن عمار بن أبي عمار، عن ابن عباس قال: رأيت النبي ﷺ فيمَا يرى النائم نصف النهار أشعث أغبر معه قارورة فيها دم، فقلت: يا نبي الله، ما هذا؟ قال: «هذا دم الحسين وأصحابه، لم أزل ألقطهم منذ اليوم». قال: وأحصى ذلك اليوم فوجدوه قتل ذلك اليوم.

٧١٠ - حدثنا الحسن بن موسى، ثنا حماد بن سلمة، عن ثابت البناني، عن أبي عثمان النهدي، عن ابن عباس، قال: قال رسول الله ﷺ: «أهون أهل النار هذا: أبو طالب، وفي رجله نعلان من نار يغلي منهما دماغه».

٧١١ - حدثني سليمان بن حرب، ثنا حماد بن سلمة، عن عمار بن أبي عمار، عن ابن عباس قال: كنت مع أبي عند النبي ﷺ، وكان النبي ﷺ كالمعرض عن أبي، فلما قمنا قال لي أبي: أي بني، أما رأيت ابن عمك كالمعرض عني؟ فقلت: يا أبا، إنه كان معه رجل يناجيه. قال: فرجع العباس فقال: يا رسول الله، إني قلت لعبد الله كذا وكذا، فزعم أنه كان معك رجل

وأخرج مسلم أيضاً من طريق سعيد بن جبير، عن ابن عباس (ص ٤٨٩، ٤٩٠)، وأبو داود في الصلاة من طريق جابر بن زيد عن ابن عباس (رقم ١٢١٤)، وأخرج النسائي من طريق سعيد وجابر عن ابن عباس (١/ ٢٣٣، ٢٣٤).

(٧٠٩) سند حسن:

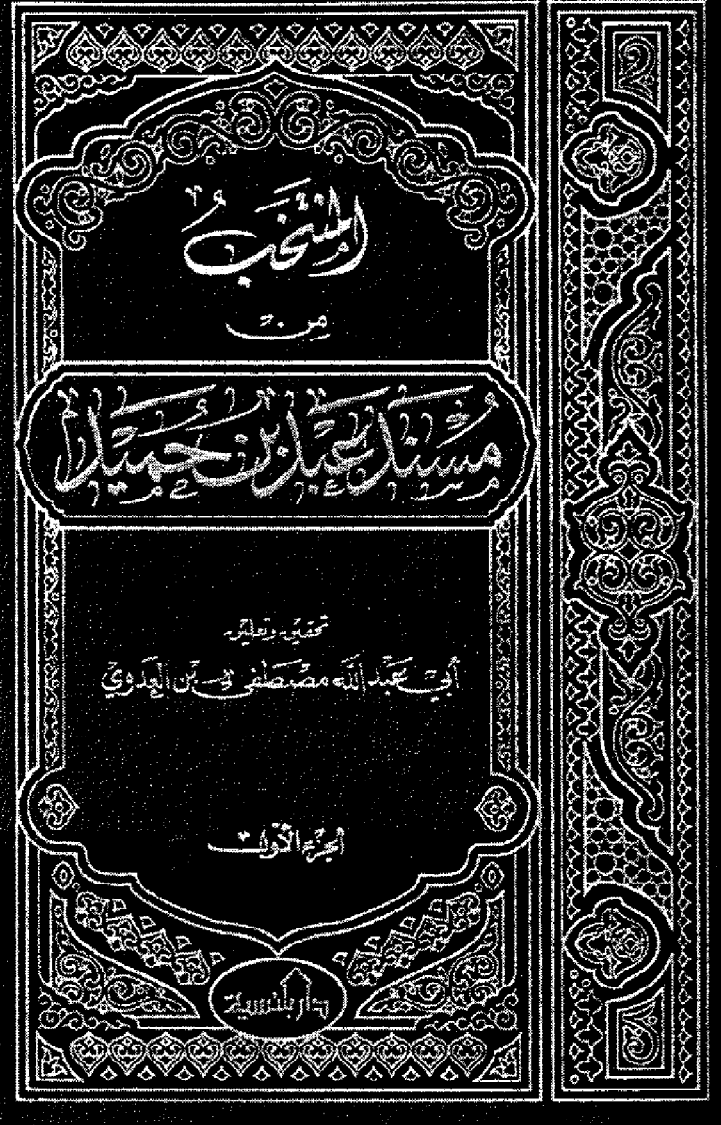
وأخرجه أحمد (٢٤٢/١).

(٧١٠) صحيح:

وأخرجه مسلم (ص ١٩٦).

وأخرج البخاري معناه من حديث أبي سعيد الخدري رضي الله عنه في كتاب الرقاق، باب (٥١): «صفة الجنة والنار، فتح» (١١/ ٤١٧).

(٧١١) سند حسن:



‘अल मुन्तख़बु मिन मुस्नदी’ अब्द बिन हुमैद में है :

हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنه फ़रमाते हैं :

‘मैं ने निस्फुन्नहार के वक़्त नबी ﷺ को ख़्वाब में देखा, आप ﷺ परागन्दा हाल व परागन्दा बाल थे, और आप ﷺ के पास एक शीशी थी, जिस में ख़ून था, आप ﷺ इसे उलट-पलट रहे थे या उसमें कोई चीज़ तलाश कर रहे थे। मैंने अर्ज किया : ‘या रसूलुल्लाह ﷺ ! ये क्या है ?’ आप ﷺ ने फ़रमाया : ‘हुसैन عليه السلام और उनके साथियों का ख़ून है, मैं इसे सुब्ह से ही इकट्ठा कर रहा हूँ।’

उस दिन को शुमार किया गया तो ये वोही दिन था जिसमें हज़रत हुसैन عليه السلام को शहीद किया गया।

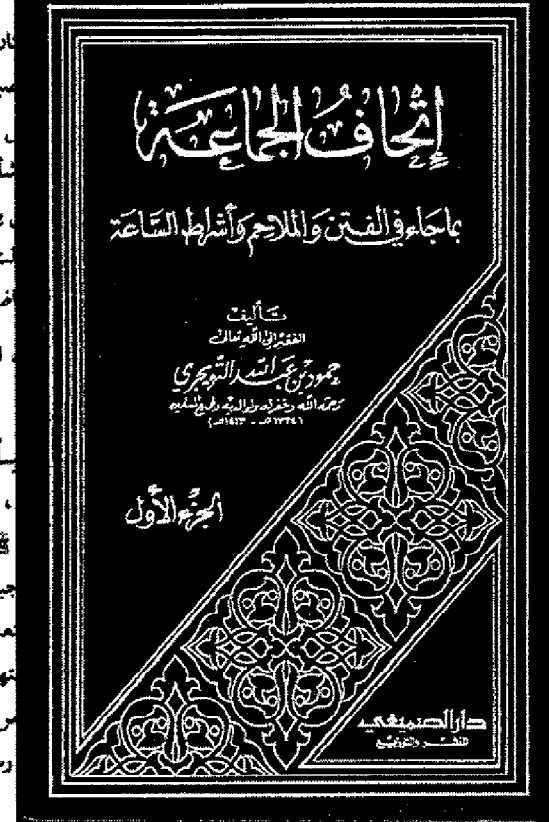
⇒ किताब के मुहक्क़क अबू अब्दुल्लाह मुस्तफ़ा इब्ने अदवी कहते हैं के इसकी सनद हसन है।

⇒ इसे इमाम अहमद رحمته الله (1/242) ने रिवायत किया है।

كان صاحب
سير أبا عبد
الله النبي ﷺ
شأن عينك
ل يقتل بشرط
ت: نعم.
أفشاء.

الهيثمي:

بأ ذات يوم
، فسمعت
ﷺ يمسح
جبريل عليه
نعم. قال:
تأها، فأراها
س؟ قالوا:
رسول الله



رواه الطبراني بإسناد. قال الهيثمي: «ورجال أحدها ثقات».

وعن عمار بن أبي عمار عن ابن عباس رضي الله عنهما: قال: رأيت النبي ﷺ في المنام بنصف النهار أشعث أغبر، معه قارورة فيها دم يلتقطه أو يتبع فيها شيئاً. قال: قلت: يا رسول الله! ما هذا؟ قال: «دم الحسين

وأصحابه، لم أزل أتبعه منذ اليوم». قال عمار: فحفظنا ذلك اليوم، فرجديناه قتل ذلك اليوم. رواه الإمام أحمد، وإسناده صحيح على شرط مسلم.

وعن سلمى - وهي مولاة بكر بن وائل - قالت: دخلت على أم سلمة وهي تبكي، فقلت: ما يبكيك؟ قالت: رأيت رسول الله ﷺ (تعني: في المنام) وعلى رأسه ولحيته التراب، فقلت: ما لك يا رسول الله؟ قال: «شهدت قتل الحسين أنقأ».

رواه الترمذي، وقال: «هذا حديث غريب».

وعن يزيد بن الأصم: قال: «خرجت مع الحسن رضي الله عنه وجارية تَحْتُ شيئاً من حناء عن أظافره، فجاءته إصبرة من كعب، فقال: يا جارية! هاتي المخضب! فصب فيه ماء، وألقى الكعب في الماء، فلم يفتح منها شيئاً، ولم ينظر إليه. فقلت: يا أبا محمد! ممن هذه الكعب. قال: من أهل العراق، من قوم لا يرجعون إلى حق ولا يقصرون عن باطل، أما إنني لست أخشاهم على نفسي، ولكنني أخشاهم على ذلك، وأشار إلى الحسين».

رواه الطبراني. قال الهيثمي: «ورجاله رجال الصحيح، غير عبد الله بن الحكم بن أبي زياد، وهو ثقة».

(الإصبرة): الحزمة من الكعب. و(المخضب): هو الإجانة التي تغسل فيها الثياب.

وعن ابن أبي نعم: قال: كنت جالساً عند ابن عمر رضي الله عنهما، فجاءه رجل يسأل عن دم البعوض، فقال له ابن عمر رضي الله عنهما: ممن أنت؟ قال: أنا من أهل العراق. قال: انظروا إلى هذا! يسألني عن دم البعوض وقد قتلوا ابن رسول الله ﷺ، وقد سمعت رسول الله ﷺ يقول: «هما ريحائتي

‘इत्हाफुल जमा’अ़ा बिमाजा फील फितन वल-मलाहिम व अषरातिस्सा’अ़ा’ में है :

हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنه फरमाते हैं :

‘मैं ने निस्फुन्नहार के वक़्त नबी ﷺ को ख़्वाब में देखा, आप ﷺ परागन्दा हाल व परागन्दा बाल थे, और आप ﷺ के पास एक शीशी थी, जिस में ख़ून था, आप ﷺ इसे उलट-पलट रहे थे या उसमें कोई चीज़ तलाश कर रहे थे। मैंने अर्ज किया : ‘या रसूलुल्लाह ﷺ ! ये क्या है ?’ आप ﷺ ने फ़रमाया : ‘हुसैन عليه السلام और उनके साथियों का ख़ून है, मैं इसे सुब्ह से ही इकट्ठा कर रहा हूँ।’

⇒ हज़रत अम्मार رضي الله عنه कहते हैं के हमने उस दिन के ज़हन में रखकर अन्दाज़ा लगाया तो ये वोही दिन था जिसमें हज़रत हुसैन عليه السلام को शहीद किया गया।

⇒ ‘इसे इमाम अहमद رحمته الله ने रिवायत किया है और इस की सनद सहीह है और मुस्लिम की शर्त पर है।’

مسألة
الأحاديث الصحيحة
وشتم من فيها وتوفيها

عبد الله بن أبي

البحر الثاني

٥٠١ - ١٠٠٠

مكتبة المعارف للشيخ والتوفيق
بمناجاة سيدنا محمد وآله
البركات

٨٢١ - (أتاني جبريل عليه الصلاة والسلام، فأخبرني أن أمي ستقتل
ابني هذا يعني: الحسين). فقلت: هذا؟ فقال: نعم، وأتاني بتربة من تربته
حمراء).

الليلة. قال: وما هو؟ قالت: إنه شديد. قال: وما هو؟ قالت: رأيت كأن قطعة من
جسدك قطعت ووضعت في حجري. فقال: رأيت خيراً، تلد فاطمة إن شاء الله غلاماً
فيكون في حجرك. فولدت فاطمة الحسين، فكان في حجري كما قال رسول الله ﷺ،
فدخلت يوماً إلى رسول الله ﷺ فوضعت في حجره، ثم حانت مني النضلة فإذا عينا
رسول الله ﷺ تهريقان من الدموع، قالت: فقلت: يا بني الله! بأي أنت وأمي
مالك؟.. فذكره. وقال:

«صحيح على شرط الشيخين».

وتعقبه الذهبي بقوله:

«قلت: بل منقطع ضعيف؛ فإن شداً لم يترك أم الفضل، ومحمد بن مصعب
ضعيف».

قلت: لكن له شواهد عديدة تشهد لصحته؛ منها ما عند أحمد (٢٩٤/٦): ثنا
وكيع قال: حدثني عبد الله بن سعيد عن أبيه عن عائشة أرم سلمة - قال وكيع: وشك
هو؛ يعني: عبد الله بن سعيد - أن النبي ﷺ قال لإحدهما:

٨٢٢ - (لقد دخل عليّ البيت ملك لم يدخل عليّ قبلها، فقال لي: إن
ابنك هذا: حسين مقتول، وإن شئت أريتك من تربة الأرض التي يقتل بها.
قال: فأخرج تربة حمراء).

قلت: وهذا إسناد صحيح على شرط الشيخين، وعبد الله هو ابن سعيد بن أبي
هند القزاري. وقال الهيثمي (١٨٧/٩):

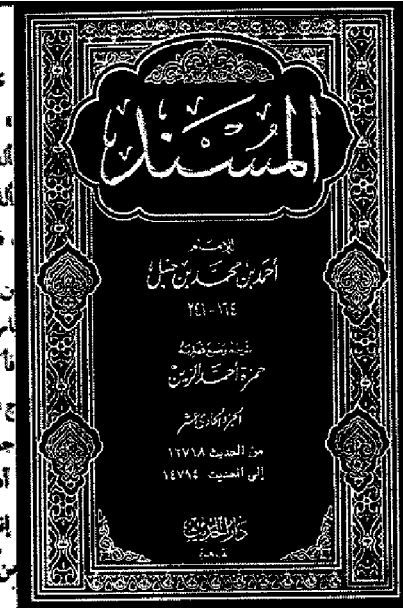
‘सिलसिलतुल अहादीषुस्सहीहा (821)’ में है :

मेरे पास जिब्रीइल عليه السلام आए और मुझे बताया के मेरी उम्मत अन्करीब मेरे इस बेटे या’नी हुसैन عليه السلام को शहीद कर देगी ।
‘मैं ने कहा : ‘इसे ?’ उन्होंने कहा : ‘हाँ’ और उन्होंने मुझे उस जगह की सुर्ख मिट्टी दिखाई ।

‘सिलसिलतुल अहादीषुस्सहीहा (822)’ में है :

अभी घरमें मेरे पास एक फ़रिश्ता आया, जो इससे पेहले कभी नहीं आया, उसने मुझ से कहा : ‘आप عليه السلام का ये बेटा शहीद किया जाएगा, अगर आप चाहे तो मैं उस ज़मीन की मिट्टी आप عليه السلام के पास ले आऊँ, जिसमें वोह शहीद होगा’ फिर उसने मेरे सामने सुर्ख मिट्टी निकाली ।’

⇒ ‘मैं (अल्बानी) कहता हूँ : ये सहीह सनद है और शैख़ैन की शर्त पर है ।’



«جعلك الله بخير»
«فقال بخير إن شكرت
لني فتقول جعلك الله
لك فتقول بخير أحمد
فشككت فكنت عكس»
عن زيد أنا أيوب عن أبي
باس بآية الحجاب تزوج
فأكلوا وقعدوا يتحدثون
ج، فيمكث ما شاء الله
جعل النبي ﷺ يستحي
أمتوا لا تدخلوا بيوت
إنساء ولكن إذا دعيت
من وراء حجاب» قال

١٣٤٧٣ - حدثنا مؤمل ثنا عمارة بن زاذان ثنا ثابت عن أنس بن
مالك أن ملك المطر استأذن ربه أن يأتي النبي ﷺ فأذن له فقال لأُم سلمة
«املكي علينا الباب لا يدخل علينا أحده» قال وجاء الحسين ليدخل فسمعه
فولب فدخل فجعل يقعد على ظهر النبي ﷺ وعلى منكبيه وعلى عاتقه قال

(١٣٤٧٢) إسناده صحيح، سبق في ١٣٤١٢.

(١٣٤٧٣) إسناده صحيح، وعمارة بن زاذان وثقه كثيرون وتكلم فيه بعضهم، وأشار إلى هذا أيضاً
الهيثمي ٩٨٧/٩، وهو عند أبي يحيى ١٢٩/٦ رقم ٣٤٠٢، والطبري في الكبير
١٠٦/١٣ رقم ٢٨١٣، والمزار ١٠٦/٣ (كشف) وابن حبان ٥٥٤ رقم
٢٢٤١ (مؤيد) وكثيرهم في الدلائل رقم ٤٩٢.

(٢٠٧)

فقال الملك للنبي ﷺ أحبه؟ قال «نعم» قال أما إن أمتك ستقتله وإن شئت
أرثت المكان الذي يقتل فيه فضرب يده فجاء بطينة حمراء فأخذها أم
سلمة فصرنها في عمارها قال قال ثابت بلغنا أنها كربلاء.

١٣٤٧٤ - حدثنا مؤمل ثنا حماد عن حميد وعاصم الأحول عن
أنس أن رسول الله ﷺ قال «المدينة حرام من كذا إلى كذا من أحدث فيها
حدثاً أو أوى محدثاً فعليه لعنة الله والملائكة والناس أجمعين» لا يقبل الله
منه صرفاً ولا عدلاً قال حماد زاد فيها حميد لا يحمل فيها سلاح لقتال.

١٣٤٧٥ - حدثنا مؤمل ثنا حماد ثنا سالم عن أنس أن النبي ﷺ
قال: «ما من مسلم يموت فيشهد له أربعة أهل أبيات من جيرانه الأدين إلا
قال قد قبلت علمكم فيه وغفرت له ما لا تعلمون».

١٣٤٧٦ - حدثنا مؤمل ثنا عبد الرحمن بن بديل بن مسيرة
العقبلي قال حدثني أبي عن أنس بن مالك قال قال النبي ﷺ: «إن قد عز
رجل أهلين من الناس وإن أهل القرآن أهل الله وخاصته».

١٣٤٧٧ - حدثنا إسحق بن عيسى ثنا حماد بن عيسى ابن زيد ثنا
عبيد الله بن أبي بكر عن جده أنس بن مالك أن رجلاً اطلع في بعض
حجر النبي ﷺ فقام إليه النبي ﷺ بمشقص - أو مشاقص - فكأنه أنظر إليه
بخلقه ليطمئنه.

(١٣٤٧٤) إسناده صحيح، سبق في ١٣٤٣٣.

(١٣٤٧٥) إسناده صحيح، وسالم مر ابن أبي الجعد ثمة عابوا عليه كثرة الإرسال وهو هذا لم

يوسل، والحدث سبق في ٩٢٦٦.

(١٣٤٧٦) إسناده صحيح، سبق في ١٢٣٣٢.

(١٣٤٧٧) إسناده صحيح، سبق في ١٢٣٦٥.

(٢٠٨)

‘मुस्नद इमाम अहमद رحمته الله (13473)’ में है :

‘हज़रत अनस बिन मालिक رحمته الله बयान करते हैं के बारिश के फरिश्ते ने अपने रब्बसे नबी ﷺ की ज़ियारत की इजाज़त चाही, रबने उसे इजाज़त दे दी। ये दिन हज़रत उम्मे सलमा رضي الله عنها की बारी का दिन था। अभी वो दरवाज़े पर थी के हज़रत हुसैन عليه السلام आ’ए, मैं ने उन्हे रोका, मगर वोह छल्लाँग लगाकर दाखिल हो गए और नबी ﷺ के कन्धों और पेट पर बैठने लगे। फरिश्ते ने पूछा : ‘क्या आप ﷺ इससे मुहब्बत करते हैं?’ आप ﷺ ने फ़रमाया : ‘हाँ’, उसने कहाँ : ‘आप ﷺ की उम्मत इसे क़त्ल करेगी’ अगर आप चाहे तो मैं वोह जगह दिखा दूँ जिसमें इसे क़त्ल किया जाएगा’, फिर उस फ़रिश्ते ने अपना हाथ मारा और सुर्ख मिट्टी पेश की। हज़रत उम्मे सलमा رضي الله عنها ने उस मिट्टी को ले कर अपनी ओढ़नी में बाँध लिया।

⇒ हदीष के रावी षाबित कहते हैं के हमलोग कहते थे के वोह ज़मीन करबला नामी है।

⇒ किताब के मुहक्कक हम्ज़ा अहमद जैन कहते हैं के इसकी सनद हसन है।

⇒ इसे अबू या’ला (2/129, रकम : 3402), तबरानी कबीर (13/106, रकम : 2813), बज्जार (3/106), इब्ने हब्बान (554 रकम : 2241) और अबू नु’एम رحمته الله की दलाईल - (रकम : 492) में भी रिवायत किया गया है।

المسند

للإمام
أحمد بن محمد بن حنبل

١٦٤-٢٤١

شريعة وصحة
حزرة أحمد الزيني

أحمد بن محمد بن حنبل

من الحديث ١٢٧١٨
إلى الحديث ١٤٧٨٤

دار الحديث

القاهرة

١٣٧٢٧- حدثنا معاوية بن عمرو ثنا زائدة ثنا عمرو بن عبد الله بن وهب ثنا زيد العمى عن أنس بن مالك عن النبي ﷺ قال : من توضأ فأحسن الوضوء ثم قال ثلاث مرات أشهد أن لا إله إلا الله وحده لا شريك له وأن محمدا عبده ورسوله ففتح له من الجنة ثمانية أبواب من أيها شاء دخل .
١٣٧٢٨- حدثنا سليمان بن حرب ثنا حماد بن سلمة عن ثابت عن أنس بن مالك قال قال رسول الله ﷺ : يبقى من الجنة ما شاء الله أن يبقى فينشي الله لها خلقا ما شاء .

١٣٧٢٩- حدثنا عبد الصمد بن حسان قال أنا عمارة يعني ابن زاذان عن ثابت عن أنس قال : استأذن ملك المطر أن يأتي رسول الله ﷺ فأذن له فقال لأُم سلمة واحفظي علينا الباب لا يدخل أحده فجاء الحسين بن علي رضي الله تعالى عنهما قلوب حتى دخل فجعل يصعد على منكب النبي ﷺ فقال له الملك أخيه قال النبي ﷺ : ونعمه قال : فإن أمتك تقتله وإن شئت أهلك المكان الذي يقتل فيه قال : فضرب يده فأراه ترابا أحمر فأخذت لم سلمة ذلك التراب فصرته في طرف لوبها قال فكنا نسبح يقتل بكرهلاء .

(١٣٧٢٧) إسناده صحيح ، لأجل زيد بن الحارثي العمي ، فقد ضعفه القرطبي ٧٨١/١ رقم ٥٥ في الظهور/ ما يقال بعد الوضوء ، وهو عند السائي ٩٣/١ رقم ١٤٨ وذكروا له روايات أخرى ومسنودة ، فربما الحديث إلى الحسن .

(١٣٧٢٨) إسناده صحيح ، وقد رواه البخاري ٣٦٩/١٣ رقم ٧٣٨٤ (فتح) في التوحيد ، ومسلم في الجنة ٢١٨٨/٤ رقم ٢١٤٨ ، وابن حبان ٤٨٥/١٦ رقم ٧٤٤٨ (الاحسان) وليس معنى الحديث زوال أهل الجنة ، وإنما معناه أنه لا توسع لجهة المشرك بخلق الله خلقا يمشون في ذلك التوسع والله في خلقه شؤن .

(١٣٧٢٩) إسناده صحيح ، قد أخرجه ابن حبان ٥٥٤ رقم ٢٢٤١ (مؤلفه) والبيهقي في ٤٦٩/٦ .

‘मुस्नद इमाम अहमद رحمته الله (13729)’ में है :

‘हज़रत अनस बिन मालिक رحمته الله बयान करते हैं के बारिश के फ़रिश्ते ने अपने रब्बसे नबी ﷺ की ज़ियारत की इजाज़त चाही, रबने उसे इजाज़त दे दी। ये दिन हज़रत उम्मे सलमा رضي الله عنها की बारी का दिन था। नबी ﷺ ने उनसे फ़रमाया : ‘उम्मे सलमा رضي الله عنها ! दरवाज़े को बन्द कर दो, कोई दाख़िल न हो’ अभी वो दरवाज़े पर थी के हज़रत हुसैन عليه السلام आ गए और छल्लों लगाकर दाख़िल हो गए और नबी ﷺ के कन्धो पर चढ़ने लगे। फ़रिश्ते ने आप ﷺ से पूछा : ‘क्या आप ﷺ इससे मुहब्बत करते हैं?’ आप ﷺ ने फ़रमाया : ‘हाँ’, उसने कहाँ : ‘आप ﷺ की उम्मत इसे क़त्ल करेगी’ अगर आप चाहे तो मैं वोह ज़गह दिखा दूँ जिसमें इसे क़त्ल किया जाएगा’, फिर उस फ़रिश्ते ने अपना हाथ मारा और आप ﷺ को सुर्ख मिट्टी दिखाई। हज़रत उम्मे सलमा رضي الله عنها ने उस मिट्टी को ले कर अपने कपड़े के एक बाने में बाँध लिया।

⇒ हदीष के रावी कहते हैं के हमलोग सुनते थे के हज़रत हुसैन عليه السلام को करबला में शहीद किया जाएगा।

⇒ किताब के मुहक्कक हम्ज़ा अहमद जैन कहते हैं के इसकी सनद हसन है।

فَضْلُ الْقِسْطِ بِإِذْنِ الْمَوْلَى شَيْخِ الْإِسْلَامِ لِلْمَقَرَّةِ الْتَارِيخِ

وشرح تيسر العلامة الحديث
محمد المدعو بميد الرؤف القنوي
على مكتبه ، الجامع الصغير ، من أحاديث الشيخ القنوي
الحافظ جلال الدين عبد الرحمن السيوطي
تتمت له بطبعه

بِإِذْنِ الْمَوْلَى

تمت هذه الطبعة في سنة ١٢٧٢ هـ
وكان بها طبعات في سنة ١٢٧٣ هـ

جميع حقوق الطبع والنشر محفوظة

تمت هذه الطبعة في سنة ١٢٧٢ هـ
وكان بها طبعات في سنة ١٢٧٣ هـ

١٢٧٢ - ١٢٧٣ م

الطبعة الثانية

دار النشر

للطباعة والنشر
بيروت - لبنان

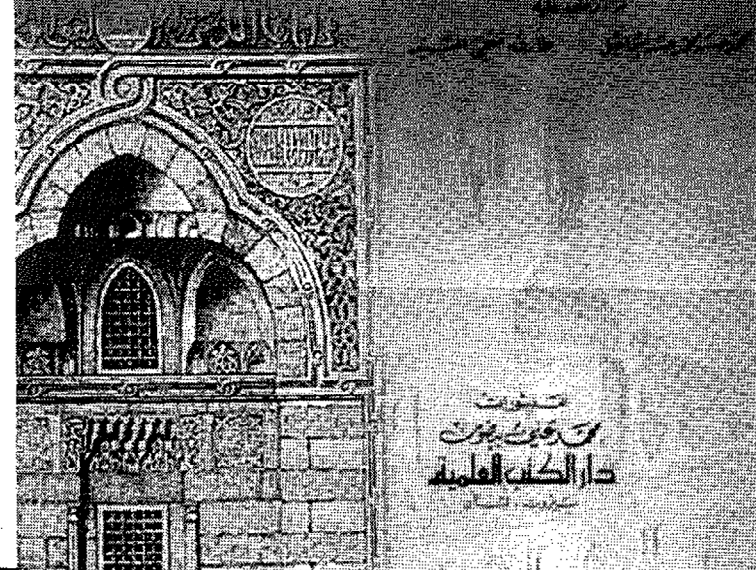
لما مات معاوية أنه كتب أهل العراق إلى المدينة أنهم يأمرونه بدمه فأمروا أهلهم أن يسموا من قبل معاوية
وأرسل إليه ليرجع إليهم فخلعوا له قفله بما يوم الجمعة فامرهم من إحدى وستين وكشفت الشمس عنه فله كفا
بنت الكواكب نصف الباركا رواء القين وصعد المرحل عليه ورأى ابن عباس النبي صلى الله عليه وسلم في
النوم ذلك اليوم أشتت أظفر يده فلو رآه فيها دم حساه أنه قتله هذا دم الحسين وأصحابه في أول أخته من اليوم
طيف وأمه الشريف في البهائم إلى أن انتهت إلى صفوان فدفنها أميرها بها فلما ظن المخرج على صفوان استغنى عنها
مهم الصالح طالع وزير القاطنين جال جويل وبين عليا المشد بالفاخرة كما أشرف إليه القاتل في ضربة مدح
بها الصالح وقتله من الحافظ ابن حجر وأقره لكن يفرح به بعضهم بأن الحافظ أبا الصلاء المصطفى ذكر أن يزيد بن
معاوية أرسلها إلى المدينة فكشفتها ماله باهر من حديد الناص ودفعها بالفتح عند قبر أمه قال وهذا أصح ما قيل
وقال الزيد بن بكر من الرأس إلى المدينة فدفن بها وقال القنوي والوزير أعلم أهل القسب وأفضل العلماء بهذا
السبب والإمامية يقولون الرأس أعيد إلى الحليفة ودفن بكر بل بعد أربعين يوما من القتل قال القنوي وما ذكر من
أنه في صفوان في مشهد هناك أو بالفاخرة فياقل لم يصح ولا يثبت وأخرج ابن عثارة عن الأعمش عن قتادة بن
عمرو الأسدي قال والله أنا رأيت رأس الحسين حين حمل وأنا بدمشق وبين يدي رجل يقرأ سورة الكهف حتى
إنما بلغ ثوبه سبحة وتعال وأم حبيبت أن أصحاب الكهف والفرج كانوا من أبنائها فاجاء فأعطى الله سبحة وتعال
الرأس بشان ثوب قال أجب من أصحاب الكهف حتى وحل قال ابن عسكرو إسناده جهول وخفيل فله فله
تورق الأوكاد وتذوق الأجساد لعله الله على من قتله أو رعى أو أمر أو بصدقه كما يحدث فله فله فله فله
خلاق بالتأليف قال أبو الفرج بن الجوزي في كتابه الرد على المنصب القبيح المنع من دم يزيد أجاز العلماء الذين
لته وفي قنوي حافظ الدين الكندي الحنفي لمن يزيد يجوز لكن يشي أن لا يفعل وكذا الجهازي قال ابن الكمال
وحكى عن الإمام قوام الدين الصفاري ولا بأس بدين يزيد ولا يجوز لمن معاوية علق الحاروق لكنت أخطأ في إسناده
فيستأز الله تعالى عنه وتكفف اللسان عنه تعظيما لشجوه وصاحبه وسئل ابن الجوزي عن يزيد ومعاوية فقال قال
رسول الله صلى الله عليه وسلم من دخل دار أبي سفيان فهو آمن ونحن أن آياه دخلها فصار آمنا والآن لم يدخلها
ثم قال المولى ابن الكمال والحفي أن من يزيد على اشتها كره وتواتر خطبته وشره على ما عرف بضايفه جازوا ولا
ظنن المسلمين ولو تأسقا لا يجوز خلاف الجنس وذلك من يحمل قول العلامة فيمنع أن لا أشك وإسلامه في ق إمامه
ظلمته الله عليه وحل أنصاره وأمره ، قيل لا بأس ، وزى وهو على كرسى الخط كيف يقال يزيد قتل الحسين وهو مدحوق
والحسين بالعراق فقال لهم أصحاب ورواه يزيد بن سلم عن بالعراق فقد أهدت مرعاكا
وقد غلب على ابن العري النسب من أهل البيت حتى قال فله سيف جده وأخرج الحاكم في المستدرک عن ابن
حباس روى أنه تعالى عنها أرس أنه تعالى إلى محمد صلى الله عليه وسلم إن قلت يحيى بن زكريا حين أنا وإلى
قاتل بأن أهلك الحسين حين أنا وسيعين أنا قال الحاكم صحيح الإسناد وقال القنوي وعلى شرط مسلم وقال ابن
حجر وروى من طريق رواه عن علي مرفوعا قاتل الحسين في تابوت من نار عليه نصف خذاب أملأ بها (ابن سعد)
في طابقه من حديث المدائني عن يحيى بن زكريا عن رجل عن الحسن (عن علي) بن أبي طالب أمير المؤمنين كرم
وجهه قال دخلت على النبي صلى الله عليه وسلم فأتيت يوم وحيته فبعضن قال قد كره وروى نحوه أحمد في المسند
فمزوه إليه كان أولى والله لم يستحضره ويحيى بن زكريا أو رآه في القضاة وقال ضعفه القنوي وغيره انتهى
لكن المؤلف رحمه الله لم يستحضره لا احتشاده في سبب البليان من طائفة رضى الله تعالى عنها مرفوعا أخرني
جبريل أن ابن الحسين يقاتل بسدي أرض الصف وجامع هذه القصة وأخبرني أن فيها مدحيه وفيه من أم سلمة
وذهب بنت جش وأبي أمامة وسأد وأبي القليل وغيرهم من بطول ذكرهم بمزور المؤلف رحمه الله فله
لذلك لكنه من حسب حبيد انصر على ابن سعد مع حرم وولاه وتشكر طرقة

‘अल्लामा मनावी رحمۃ اللہ علیہ की ‘फ़ैजुल क़दीर’ पर शरह ‘अल जामेअस्सगीर’ में है :

‘उन लोगो ने हज़रत हुसैन رضی اللہ عنہ को जुम्आ के दिन दस मुहर्रमुलहराम 61 हिजरी को शहीद किया। आपकी शहादत के वक़्त सूरज ग्रहण हुवा हत्ता के दिन में सितारे दिखाई देने लगे, जैसा के इमाम बैहकी رحمۃ اللہ علیہ ने रिवायत किया है और जिन्नो ने आपकी वफ़ात पर नौहा किया। और उस दिन हज़रत इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہ ने ख़्वाबमें हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم को देखा के आप صلی اللہ علیہ وسلم परागन्दा हाल व परागन्दा बाल है, आप صلی اللہ علیہ وسلم के हाथ में एक शीशी है जिसमें खून है, उन्होंने आप صلی اللہ علیہ وسلم से पूछा तो आप صلی اللہ علیہ وسلم ने फरमाया : ‘ये हुसैन رضی اللہ عنہ और उसके साथियों का खून है, मैं इसे सुबह से इकट्ठा कर रहा हूँ।’ हज़रत हुसैन رضی اللہ عنہ के सर को शहरों शहरों में घुमाया गया।

سَلَامٌ أَمَّا حَيَّةٌ

تَأَلَّفَتْ
الْفَتْحُ الْمَعْلُومَةُ أَوَّلَ مَرَّةٍ بِإِسْمِ مَنْ تَمَّزَّ بِهَا
الْمُؤَلِّفُ فِي الْمَدِينَةِ الْمَعْلُومَةِ
الْمَدِينَةِ الْمَعْلُومَةِ



١٦٦ الصحابة

حتى أخذه، فوضع فاه على فيه فقبله، وقال: "حسين مني وأنا من حسين أحب الله من أحب حسيناً، حسين سبط من الأسباط".

٥٣٨- وعن بريدة رضي الله عنه قال: كان رسول الله ﷺ يخطبنا فجاء الحسن والحسين وعليهما قميصان أحمران يمشيان ويثران، فنزل رسول الله ﷺ من المنبر فوضعهما بين يديه، ثم قال: "صدق الله ﷻ (إِنَّمَا أَنزَلْنَاكُمْ وَإِذْ لَمْ يَكُنْ لَكُمْ بَشِيرَةٌ إِلَّا هُوَ) وَاللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ أَخْرَجَ عَظِيمًا" [التفاهين: ١٥] نظرت إلى هذين الصبيين يمشيان ويثران فلم أصبر حتى قطعت حديثي ورجعتهما ^(١).

٥٣٩- وعن ابن عباس رضي الله عنه قال: رأيت النبي ﷺ فيما يرى النائم - أجمعت أخبر بيده للروية فيها دم، فقلت: ما هذه يا رسول الله؟ قال: هذا دم الحسين وأصحابه، لم أزل ألتقطه منذ الليلة فحسبوه فوجدوه قتل في ذلك اليوم ^(٢).

قال أبو جعفر: قتله رجل من مذحج.

٥٤٠- وقال مصعب الزبيري: قتله سنان بن أسد النخعي يوم الجمعة يوم عاشوراء سنة إحدى وستين ^(٣).

٥٤١- روى عن جعفر عن أبيه أنه قتل وهو ابن بضع وخمسين سنة ^(٤).

٥٤٢- أخبرنا أبو طاهر الرازي، أخبرنا أبو الحسن بن عبدويه، حدثنا غاروق الخطمي، حدثنا الكشي، حدثنا مسدد، حدثنا ابن داود عن ابن أبي عمير عن أبيه عن ابن مسعود قال: قال رسول الله ﷺ: "أبناي هذان سيدا شباب أهل الجنة إلا ابني الحفلة عيسى ويحيى ^(٥)".

(١) حسن: أخرجه أحمد (٣٥٤/٥) وأبو داود (١١٠٩)، والطبراني (٣٧٧٤)، والشمس (١٩٣/٣)، وابن ماجه (٣٦٠٠)، وابن حزم (٤٨٠١)، وابن حبان (٦٠٣٩ - إسناده)، وابن ماجة (١٨٩٩)، والبيهقي في "الكبرى" (٥٨١٩)، والهيتمي في تفسيره (١٠٦/٧) بسند حسن.

(٢) حسن: أخرجه أحمد (٢٨٣/١)، والطبراني (٣٨٢٢)، والحاكم (٣٩٨-٣٩٧/٤) بسند حسن. الكلام الذي في صدر بن أبي عمير وفي المسئلة (٦١٧٢).

(٣) انظر: نسب إريش (ص ٤٠)، تاريخ الطبري (٤١٨/٥)، الاستيعاب (٣٧٨/١) "سند الطائفة" (٢١/٢).

(٤) انظر: "تاريخ الكبير" (٣٨١/٢) وقال فيه: "قتل وهو ابن سبع وخمسين"، وقال ابن قتيبة في "معارف" (ص ٢١٣) وهو ابن ثمان وخمسين، ويقال: ابن ستة وخمسين، ورجع ابن كثير لتاريخ التوفاة سنة ٦١ هـ وانظر: استشهاد الحسين لابن كثير (ص ٧٠، ١٢٤).

(٥) حديث صحيح دون قوله: "إلا ابني الحفلة عيسى ويحيى" أخرجه أحمد في "المستدرک" (٣/٣)، وفي "المستدرک" (٧٧٩/٢)، والهيتمي في "المعركة" (٦٤٤/٢)، والحاكم في "المستدرک" (١٦٦/٣) - (١٦٧)، وصححه وتعقبه الذهبي بقوله: "قلت: الحكم فيه كين".

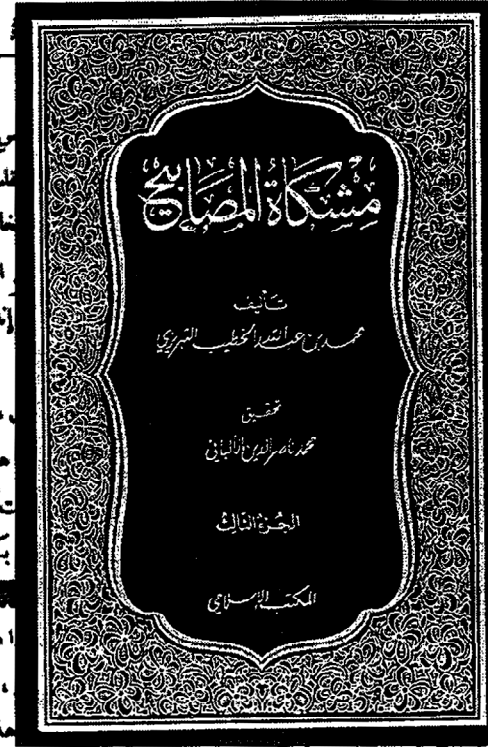
‘अबू कासिम अस्बहानी की ‘सियरुस्सलफी अस्सालिहीन (539)’ में है :

‘हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنه ने निस्फुन्नहार के वक़्त ख़्वाब में हुज़ूर ﷺ को देखा, के आप ﷺ के हाथ में एक शीशी है, जिसमें ख़ून है, उन्होंने आप ﷺ से पूछा, तो आप ﷺ ने फ़रमाया : इमामे हुसैन और उनके अस्हाब का ख़ून है, मैं इसे रात से ही इकट्ठा कर रहा हूँ ।’ लोगों ने उस दिन की तेहकीक़ की तो ये वही दिन था जिसमें उनकी शहादत पेश आई ।

⇒ ये हदीष हसन है ।

⇒ इसे इमाम अहमद رحمته الله (1/283), इमाम तबरानी رحمته الله (जिल्द-3, रकम : 2822) और इमाम हाकिम رحمته الله (4/397-398) ने रिवायत किया है ।

الحديث (٦١٧٠)



في الحسين ، فيجعل في
قلت : والله إنه كان
خاري .

الحسين ، فجعل يضرب
إنه كان من أشبههم

على رسول الله ﷺ ،
هو ، قالت : إنه شديد
ت ووضعت في حجره .
يكون في حجره .
فدخلت يوماً على
أخينا رسول الله ﷺ ،
مالك ، قال : وأنا
هذا ، قال : نعم ، وأنا

بقربة من تربته حمراء .

٦١٨١ - (٤٧) وهو ابن عباس ، قال : رأيت النبي ﷺ فيما يرى النائم ذات يوم
ينصف النهار ، أشمت أخيراً ، بيده قارورة فيها دم ، قلت : يا بني أنت وأمي ، ما هذا ، قال :
« هذا دم الحسين وأصحابه ، ولم أزل ألقطه منذ اليوم » فأخمني ذلك الوقت فأجد قتيلاً ذلك

(١) أي يضرب برأس الضبيب في أنفه . (٧) أي من المدح .

(٢) الرصة : لبت يفض به ويجعل له المواء .

- ١٧٤١ -

٣٠ - كتاب قتال ١٠ - باب مناقب أهل بيت النبي ﷺ الحديث (٦١٧٤)

الوقت - رواها البيهقي في «دلائل النبوة» وأحمد^(١) الأثير .

٦١٨٢ - (٤٨) وهو ، قال : قال رسول الله ﷺ : « أحبوا الله لا ينفذكم من نعمة » ،
فأحبوني لحب الله ، وأحبوا أهل بيتي لمحبتي . رواه الترمذي^(٢) .

٦١٨٣ - (٤٩) وهو أبي ذر ، أنه قال وهو أخذ يباب الكعبة : سمعت النبي ﷺ
يقول : « ألا إن مثل أهل بيتي فيكم مثل سفينة نوح ، من دكها نجا ، ومن تخلف عنها
هلك » . رواه أحمد^(٣)



(١) في «المستد» (٢٤٢/٩) وإسناده صحيح .

(٢) في الأصول (نسخة) والتصويب من الترمذي .

(٣) وإسناده ضعيف ، وله تكلم عليه في شرح «الله السيرة» ، للاستاذ القزالي (ص ٢٣) .
(٤) كلها في الأصول ، والرواه عنه الأطلاق ، مستند ، وليس الحديث فيه مطلقاً لا من حديث
أي ذو ، ولا من حديث غيره ، وإنما رواه عن أبي ذر الطبراني والبخاري وغيرهما ، وإسناده واه ،
ودوي عن ابن عباس وابن الزبير وأبي سعيد ، ولا يصح فيها شيء . انظر «مجمع الزوائد» (١٦٨/٩)

- ١٧٤٢ -

मिशकातुल मसाबीह (47-6181)' में है :

हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنه फ़रमाते हैं :

‘मैं ने निस्फुन्नहार के वक़्त नबी ﷺ को ख़्वाब में देखा, आप ﷺ परागन्दा हाल व परागन्दा बाल थे, और आप ﷺ के पास एक शीशी थी, जिस में ख़ून था, आप ﷺ इसे उलट-पलट रहे थे या उसमें कोई चीज़ तलाश कर रहे थे। मैंने अर्ज किया : ‘या रसूलुल्लाह ﷺ ! ये क्या है ?’ आप ﷺ ने फ़रमाया : ‘हुसैन عليه السلام और उनके साथियों का ख़ून है, मैं इसे सुब्ह से ही इकट्ठा कर रहा हूँ।’

उस वक़्त को शुमार किया गया तो उसी वक़्त हज़रत हुसैन رضي الله عنه की शहादत का वाक़ेआ पेश आया था।

⇒ इसे इमाम बैहकी رحمته الله ने ‘दलाईलुन्नुबुव्वह’ में और इमाम अहमद رحمته الله ने ‘मुस्नद (1/242)’ में रिवायत किया है।

الصحيح المستند من

فضائل أهل بيت النبوة

تأليف
أمرشعيت الوادعية

إشراف وتقديم
أبي عبد الله
مقبول بن قاروق الوادعي

دار الإفتاء
المنظمة للتبليغ

الصحيح المستند من فضائل أهل بيت النبوة

٨٠

١٠٦- قال الإمام أحمد رحمه الله في «فضائل الصحابة» (ج ٢ ص ٧٧٨):
خَدَّثَنَا عَبْدُ الرَّحْمَنِ، حَدَّثَنَا خَمَادُ بْنُ سَلَمَةَ، عَنْ عَمَارِ بْنِ أَبِي عَمَّارٍ، عَنْ ابْنِ
عَبَّاسٍ قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فِي الْمَنَامِ يَنْصِفُ الشَّهَارَ أَشْعَثَ أَغْبَرُ مَعَهُ قَارُورَةٌ
فِيهَا دَمٌ يَلْقِطُهُ، أَوْ يَتَّبِعُ فِيهَا شَيْئًا، قُلْتُ: يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا هَذَا؟ قَالَ: «دَمُ
الْحُسَيْنِ وَأَصْحَابِهِ، لَمْ أَزَلْ أَتَّبِعُهُ مُنْذُ الْيَوْمِ» قَالَ عَمَّارٌ: فَحَفِظْنَا ذَلِكَ،
فَوَجَدْنَاهُ قَتْلَ ذَلِكَ الْيَوْمِ عَلَيْهِ السَّلَامُ.

خَدَّثَنَا عَفَّانٌ، حَدَّثَنَا خَمَادُ بْنُ سَلَمَةَ، أَخْبَرَنَا عَمَّارٌ، عَنْ ابْنِ عَبَّاسٍ
قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ فِيمَا يَرَى النَّاسُ يَنْصِفُ الشَّهَارَ، وَهُوَ قَائِمٌ أَشْعَثَ أَغْبَرُ،
بِيَدِهِ قَارُورَةٌ فِيهَا دَمٌ، قُلْتُ: يَا أَبَا أُمَيٍّ يَا رَسُولَ اللَّهِ مَا هَذَا؟ قَالَ: «هَذَا
دَمُ الْحُسَيْنِ وَأَصْحَابِهِ، لَمْ أَزَلْ أَتَّقِطُهُ مُنْذُ الْيَوْمِ» فَأَحْصَيْنَا ذَلِكَ الْيَوْمَ، فَوَجَدْنَاهُ
قَتْلًا فِي ذَلِكَ الْيَوْمِ عَلَيْهِ السَّلَامُ.

هذا حديث صحيح على شرط مسلم.

١٠٧- قال الإمام أبو عبد الله بن ماجة رحمه الله تعالى (ج ١ ص ٢١٦):
خَدَّثَنَا عَلِيُّ بْنُ مُحَمَّدٍ، حَدَّثَنَا وَكِيعٌ، عَنْ خَمَادِ بْنِ سَلَمَةَ، عَنْ مُحَمَّدِ بْنِ
زِيَادٍ، عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ: رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ حَامِلَ الْحُسَيْنِ بْنِ عَلِيٍّ عَلَى
عَاتِقِهِ وَلَقَاهُ يُسِيلُ عَلَيْهِ.

هذا حديث صحيح رجاله رجال الصحيح، إلا علي بن محمد شيخ ابن ماجة وله
شبهان كلاما على بن محمد، والظاهر أن المهمل الطنافسي إذ هو بالرواية عنه أشهر من
القرشي والله أعلم.

उम्मु शु'ऐबुल वादि'ह्या की किताब

‘अस्सहीहुल मुस्नद मिन फज़ाईलि अहलुल बैतुन्नुबुवह (106)’ में है :

1. हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنه फ़रमाते है :

‘मैं ने निस्फुन्नहार के वक़्त नबी ﷺ को ख़्वाब में देखा, आप ﷺ परागन्दा हाल व परागन्दा बाल थे, और आप ﷺ के पास एक शीशी थी, जिस में ख़ून था, आप ﷺ इसे उलट-पलट रहे थे या उसमें कोई चीज़ तलाश कर रहे थे। मैंने अर्ज किया : ‘या रसूलुल्लाह ﷺ ! ये क्या है ?’ आप ﷺ ने फ़रमाया : ‘हुसैन عليه السلام और उनके साथियों का ख़ून है, मैं इसे सुब्ह से ही इकट्ठा कर रहा हूँ।’

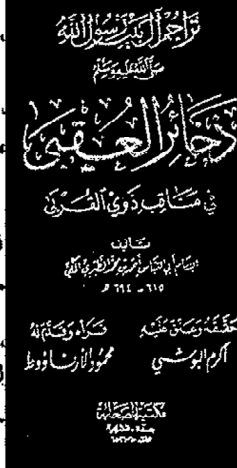
⇒ हज़रत अम्मार رضي الله عنه कहते है के हमने उस दिन के ज़हन में रखकर अन्दाज़ा लगाया तो ये वोही दिन था जिसमें हज़रत हुसैन عليه السلام को शहीद किया गया।

2. हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنه फ़रमाते है :

‘मैं ने निस्फुन्नहार के वक़्त नबी ﷺ को ख़्वाब में देखा, आप ﷺ परागन्दा हाल व परागन्दा बाल थे, और आप ﷺ के पास एक शीशी थी, जिस में ख़ून था। मैंने अर्ज किया : ‘या रसूलुल्लाह ﷺ ! ये क्या है ?’ आप ﷺ ने फ़रमाया : ‘हुसैन عليه السلام और उनके साथियों का ख़ून है, मैं इसे सुब्ह से ही इकट्ठा कर रहा हूँ।’ हमने उस दिनको शुमार किया तो लोगों ने अन्दाज़ा लगाया के ये वही दिन था जिसमें हज़रत हुसैन عليه السلام को शहीद किया गया।

⇒ ये रिवायत सहीह है और मुस्लिम के शर्त पर है।

حينئذ أن فاضتاه
أبيه : أنه سافر
صيفين ، فنادى
الفرات . فقلت
نفيضان ... ثم
ذكر



عبد الله بن نجى^(١) ، عن
يئوى^(٢) وهو منطلق إلى
صبراً أبا عبد الله بشاطيء
على رسول الله ﷺ وعيشه
في مناصب ذوي الفسحة
صابت
في مناصبهما
عن سلمى
قالت : رأيت رسول
لك يا رسول الله ؟
غريب ، والبغوي

وعن ابن عباس - رضي الله عنهما - قال : رأيت النبي ﷺ فيما يرى النائم نصف
النهار وهو قائم ، أشعث أغبر ، بيضاء قارورة فيها دم ، فقلت : بأبي أنت وأمي يا
رسول الله ! ما هذا ؟ قال : وهذا دم الحسين لم أزل ألقطه منذ اليوم فوجد قد قتل في
ذلك اليوم . أخرجه ابن بنت منيع ، وأبو عمر ، والحافظ السلفي وقال : دم الحسين
وأصحابه ، لم أزل ألقطه ... الحديث^(٥) .

- (١) تحرف في المطبوع إلى : «نجى» .
- (٢) تحرفت في المطبوع إلى : «يئوتاه» . ويئوى : ناحية بسواد الكوفة منها كربلاء .
- (٣) هو في «مسند أحمد» ٨٥/١ ، والطبراني (٢٨١١) و«مختصر تاريخ ابن عساکر» ١٣٣/٧ ،
و«سير أعلام النبلاء» ٢٨٨/٣ ، و«البدایة والنهاية» ١٩٩/٨ . وذكره الهيثمي في «المجمع»
١٨٧/٩ وزاد نسبه لأبي يعلى والبزار ، وقال : «رجاله ثقات» . ولم يفرّد نجى بهذا . انظر
«كشف الاستار» ٣٣١/٣ - ٣٣٢ .
- (٤) رواه الترمذي (٣٧٧٤) في «المنقب» ، باب مناقب الحسن والحسين ، والبغوي في «المصابيح»
(مشكاة المصابيح : ص ٥٧٠) ، وابن عساکر في تاريخه (مختصره : ١٥٢/٧) ، والذهبي في
«سير أعلام النبلاء» ٣١٦/٣ ، وابن كثير في «البدایة والنهاية» ٢٠٠/٨ .
- (٥) أخرجه أحمد في «مسنده» ٢٨٣/١ ، والطبراني في الكبير (٢٨٢٢) وابن عبد البر في «

ذكر كيفية قتله رضي الله عنه

عن عبد ربه : أن الحسين بن علي - رضي الله عنهما - لما أرفقه القتال وأخذ له
السلاح قال : ألا تقبلون مني ما كان رسول الله ﷺ يقبل من المشركين ؟ قال : كان إذا
جئنا أحلهم للسلم قبل منه . قالوا : لا . قال : فذعوني أرجع . قالوا : لا . قال :
فذعوني آتي أمير المؤمنين . فأتاه له رجل السلاح وقال : أبشر بالنار . قال
رضي الله عنه : أبشر - إن شاء الله تعالى - برحمة ربي وشفاعتي نبيي ﷺ . فقتل ، ورجيء
برأيه إلى بين يدي ابن زياد ، فنكته بقضيب وقال : لقد كان غلاماً صحيحاً ، ثم قال :
أيكم قاتله ؟ فقام رجل فقال : أنا قتلت ، فقال : ما قال لك ؟ فأعاد الحديث ، فأسود
وجهه^(١) .

وعن أبي معشر^(٢) ، عن بعض مشيخته قال : قال الحسين بن علي
- رضي الله عنهما - حين نزل كربلاء : ما هذه الأرض ؟ قالوا : كربلاء . قال : كرب
وبلاء . وبعث عبد الله بن زياد عمر بن سعد فقاتلهم ، فقال الحسين : يا عمر ! اختر
منّي إحدى ثلاث خصال : إما أن تتركني أرجع كما جئت ، فإن أبيت هذه فسيرني إلى
يزيد ، فأضع يدي في يده فيحكم فيما رأى ، فإن أبيت هذا فسيرني إلى الترك فاقتلهم
حتى أموت . فأرسل إلى ابن زياد بذلك ، فهم أن يسيره إلى يزيد ، فقال له شمر بن ذي
الجوشن : لا ، إلا أن ينزل على حكمك ، فأرسل إليه بذلك ، فقال : والله لا أفعل .
وأبطأ عمر عن قتاله ، فأرسل إليه ابن زياد شمر بن جوشن فقال : إن تقدم عمر فقاتل
ولاً فاقته وكنت أنت مكانه . وكان مع عمر قريب من ثلاثين رجلاً من أهل الكوفة
فقالوا : يعرض عليكم ابن بنت رسول الله ﷺ ثلاث خصال فلا تقبلون منها شيئاً ؟!

- = «الاستيعاب» ٣٩٥-٣٩٦ ، والخطيب في «تاريخه» ١٤٢/١ ، والذهبي في «سير أعلام
النبلاء» ٣١٥/٣ . «مسند قوي» كما قال الحافظ ابن كثير في «البدایة والنهاية» ٢٠٠/٨ .
- (١) «مختصر تاريخ ابن عساکر» ١٤٦/٧ ، و«سير أعلام النبلاء» ٣١٠/٣ - ٣١١ .
 - (٢) تحرف في المطبوع إلى «جعفر» . والخبر في «مختصر تاريخ ابن عساکر» ١٤٦/٧ ، و«سير
أعلام النبلاء» ٣١١/٣ .

‘जख़ाईरुल उकबा फी मनाकिबि जविख्युल कुरबा’ में है :

हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنه फ़रमाते हैं कि मैं ने नबी करीम ﷺ को ख़्वाब की हालत में निस्फुन्नहार के वक़्त देखा कि आप ﷺ खड़े हैं, बाल बिखरे हुये हैं और चेहरा गुबार आलूद है, हाथ में एक शीशी है जिसमें खून है, मैं ने पूछा : ‘मेरे माँ-बाप आप ﷺ पर कुरबान हो, ए अल्लाह ﷻ के रसूल ﷺ ! ये क्या है ?’ आप ﷺ ने फ़रमाया : ‘ये हुसैन عليه السلام का खून है, मैं इसे सुब्ह से इकठ्ठा कर रहा हूँ ।’ लोगों ने पाया हुसैन عليه السلام उसी दिन शहीद किए गए ।

इब्ने बित्ते मुनी’अ, अबू उमर और हाफ़िज़ सलफ़ी ने रिवायत किया है और इसमें ये है कि : ‘इसमें हुसैन عليه السلام और उनके साथियों का खून है’ (या’नी इस रिवायत में ‘साथियों’ का इज़ाफ़ा है)

⇒ मुहक्किक्के किताब अकरम अल बूशी कहते हैं :

इसे इमाम अहमद رحمته الله ने ‘मुस्नद (2831)’ में, इमाम तबरानी رحمته الله ने ‘कबीर (2822)’ में, इमाम इब्ने अब्दुलबर् رحمته الله ने ‘अल इस्तिआब (1/395-396)’ में, खतीब बग़दादी رحمته الله ने ‘तारीख (1/142)’ में और इमाम ज़हबी رحمته الله ने ‘सियर अलामुन्नुबला (3/315)’ में रिवायत किया है । इमाम इब्ने कषीर رحمته الله ने ‘अल बिदायावन्निहाया (8/200)’ में इसी तरह ज़िक्र किया है ।

١٠

كتاب التذكير في أخبار الإمام الحسين عليه السلام

تصنيف

الإمام أبي محمد محمد بن أبي بكر بن فرج الأنباري

ابن زكريا الأسدي ثم البصري

الترجمة ٨٩٧

تحقيق وإدخال

الدكتور الصادق محمد بن إبراهيم

المجلد الثالث

كتاب التذكير في أخبار الإمام الحسين عليه السلام

للشيخ الطبرسي

١١٢٠

وفي هذه الرواية اختلاف، وقد قيل إن يزيد بن معاوية هو الذي قتل
القاتل.

وذكر الإمام أحمد بن حنبل^(١) قال: ثنا عبد الرحمن بن مهدي قال:
حدثنا حماد بن سلمة عن عمار بن أبي عمار عن ابن عباس قال: رأيت
النبي ﷺ نصف النهار أشعث أغبر معه قارورة فيها دم، يلتقطه أو يتبع فيها^(٢)،
قال قلت: يا رسول الله ما هذا؟ قال: دم الحسين وأصحابه، لم أزل أتبعه منذ
اليوم. قال عمار: فحفظنا ذلك اليوم فوجدناه قتل ذلك اليوم، وهذا سند
صحيح لا ملحق به.

وساق القوم حرم رسول الله ﷺ كما تساق الأسارى حتى إذا بلغوا
بهم إلى الكوفة خرج الناس فجعلوا^(٣) ينظرون إليهم، وفي الأسارى علي بن
حسين، وكان شديد المرض قد جمعت يداه^(٤) إلى عنقه، وزينب بنت علي
وبنت فاطمة الزهراء وأختها أم كلثوم، وفاطمة وسكينة بنتا الحسين، وساق
الظلمة الفسقة معهم رؤوس القتلى.

وروى^(٥) قطر عن منذر الثوري عن محمد بن الحنفية قال: قتل مع
الحسين سبعة عشر رجلاً كلهم من ولد فاطمة عليها السلام.

وذكر أبو عمر بن عبد البر^(٦) عن الحسن البصري قال: أصيب مع الحسين بن
علي ستة عشر رجلاً من أهل بيته ما على وجه الأرض لهم يومئذ^(٧) نسيه.

وقيل: إنه قتل مع الحسين من ولده وإخوته وأهل بيته ثلاثة وعشرون
رجلاً.

- (١) في مسنده ٢٤٢/١، ح ٢١٦٥ والطبراني في الكبير ٣/١١٠، ح ٢٨٢٢، إسناده قوي
على شرط مسلم، النظر: حاشية مسند أحمد ٥٩/٤، ح ٢١٦٥.
- (٢) في (المسند): أو يتبع فيها شيئاً. (٣) (١٥): ليست في (ط).
- (٤) (إلى): ليست في (ط). (٥) (فيسلوا): ليست في (ط).
- (٦) في (ط): يده.
- (٧) ذكر هذه الرواية ابن عبد البر في الاستيعاب ٣٩٦/١.
- (٨) في الاستيعاب له ٣٩٦/١. (٩) (يومئذ): ليست في (ط).

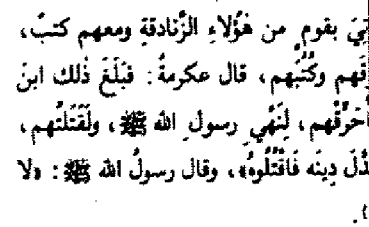
इमाम अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अहमद ख़ज़रजी अन्दलुसी धुम्म कुरतुबी رحمہ اللہ की 'किताबुत्तज़क़िराति बि-अहवालुल मवता व उमूरि आख़िरा' में है ।

इमाम अहमद رحمہ اللہ ने ज़िक्र किया है के हज़रत इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہ फ़रमाते है :

‘मैं ने निस्फुन्नहार के वक़्त नबी صلی اللہ علیہ وسلم को ख़्वाब में देखा, आप صلی اللہ علیہ وسلم परागन्दा हाल व परागन्दा बाल थे, और आप صلی اللہ علیہ وسلم के पास एक शीशी थी, जिस में ख़ून था, आप صلی اللہ علیہ وسلم इसे उलट-पलट रहे थे या उसमें कोई चीज़ तलाश कर रहे थे । मैंने अर्ज किया : ‘या रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ! ये क्या है ?’ आप صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया : ‘हुसैन عليه السلام और उनके साथियों का ख़ून है, मैं इसे सुब्ह से ही इकट्ठा कर रहा हूँ ।’

⇒ हज़रत अम्मार رضی اللہ عنہ कहते है के हमने उस दिन के ज़हन में रखकर अन्दाज़ा लगाया तो ये वोही दिन था जिसमें हज़रत हुसैन عليه السلام को शहीद किया गया ।

⇒ ये सनद सहीह है, इसमें कोई ता'न नहीं है ।



من الإسلام، فحرقهم بالنار، فبلغ ذلك ابن
م أحرقهم، إن رسول الله ﷺ، قال: ولا
تبدؤا، وقال رسول الله ﷺ: «مَنْ بَدَأَ بِهِ
عَبَّاسٌ، فَقَالَ: وَنَحْنُ ابْنُ أُمِّ ابْنِ عَبَّاسٍ».

عن ابن عباس، قال: رأيت النبي ﷺ فيما يرى النائم ينصف
النهار، وهو قائم، أشعث أغبر، بيده قارورة فيها دم، فقلت: بأبي أنت

وأخرجه البخاري (٦٩٢٢)، والطحاوي ٦٣/٤، وأبو يعلى (٢٥٣٢)، وابن حبان (٥٩٠٦)، والبيهقي ٢٠٢/٨ من طرق عن حماد بن زيد، بهذا الإسناد. وانظر (١٨٧١).

1997

٢٥٥٤ - حدثنا عبد الرزاق، قال: أخبرنا سفيان، عن سليمان الثبياني، عن
الشمي

روکیع قال: حدثنا سفیان، مثله (۳).

عن ابن عباس، قال: قال رسول الله ﷺ: «لَوْ أَنَّ أَحَدَهُمْ إِذَا أَتَى أَمَلَهُ قَالَ: بِسْمِ اللَّهِ، اللَّهُمَّ جَنِّبِ الشَّيْطَانَ، وَجَنِّبِ الشَّيْطَانَ مَا رَزَقْتَنِي، فَيُولَدَ بَيْنَهُمَا وَلَدٌ، فَيُضْرَبَ الشَّيْطَانُ أَبَدًا» (١).

(٢) إسناده صحيح على شرط الشيخين. سفیان: هو الثوري.

وأخرجه مسلم (٩٥٤) (٦٨) عن طريق وكيع، بهذا الإسناد.

(٣) إسناده صحيح على شرط الشيخين. سفیان: هو الثوري، ومتصور: هو ابن المعتز. وهو في (مصنف عبد الرزاق، ١٠٤٦٥).

۲۲۷

‘मुस्नद अहमद (2553)’ में है :

हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنه फ़रमाते हैं :

‘मैं ने निस्फुन्नहार के वक़्त नबी ﷺ को ख़्वाब में देखा, आप ﷺ परागन्दा हाल व परागन्दा बाल थे, और आप ﷺ के पास एक शीशी थी, जिस में खून था। मैंने अर्ज किया : ‘या रसूलुल्लाह ﷺ ! ये क्या है ?’ आप ﷺ ने फ़रमाया : ‘हुसैन عليه السلام और उनके साथियों का खून है, मैं इसे सुब्ह से ही इकट्ठा कर रहा हूँ।’

⇒ हमने उस दिन को शुमार किया तो लोगों ने अन्दाज़ा लगाया के ये वही दिन था जिसमें हज़रत हुसैन عليه السلام को शहीद किया गया।

⇒ किताब के मुहक्कक शु‘एब अरनोवत और आदिल मुरशद कहते हैं के इसकी सनद क़वी है और मुस्लिम की शर्त पर है।

المُسْتَدْرَك

أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَلٍ

١٦٤-٢٤١

أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَلٍ

أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَلٍ

أَخْبَرَنَا مُحَمَّدُ بْنُ بَشَلٍ

حدثنا حنظلة السدوسي
قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ
علي؟ فقال: وما بأس
حدثني ابن عباس: أن
بأم الكتاب.

بن زيد حدثنا أيوب عن
معهم كتب، فأمر بنار
ذلك ابن عباس، فقال: لو
نهم، لقول رسول الله ﷺ:
لا تعذبوا بعذاب الله عز

أيوب عن عكرمة: أن علياً
ذلك ابن عباس، فقال لو
عذبوا بعذاب الله عز وجل
«فبلغ علياً ما قال ابن

٢٥٥٣ - حدثنا عفان حدثنا حماد، هو ابن سلمة، أخبرنا عمار

(٢٥٥٠) إسناده حسن، وذكر المرفوع منه في جميع الزوائد ٢: ١١٥ وقال: رواه أحمد وأبو
يعلى والطبراني في الكبير والبخاري، وفيه حنظلة السدوسي، ضعفه ابن معين وغيره، ووثقه
ابن حبان، وقد سبق القول في حنظلة ٢١٧٤.

(٢٥٥١) إسناده صحيح، وهو مطول ١٨٧١، ١٩٠١. وانظر الحديث التالي.

(٢٥٥٢) إسناده صحيح، وهو مكرر ما قبله. كلمة [ابن] سقطت من ح خطأ، وزادها تصحيحاً
للكلام، كما مضى في ١٨٧١. وفي ك ووح ابن عباس.

(٢٥٥٣) إسناده صحيح، وهو مكرر ٢١٦٥. والذي يقول «فأحصينا» إلخ. هو عمار بن أبي

(١٥٥)

عن ابن عباس قال: رأيت النبي ﷺ فيما يرى النائم، بنصف النهار، وهو قائم
أشعث أغبر، يده قارورة فيها دم، فقلت: بأبي أنت وأمي يا رسول الله، ما
هذا؟ قال هذا دم الحسين وأصحابه، لم أزل ألتقطه منذ اليوم، فأحصينا
ذلك اليوم، فوجدوه قتل في ذلك اليوم.

٢٥٥٤ - حدثنا عبدالرزاق قال أخبرنا سفيان عن سليمان الشيباني
عن الشعبي عن ابن عباس: أن رسول الله ﷺ صلى على جنازة بعد ما
دفنت، ووكيع، قال حدثنا سفيان، مثله.

٢٥٥٥ - حدثنا عبدالرزاق قال أخبرنا سفيان عن منصور عن سالم
ابن أبي الجعد عن كريب مولى ابن عباس عن ابن عباس قال: قال
رسول الله ﷺ: «لو أن أحدهم إذا أتى أهله قال: بسم الله: اللهم جنّني
الشیطان وجنّب الشيطان ما رزقني، فيولد بينهما ولد، فيضره الشيطان أبداً».

٢٥٥٦ - حدثنا عبدالرزاق قال أخبرنا سفيان عن ليث عن طاوس
عن ابن عباس قال: قال رسول الله ﷺ: «علموا، ويسروا ولا تعسروا، وإذا
غضبت فاسكت، وإذا غضبت فاسكت، وإذا غضبت فاسكت».

٢٥٥٧ - حدثنا عبدالرزاق حدثنا سفيان عن أبي الزبير عن سعيد

عمار، كما بين هناك.

(٢٥٥٤) إسناده صحيحان، سليمان الشيباني، هو أبو إسحق. وقد رواه أحمد هنا عن عبدالرزاق
ووكيع، كلاهما عن سفيان الثوري، والحديث مكرر ١٩٦٢.

(٢٥٥٥) إسناده صحيح، وهو مكرر ٢١٧٨.

(٢٥٥٦) إسناده صحيح، وهو مطول ٢١٣٦.

(٢٥٥٧) إسناده صحيح. وهو مكرر ١٩٥٣. وانظر ٢٢٦٩. وفي ح «قال: ذلك أراد أن لا
يخرج» إلخ. وكلمة «ذلك» لا معنى لها هنا، ولم تذكر في ك، فحذفناها.

(١٥٦)

‘मुस्नद अहमद (2553)’ में है :

हज़रत इब्ने अब्बास رضي الله عنه फ़रमाते हैं :

‘मैं ने निस्फुन्नहार के वक़्त नबी ﷺ को ख़्वाब में देखा, आप ﷺ परागन्दा हाल व परागन्दा बाल थे, और आप ﷺ के पास एक शीशी थी, जिस में खून था। मैंने अर्ज किया : ‘या रसूलुल्लाह ﷺ ! ये क्या है ?’ आप ﷺ ने फ़रमाया : ‘हुसैन عليه السلام और उनके साथियों का खून है, मैं इसे सुब्ह से ही इकट्ठा कर रहा हूँ।’

⇒ हमने उस दिन को शुमार किया तो लोगों ने अन्दाज़ा लगाया के ये वही दिन था जिसमें हज़रत हुसैन عليه السلام को शहीद किया गया।

⇒ किताब के मुहक्किक अहमद मुहम्मद शाकिर कहते हैं के इसकी सनद सहीह है।



IMAM JAFAR SADIQ FOUNDATION

(Ahle Sunnat)

Founder & Chairman : Dr. Shahezadhusain Yasinmiya Kazi

Mugalwada, Kasba, Modasa, Arvalli-383315 (Gujarat)